यूनियन सृजन

वर्ष - 9, अंक - 2, मुंबई, अप्रैल-जून, 2024

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया

भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India

A Government of India Undertaking

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 14.08.2024

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष - 8, अंक - 2, मुंबई, अप्रैल-जून, 2024

संरक्षक

ए. मणिमेखलै
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

चंद्र मोहन मिनोचा
मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादकीय सलाहकार

गिरीश चंद्र जोशी
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

जी.एन.दास
महाप्रबंधक

कार्यकारी संपादक

विवेकानंद
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादन सहयोग

एम. एस. ठाकुर
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया | Union Bank of India

भारत सरकार का उपक्रम | A Government of India Undertaking

अनुक्रमणिका

- परिदृश्य 1
- संपादकीय 2
- अनुवाद एवं राजभाषा हिंदी 3-4
- राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी की भूमिका 5-6
- ऋण अनुपालन एवं अनुश्रण विभाग की शब्दावली 7-9
- ग्राहक सेवा में प्रतिक्रिया बनाम प्रत्युत्तर 10-11
- राजभाषाई निरीक्षण 11
- अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क 12-13
- बैंकिंग में प्रतिभा प्रबंधन 14-15
- काव्य सृजन - मेहनत सच्चा साथी 15
- महिला सम्मान बचत पत्र 16-17
- रूपे क्रेडिट कार्ड : लिंक इट एंड फरगेट इट 18-19
- काव्य सृजन - स्थानांतरण 19
- विकसित भारत - 2047 : स्वप्न से यथार्थ तक 20-21
- काव्य सृजन - कल रात 21
- ईएसजी में बैंकों की भूमिका 22-23
- काव्य सृजन - 10 से 5 की कहानी एक बैंकर की जुबानी 23
- बैंकों की वैधानिक लेखा परीक्षा 24-25
- कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए क्या हमारे पास पर्याप्त बिजली है? 26-27
- अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक - 2024 28-29
- साक्षात्कार - समकालीन कविता के अमूल्य हस्ताक्षर श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ 30-32
- साहित्य सृजन - हर्ष की शान बाणभट्ट का ज्ञान 33-34
- काव्य सृजन - मेरी कविता .....
- साहित्य सृजन - रामधारी सिंह 'दिनकर' : राष्ट्रकवि की कलम से राष्ट्रधर्म की पुकार 35-36
- पुस्तक समीक्षा : कंकाल 37-38
- काव्य सृजन - अपना देश संवारें 38
- तृश्शूर पूरम 39-40
- यात्रा सृजन - माउंट आबू 40-41
- कहानी - अंतिम सीख 42-43
- भारत में लोकतंत्र 44-45
- पट्टचित्र चित्रकारी 45-46
- आओ ध्यान लगाएं ! 47
- समाचार 48-55
- आपकी नज़र में 56

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank | union.srijan@unionbankofindia.bank

Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स

यूनियन सृजन के इस अंक के माध्यम से आप सभी के साथ मुझे अपने विचार साझा करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है.

वर्ष 2023-24 के दौरान बैंक के विभिन्न कार्यालय और शाखाओं द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन में बेहतरीन कार्यनिष्पादन के लिए वित्तीय सेवाएं विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा हमारे केंद्रीय कार्यालय को 'ख' क्षेत्र में द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया है. विभिन्न नराकास द्वारा हमारे कार्यालयों, शाखाओं और स्टाफ को पुरस्कृत किया गया है. मैं सभी पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि आगे भी आप बेहतरीन कार्यनिष्पादन जारी रखेंगे.

वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु बैंक का कार्यनिष्पादन संतोषजनक रहा. उक्त वित्तीय वर्ष हेतु बैंक ने भारत सरकार को ₹ 2054 करोड़ लाभांश का भुगतान किया है. अब समय है कि वित्तीय वर्ष 2024-25 हेतु निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने के लिए कार्ययोजना पर पूरी तरह से अमल किया जाए और कार्यनिष्पादन हासिल करने हेतु उत्साह के साथ कदम बढ़ाएं जाए. इस वित्तीय वर्ष हमने कासा में सुधार की दिशा में ग्रामीण और अर्ध शहरी (रूसू) क्षेत्रों में यूनियन प्रीमियर शाखाएं खोली हैं. हमने महिला उद्यमिता को प्रोत्साहित करने हेतु नारी शक्ति शाखाओं का शुभारंभ किया है और वित्तीय वर्ष की प्रथम तिमाही में इन शाखाओं द्वारा 3652 आवेदन मंजूर किए गए हैं. मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इस वर्ष आप सभी दुगने उत्साह के साथ कारोबार विकास हेतु कार्य करेंगे.

मैं यह मानती हूँ कि उत्कृष्ट ग्राहक सेवा के माध्यम से हम न केवल कारोबार में वृद्धि कर पाते हैं, बल्कि बैंक की छवि और साख भी बढ़ाते हैं. अत:, ग्राहकों की आवश्यकता के अनुरूप सेवा प्रदान करना हमारा प्राथमिक लक्ष्य होना चाहिए.

बैंक ने 'यूनियन भाषा सौहार्द इंद्रधनुष' कार्यक्रम का शुभारंभ किया है जिसके अंतर्गत स्टाफ को स्थानीय भाषा में संवाद करने का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है, ताकि वे ग्राहकों से उनकी अपनी भाषा में संवाद करते हुए उनकी आवश्यकता के अनुरूप सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बन सकें.

जैसा कि आप जानते हैं, कारोबार वृद्धि के साथ-साथ बैंक अपने सामाजिक दायित्वों के निर्वाह के प्रति भी सजग है. अत:, कॉरपोरेट सामाजिक दायित्व के अन्तर्गत बैंक द्वारा कई पहल किए जाते हैं. एंपावर हर के अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों आदि में आवश्यक सामग्री वितरित की जाती है. आपको यह जानकर खुशी होगी कि बैंक ने 'यूनियन साक्षर' योजना प्रारंभ करने का संकल्प किया है, जिसके अंतर्गत विभिन्न केंद्रों में साक्षरता अभियान चलाए जाएंगे.

मैं बैंक को विकासपथ पर ले जाने में अपना पूर्ण सहयोग देने के लिए आप सभी का आह्वान करती हूँ.

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

आपको विदित है कि यूनियन सृजन के माध्यम से हम अपने सुधी पाठकों के समक्ष बैंकिंग क्षेत्र की अद्यतन जानकारी प्रस्तुत करने का प्रयास करते हैं. इसी प्रयास की अगली कड़ी में यह अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें अत्यंत प्रसन्नता हो रही है.

यूनियन सृजन के जून 2024 अंक से हमने गृह पत्रिका में कई परिवर्तन किए हैं ताकि गृह पत्रिका की विषयवस्तु की गुणवत्ता के स्तर में वृद्धि की जा सके. इस अंक से गृह पत्रिका के पृष्ठों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ इसकी रूप-रेखा में भी परिवर्तन किया गया है. यूनियन सृजन के उद्देश्य हैं - बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन की प्रगामी प्रगति तथा दैनिक काम-काज में हिंदी का प्रयोग बढ़ाने हेतु हिंदी में बैंकिंग संबंधी जानकारी तथा राजभाषा कार्यान्वयन की जानकारी प्रदान करना; स्टाफ सदस्यों की हिंदी में लेखन प्रतिभा को प्रोत्साहित करना; बैंक द्वारा राजभाषा कार्यान्वयन हेतु आयोजित विभिन्न गतिविधियों का प्रचार करना.

राजभाषा कार्यान्वयन में प्रगामी प्रगति की दिशा में सहयोग करना हिंदी गृह पत्रिका के महत्वपूर्ण उद्देश्यों में से एक है. इसी क्रम में गृह पत्रिका के इस अंक से हमने एक नया स्थाई स्तंभ प्रारंभ किया है - 'कार्यान्वयन सृजन'. इसके अंतर्गत बैंक के दैनिक काम-काज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु सहायक साहित्य यथा शब्दावली, तकनीकी शब्दों की परिभाषा और वाक्य में प्रयोग आदि का समावेश किया जाएगा.

राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में संवाद और इसके अनेक पहलुओं को उजागर करना भी हिंदी गृह पत्रिका का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य है. अत: 'राजभाषा सृजन' स्थाई स्तंभ के अंतर्गत हम राजभाषा कार्यान्वयन से संबंधित विभिन्न विषयों के लेख प्रकाशित करते हैं.

बैंकिंग जगत इसको प्रभावित करने वाली नई संकल्पनाओं से अपने पाठकों को अवगत कराना भी इस गृह पत्रिका का एक उद्देश्य है. इस उद्देश की पूर्ति हेतु हमने इस अंक में अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क, रूपे कार्ड लिंक इट एंड फरगेट इट, महिला सम्मान बचत पत्र, बैंकों में प्रतिभा प्रबंधन जैसे लेखों को शामिल किया है. गृह पत्रिका के अगले खंड में हमने साहित्यिक प्रकृति के लेख और सामान्य जानकारी के लेख प्रकाशित किए हैं.

हमारे लेखकों ने विभिन्न विषयों पर लेख लिखकर पत्रिका को वैविद्यपूर्ण बनाया है. हमें खुशी है कि नए लेखक हमारी गृह पत्रिका के साथ जुड़ रहे हैं, इससे गृह पत्रिका की विषय वस्तु में भी समृद्धि आई है. हम अपने लेखकों के आभारी हैं, जिनके योगदान से ही गृह पत्रिका की विरासत आगे बढ़ रही है. संपादकीय सलाहकारों के अमूल्य मार्गदर्शन से गृह पत्रिका की गुणवत्ता में निखार आया है.

हमें विश्वास है कि आपको 'यूनियन सृजन' का यह अंक पसंद आएगा. 'यूनियन सृजन' की धरोहर को समृद्ध बनाने की दिशा में आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी.

भवदीया,

(गायत्री रवि किरण)

अनुवाद एवं राजभाषा हिंदी

हिंदी भारत की राजभाषा है. एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है. बहुत सरल, सहज और सुगम भाषा होने के साथ हिंदी विश्व की संभवत: सबसे वैज्ञानिक भाषा भी है जिसे दुनिया भर में समझने और बोलने वाले बहुत बड़ी संख्या में मौजूद हैं. राजभाषा शासन एवं जनता के मध्य एक सेतु का कार्य करती है. राजभाषा जितनी सरल एवं अधिक से अधिक लोगों द्वारा समझी जा सकने वाली भाषा होगी, उतनी ही अच्छी तरह से जनता सरकार द्वारा कार्यान्वित योजनाओं को समझ पाएगी एवं सरकारी योजनाओं में अधिक से अधिक भाग ले पाएगी. यह किसी देश या क्षेत्र को एकीकृत करने में मदद कर सकता है और सरकार के लिए अपने नागरिकों के साथ संवाद करना आसान बना सकता है. यह व्यापार और वाणिज्य के लिए भी उपयोगी हो सकता है.

किसी भाषा में कही या लिखी गई बात का किसी दूसरी भाषा में सार्थक परिवर्तन अनुवाद कहलाता है. अनुवाद का कार्य बहुत पुराने समय से होता आया है. संस्कृत में 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग शिष्य द्वारा गुरु की बात के दुहराए जाने, पुन: कथन, समर्थन के लिए प्रयुक्त कथन, आवृत्ति जैसे कई संदर्भों में किया गया है.

संस्कृत के 'वद्' धातु से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ है. 'वद्' का अर्थ है बोलना. 'वद्' धातु में 'अ' प्रत्यय जोड़ देने पर भाववाचक संज्ञा में इसका परिवर्तित रूप है 'वाद' जिसका अर्थ है- 'कहने की क्रिया' या 'कही हुई बात'. 'वाद' में 'अनु' उपसर्ग जोड़कर 'अनुवाद' शब्द बना है, जिसका अर्थ है, पुन: कहना. इसका प्रयोग पहली बार मोनियर विलियम्स ने अँग्रेजी शब्द ट्रांसलेशन के पर्याय के रूप में किया. इसके बाद ही 'अनुवाद' शब्द का प्रयोग एक भाषा में किसी के द्वारा प्रस्तुत की गई सामग्री की दूसरी भाषा में पुन: प्रस्तुति के संदर्भ में किया गया.

हिंदी की बढ़ती ताकत एवं इसका बढ़ता दायरा इसकी लोकप्रियता की कहानी कहता है. वर्तमान में उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार हिंदी भारत की सबसे तेजी से बढ़ने वाली भाषा है. पिछले कुछ सालों में हिंदी बोलने वालों की संख्या में लगभग 10 करोड़ की वृद्धि हुई है. हिंदी का प्रयोग विदेशों में भी कम नहीं है. एक आर्थिक दैनिक समाचार पत्र के अनुसार विश्व के 30 देशों के करीब 105 विश्वविद्यालयों में हिंदी अध्ययन केंद्र चल रहे हैं. एक और रिपोर्ट के अनुसार विश्व के 176 विश्वविद्यालयों में हिंदी की पढ़ाई होती है. आज देश में हिंदी सरकारी काम-काज की भाषा होने के साथ-साथ बाजार और सोशल मीडिया की भी भाषा बन गई है.

जब अनुवाद की चर्चा होती है तो हम सरकारी कार्यालयों में उपलब्ध अनूदित सामग्री से ही रुबरु होते हैं, इसके संबंध में हमेशा ही वाद-विवाद चलता रहता है, कभी उसकी गुणवत्ता को लेकर तो कभी उसकी क्लिष्टता को लेकर होता है. तथापि अनुवाद की दुनिया सिर्फ सरकारी आदेशों और परिपत्रों तक ही सीमित नहीं है. इसका फलक बहुत व्यापक है और सरकारी दस्तावेजों के अनुवाद से इतर इसकी एक बहुत बड़ी दुनिया भी है. इसमें कोई दो राय नहीं कि भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुसार सरकारी कार्यालयों, बैंकों और उपक्रमों में कार्यान्वयन के साथ द्विभाषी दस्तावेजों की अनिवार्यता ने अनुवाद को एक ऐसी पहचान दी है जिसने इसके महत्व को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ाया है.

हम सब जानते हैं कि संविधान सभा ने सर्व-सम्मति से हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया और भाषा के आधार पर राज्यों को अलग-अलग श्रेणियों में रखा. इसी प्रक्रिया के अंतर्गत द्विभाषिक दस्तावेजों का चलन शुरु हुआ, जो, आजतक निरंतर जारी है. अत: नई प्रयुक्ति और नई शब्दावली की जरूरत महसूस हुई. इसके लिए एक शब्दावली आयोग का गठन किया गया, जिसे शब्दों के मानक अनुवाद का उत्तरदायित्व सौंपा गया. आज लगभग सभी सरकारी कार्यालयों में अनुवाद की व्यवस्था है और राजभाषा संबंधी प्रावधानों के अनुरूप कागजातों/दस्तावेजों का अनुवाद कार्य चलता रहता है. दरअसल, कार्यालय में किए जाने वाले अनुवाद को लेकर अक्सर कई सवाल उठाए जाते हैं. मसलन इसका सरल न होना, अनूदित पाठ से ज्यादा स्पष्ट मूल पाठ का होना और

कठिन शब्दों का प्रयोग आदि. अगर देखा जाए तो प्रथम दृष्ट्या इन सवालों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता पर जरूरत इस बात की है कि इन पर गंभीरता से विचार किया जाए.

अनुवाद के जानकार ऐसा मानते हैं कि समय के साथ-साथ नए संदर्भ, स्रोत और लक्ष्य भाषाओं की प्रकृति, संरचना, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश, अनुभूति और अर्थ क्षेत्र में विभिन्नता के कारण अनुवाद से जुड़ी समस्याएं उत्पन्न होती हैं. यह भी जरूरी नहीं कि स्रोत भाषा के प्रत्येक शब्द के लिए लक्ष्य भाषा में समतुल्य प्रतिशब्द उपलब्ध हो. हिंदी में दो लिंग होते हैं जबकि अंग्रेजी में तीन. हिंदी वाक्य में पहले कर्ता फिर कर्म और उसके बाद क्रिया आती है. हिंदी में कर्ता के अनुसार क्रिया बदल जाती है जबकि अंग्रेजी में ऐसा नहीं होता है. अनुवादक को इस प्रकार की जानकारी हो तभी वह बेहतर अनुवाद कर सकता है. इसके अतिरिक्त अनुवादक को स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा दोनों पर समान अधिकार होना चाहिए. साथ ही उसे उस विषय का भी अच्छा ज्ञान होना चाहिए जिससे संबंधित सामग्री का अनुवाद किया जा रहा है.

प्रत्येक कार्यालय में कार्य का स्वरूप और उसकी प्रकृति भिन्न होती है. साथ ही प्रत्येक कार्यालय में अनेक विभाग/प्रभाग/अनुभाग होते हैं जिनकी कार्यप्रणाली भिन्न और उनकी शब्दावली भी विशिष्ट प्रकार की होती है. यदि अनुवादक को इसकी जानकारी नहीं है, तो अनुवाद कार्य में कठिनाई हो सकती है. ऐसा इसलिए होता है कि सरकारी अनुवाद आमतौर पर तथ्यात्मक होता है और वहां शब्दानुवाद किया जाता है पर कोशिश यही रहती है कि अनुवाद सुपाठ्य हो और इसमें मूल भाव बना रहे. हालांकि ऐसा अंग्रेजी के बड़े-बड़े वाक्यों को छोटे-छोटे वाक्यों में तोड़कर हिंदी की प्रकृति के अनुसार अनुवाद किया जाए तो बात आसानी से समझ में आ सकती है पर व्यवहार में ऐसा कम ही देखने को मिलता है.

आज अनुवाद समय की जरूरत है, चाहे सरकारी कार्यालयों में हो या आम साहित्य में या कहीं और भी. वर्तमान दौर विकास का है और विकास में भाषा की भूमिका बहुत ही अहम होती है. भाषा और समाज एक दूसरे पर निर्भर भी होते हैं और एक दूसरे के पूरक भी. इसमें कोई दो राय नहीं कि भाषा सामाजिक विकास की एक निश्चित अवस्था में ही अपने सुगठित और विकसित रूप में उपलब्ध होती है. तथापि विकसित होने पर यह भाषा विचारों और योजनाओं का माध्यम बनकर समाज और उद्योग के विकास में सहायक होती है. एक स्तर पर भाषा सामाजिक सद्भाव और समरसता का माध्यम बनकर समाज को प्रगति के पथ पर अग्रसर करती है वहीं दूसरी ओर उसकी आशा और अपेक्षा की पूर्त्ति के लिए समाज में जागरण का वाहक बनती है.

इसमें कोई दो राय नहीं कि भारतीय समाज की प्रगति में भारत के लोगों की मेहनत के साथ-साथ उनका भाषायी प्रेम और देश प्रेम हमेशा ही उत्प्रेरक की भूमिका में रहा है. एक बात और ध्यान देने योग्य है कि उत्तर भारतीय भाषाओं और दक्षिण की द्रविड़ भाषाओं के बीच समन्वय और आदान-प्रदान का रिश्ता हमेशा ही विद्यमान रहा है.

आज ज्ञान और विज्ञान के दौर में यह और भी गहरा होता जा रहा है और बेशक इसमें अनुवाद की बहुत बड़ी भूमिका होती है. आज हिंदी से इतर दूसरी भाषाओं का साहित्य ज्ञान और वहां उपलब्ध जानकारी अगर अन्य भाषाओं में मिल पा रही है तो इसका श्रेय अनुवाद को ही दिया जाना चाहिए. इसके अलावा कई चर्चित धारावाहिक और सिनेमा अगर पूरे देश में उतनी ही गंभीरता से देखा जा रहा है, जितना वह स्थानीय भाषा में देखा गया था, तो इसका श्रेय भी बेशक अनुवाद को ही दिया जाना चाहिए.

जाहिर है यह सब अनुवाद के माध्यम से ही संभव हो पा रहा है. एक अनुमान के अनुसार अंग्रेजी में लगभग 2.5 लाख पृष्ठों का ज्ञान और शोध साहित्य प्रत्येक वर्ष प्रकाशित होता है इनमें से लगभग 50 पृष्ठों में निहित ज्ञान और शोध से मिलने वाली जानकारी भारत जैसे विकासशील देश के लिए बहुत आवश्यक होती है और यह भी जानना जरूरी है कि इस जरूरत को पूरा करने के लिए अनुवाद एक सशक्त माध्यम होता है. एक बहुभाषी समाज में विचारों के आदान-प्रदान और आपसी संवाद का एक सर्वाधिक उपयुक्त साधन अनुवाद होता है. दरअसल संवाद की इस रचनात्मक भूमिका को इस तरह से समझा जा सकता है कि एक तरफ तो यह विकास की मानसिकता को मजबूत बनाता है तो दूसरी तरफ भाषा और उसकी स्वीकार्यता को समृद्ध बनाता है. यह सर्वविदित है कि अनुवाद दो भाषाओं के बीच होता है जिसके माध्यम से होने वाला भाषायी रूपांतरण दूसरी भाषा को नवजीवन प्रदान करता है इसीलिए अनुवाद को सृजन का अनुसृजन भी कहा जाता है. भाषायी मुद्दों पर चर्चा करते हुए हमें अनुवाद को बहुत गंभीरता से लेना चाहिए क्योंकि अनुवाद एक सेतु है जो एक साथ दो उद्देश्यों की पूर्त्ति कर सकता है अर्थात भाषा की समृद्धि एवं विकास. वास्तव में अनुवाद भाषा के इन्द्रधनुषी रूप की पहचान का सरलतम मार्ग है. अनुवाद की अनिवार्यता को टाला नहीं जा सकता और न ही अनुवाद की बहुकोणीय उपयोगिता से इन्कार किया जा सकता है.

डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
एन.पी.सी., पटना

राजभाषा कार्यान्वयन में तकनीकी की भूमिका

भारत जैसे बहुभाषी देश में अधिक से अधिक लोगों को उनकी अपनी भाषा में सूचना और सेवाओं के लिए सार्वभौमिक पहुँच उपलब्ध कराना अंतर्निहित प्राथमिक चिंता और चुनौतीपूर्ण विषय है. इस चिंतनीय विषय से बैंकिंग व अन्य सरकारी एवं गैर सरकारी संस्थान भी अछूते नहीं है. चूंकि दुनिया भर में तकनीकी क्रांति- सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के आसपास अधिकतर केंद्रित है, अत: राजभाषा के क्षेत्र में भी नई तकनीकी के प्रयोग से संस्थानों के कार्य सुगम एवं सुविधाजनक हो गए हैं.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति को गठित करने का निर्णय गृह मंत्रालय द्वारा जारी ज्ञापन सं - 5/69/69- रा.भा. दिनांक 25.10.69 के अंतर्गत लिया गया था, जिसमें मंत्रालयों / विभागों से अनुरोध किया गया था कि सभी सरकारी संस्थान अपने अपने स्तर पर विभागीय राजभाषा समिति गठित करेंगे, जिससे हिन्दी के प्रगामी प्रयोग की समीक्षा की जा सके और साथ ही इसकी उन्नति के लिए उपयुक्त कदम उठाए जा सकें. उन्हीं उपयुक्त कदमों का फल आज के दौर में दिख रहा है.

2022 के दौरान विज्ञान भवन में आयोजित एक भव्य हिन्दी दिवस समारोह में माननीय पूर्व राष्ट्रपति जी ने अपने सम्बोधन में कहा था कि हिन्दी अनुवाद की नहीं वरन संवाद की भाषा है. हमें इस उक्ति का सही आशय समझना एवं आत्मसात करना चाहिए.

तकनीकी के इस दौर में सभी संस्थानों में राजभाषा में काम करना बहुत ही आसान हो गया है. जिन कार्यों को करने के लिए हमारी पिछली पीढ़ी को बहुत संघर्ष करने पड़ते थे, आज हम वही कार्य पलक झपकते ही कर लेते हैं. जिस तरह से तकनीकी के अनुप्रयोगों से हम सभी क्षेत्रों में लाभान्वित हो रहे हैं, उसी प्रकार भाषा के क्षेत्र में भी नित नवीन तकनीकियाँ भी हमारे सामने आ रही हैं. इनकी मदद से कोई भी अपनी भाषा में तकनीकी माध्यमों के प्रयोग से तेजी और सरलता से विभिन्न संचार माध्यमों पर कार्य कर सकता है. आज से दस वर्ष पहले लोगों को तकनीकी माध्यमों में अपनी भाषा में कार्य करने के लिए जिस बेचारगी का सामना करना पड़ता था, अब वह नहीं रही. समय के साथ राजभाषा के कार्यान्वयन में भी तकनीकी का प्रयोग एक मील का पत्थर साबित हो रहा है. आज कंप्यूटर पर हिंदी में काम न करने का कोई बहाना नहीं बचा है. कार्यालयों में हिंदी में काम करने के लिए तकनीकी स्तर पर कोई समस्या नहीं बची, आज पहले के मुक़ाबले सभी कार्यालयों में राजभाषा के क्षेत्र में तकनीकी का प्रयोग बढ़ता जा रहा है. इस बढ़ते प्रयोग के प्रभाव की चमक आज विभिन्न क्षेत्रों में देखने को मिल रही है.

किसी भी कार्यालय में कम्प्युटर टाइपिंग का कार्य सबसे अधिक होता है और हिंदी टाइपिंग में यूनिकोड तकनीकी के आ जाने के बाद से हमारे देश में हिंदी व अन्य भारतीय भाषाओं में टाइपिंग के मामले में क्रांति सी आ गई है. पहले टाईप करने का कार्य केवल टाइपिस्ट का होता था, आज क्लर्क से लेकर महाप्रबंधक/निदेशक/ महानिदेशक स्तर तक के अधिकारी भी यूनिकोड के माध्यम से सहजता से टाइपिंग कर पा रहे हैं. परंपरागत टंकण का स्थान अब फोनेटिक की बोर्ड ने ले लिया है जिसकी मदद से काम शीघ्र पूरा हो जाता है. तकनीकी की मदद से सभी स्तर के हिंदी में दक्ष कर्मचारी/अधिकारी हिंदी में लिखने में रूचि रखने लगे हैं. इसमें एक बार हिंदी में टाईप की गई सामग्री का सभी माध्यमों में प्रयोग किया जा सकता है. अब

स्थिति यह है कि 15 वर्ष पहले तक जो लोग कंप्यूटर सीखने और हिंदी में काम करने से बचते थे आज वे आगे बढ़कर स्वत: कंप्यूटर भी सीख रहे हैं और हिंदी में काम भी करना चाह रहे हैं. आज के समय में तकनीकी इतनी विकसित हो चुकी है कि यदि लोगों को मात्र कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने के संबंध में जागरूक कर दिया जाए तो वे शेष कार्य खुद से ही कर लेंगे. इससे सरकारी कार्यालयों में कंप्यूटर पर हिंदी में काम करने संबंधी अभियान को बहुत गति मिली है. इस अभियान में दुनिया भर की दिग्गज सॉफ्टवेयर कंपनियों का सहयोग भी मिल रहा है. वर्ष 2000 के बाद लगभग सभी ऑपरेटिंग सिस्टम यूनिकोड सपोर्ट दे रहे हैं. साथ ही कई सॉफ्टवेयर अपनी स्थानीयकरण नीति के अंतर्गत यूनिकोड में काम करने की सुविधा दे रहे हैं. आज देश में राजभाषा कार्यान्वयन में हिन्दी को सुगम बनाने में यूनिकोड का अहम योगदान है. देश भर में सभी स्तर के अधिकारी/कर्मचारी अपने कार्य के लिए किसी टाइपिस्ट पर आश्रित न रहकर खुद से अपना कार्य हिन्दी में कर पा रहे हैं. यूनिकोड ने कंप्यूटर पर हिंदी एवं अन्य क्षेत्रीय भाषाओं को सशक्त बना दिया है.

गूगल प्ले स्टोर से गूगल ट्रांसलेट ऐप द्वारा अब आप टाइप करके 103 भाषाओं में अनुवाद प्राप्त कर सकते हैं. गूगल ने भारतीय भाषाओं के लिए नए प्रोडक्ट और फीचर्स की घोषणा की है. गूगल ट्रांसलेट गूगल की नई न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन तकनीक का इस्तेमाल करेगा. इसके तहत गूगल अंग्रेजी और भारत की 9 भाषाओं के बीच ट्रांसलेशन की सुविधा मुहैया कराएगा. गूगल अंग्रेजी और भारतीय भाषाओं जैसे हिंदी, बंगाली, मराठी, तमिल, तेलुगु, गुजराती, पंजाबी, मलयालम और कन्नड के बीच ट्रांसलेशन की सुविधा प्रदान कर रहा है.

गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग ने अपनी वेबसाइट https://rajbhasha.nic.in पर राजभाषा हिंदी में कार्य को आसान बनाने के उद्देश्य से राजभाषा में तकनीकी का प्रयोग करने के लिए कई सॉफ्टवेयर उपलब्ध कराए हैं, जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं-

1. लीला (LILA) सॉफ्टवेयर अर्थात् Learn Indian Languages Through Artificial Intelligence, एक स्वंय शिक्षण मल्टीमीडिया पैकेज है. यह राजभाषा विभाग द्वारा तैयार किया गया एक निशुल्क सॉफ्टवेयर है जिसके द्वारा प्रबोध, प्रवीण व प्राज्ञ स्तर के हिंदी के पाठयक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं जैसे कन्नड, मलयालम, तमिल, तेलुगु, बांग्ला आदि के माध्यम से सीखने, ऑनलाइन अभ्यास, उच्चारण सुधार, स्वमूल्यांकन, आदि की सुविधा उपलब्ध है.

2. मंत्र अथार्त MAchiNe assisted TRAnslation Tool सीडैक (CDAC-Center for Development of Advances Computing) द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है. यह राजभाषा विभाग द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद है जो राजभाषा के प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य, रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावेज़ों का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करते हैं. मंत्र राजभाषा इंटरनेट संस्करण के डिजाइन व विकास थिन क्लाइंट आर्किटेक्चर पर आधारित है, इसमें संपूर्ण अनुवाद प्रक्रिया सर्वर पर होती है, इसलिए दूरवर्ती स्थानों में भी इंटरनेट उपलब्ध हो तो लो एंड सिस्टम या कम क्षमता के सिस्टम पर भी दस्तावेज़ों का अनुवाद करने की इस सुविधा का उपयोग किया जा सकता है.

3. श्रुतलेखन एक सतत स्पीकर इंडीपेंडेंट हिंदी स्पीच रिकगनिशन सिस्टम है, जिसका विकास सीडैक, पुणे के एलाइड ए आइ ग्रुप ने राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से किया है. यह स्पीच टू टेक्सट टूल है, इस विधि में प्रयोक्ता माइक्रोफोन में बोलता है तथा कंप्यूटर में मौजूद स्पीच टू टेक्स्ट प्रोग्राम उसे प्रोसेस कर पाठ/ टेक्स्ट में बदल कर लिखता है.

4. सीडैक पुणे के तकनीकी सहयोग से ई-महाशब्दकोश का निर्माण किया गया जो कि राजभाषा की साइट पर निशुल्क उपलब्ध है. यह एक द्विभाषी - द्विआयामी उच्चारण शब्दकोश है जिसके द्वारा हिंदी या अंग्रेज़ी अक्षरों द्वारा शब्द की सीधी खोज की जा सकती है.

5. कंठस्थ सीडैक द्वारा विकसित एक मशीनी अनुवाद सॉफ्टवेयर है. यह राजभाषा विभाग की साइट पर हिंदी ई टूल्स के अंतर्गत उपलब्ध है. इस पर हिंदी से अंग्रेजी और अंग्रेजी से हिंदी में सरलता से अनुवाद किया जा सकता है. इसकी विशेषता यह है कि इसमें आपके द्वारा किया गया अनुवाद भविष्य के लिए सुरक्षित रहता है. इसमें प्रशासनिक, वित्तीय, कृषि, लघु उद्योग, सूचना प्रौद्योगिकी, स्वास्थ्य रक्षा, शिक्षा एवं बैंकिंग क्षेत्रों के दस्तावे. जों का अनुवाद किया जा सकता है. इसके साथ-साथ इस ऐप में शब्दकोश भी उपलब्ध है.

अंतत: यह सर्वमान्य है कि राजभाषा कार्यान्वन के लिए आधुनिक तकनीकी का अधिकतम प्रयोग सेवा, प्रचार, प्रसार, प्रेरणा, व प्रोत्साहन का सबब बन सकता है.

"राजभाषा को आगे बढ़ाना है,
उन्नति की राह पर ले जाना है,

केवल एक दिन ही नहीं,
हमें नित हिन्दी दिवस मनाना है."

उदय कुमार
डी. आई. टी. हैदराबाद

ऋण अनुपालन एवं अनुश्रवण विभाग की शब्दावली

अनुश्रवण, ऋण प्रदान करने की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग है, जिसमें उधार खातों का परोक्ष अनुश्रवण किया जाता है. इससे प्रत्येक उधार खाते की गुणवत्ता तथा समग्र रूप से ऋण पोर्टफोलियो की आस्ति गुणवत्ता मानक श्रेणी में बने रहना सुनिश्चित किया जा सकता है.

ऋण अनुपालन एवं अनुश्रवण विभाग यह सुनिश्चित करता है कि ऋण का संवितरण बैंक द्वारा निर्धारित प्रक्रियाओं के अनुरूप किया जाए, ऋण राशि की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए और बैंक की स्वस्थ ऋण स्थिति बनाए रखी जाए.

यह विभाग वित्तीय पहलुओं के विश्लेषण के साथ-साथ उसके घटकों के अनुश्रवण, उधारकर्ता द्वारा लिए गए ऋण के संबंध में उसके वित्तीय व्यवहार पर सतत दृष्टि तथा ऋण अनुश्रवण नीति के अनुसार हर चरण पर अधिकतम समुचित सावधानी बरतने की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. विभाग का लक्ष्य **आस्ति की गुणवत्ता को बनाए रखना है. विभाग के लिए उधारकर्ता पर दृष्टि रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना कि उसकी विश्वसनीयता तथा प्रतिबद्धताओं को पूरा करने की क्षमता आदि.**

ऋण अनुश्रवण विभाग उधारकर्ता के व्यवहार की निगरानी करते हुए बैंक के ऋण जोखिम को कम करता है. साथ ही, यह उधारकर्ता के वित्तीय व्यवहार में होने वाले परिवर्तनों पर भी नज़र रखता है.

बैंक में प्रयोग किए जाने वाले एवं उसके संदर्भ में विशेष अर्थ रखने वाले शब्दों एवं पदबंधों का परिचय कराने के प्रयास में ऋण अनुपालन एवं अनुश्रवण विभाग के काम-काज में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख एवं बहुधा प्रयुक्त शब्दों, पदबंधों एवं इनके हिंदी अनुवाद एवं व्याख्या का संकलन दिया गया है.

प्रचलित शब्दों की व्याख्या

1. Prudential norms: विवेकपूर्ण मानदंड

अर्थ: किसी वित्तीय संस्थान की सुरक्षा, सुदृढ़ता एवं स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु विभिन्न प्रथाओं एवं आवश्यकताओं से संबंधित मानक एवं दिशानिर्देश

वाक्य में प्रयोग: ऋण अनुपालन एवं अनुश्रवण विभाग ने वर्ष 2024-25 हेतु दबावग्रस्त आस्तियों के समाधान के लिए विवेकपूर्ण नीति जारी की है.

2. Provisioning of advances: अग्रिमों का प्रावधानीकरण

अर्थ: वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मुनाफे का एक निश्चित भाग उन ऋणों या अग्रिमों से होने वाले संभावित नुकसान से बचाव हेतु अलग रखा जाता है जो अनर्जक आस्ति बन सकते हैं

वाक्य में प्रयोग: बैंक द्वारा अग्रिमों का प्रावधानीकरण सुनिश्चित करता है कि किसी संभावित ऋण चूक की स्थिति में वित्तीय स्थिरता बनी रहें.

3. Resolution of stress: (ऋण पर) दबाव का समाधान

अर्थ: किसी ऋण के दबावग्रस्त होने की स्थिति में उसे उस स्थिति से बाहर निकालना

वाक्य में प्रयोग: उच्च जोखिम वाले ऋणों पर दबाव के समाधान के द्वारा बैंक ने अपनी समग्र वित्तीय स्थिरता को सुधारा एवं अनर्जक-आस्तियों की संख्या को कम किया.

4. Satisfaction of charges: ऋणभार पूर्ति

अर्थ: उधारकर्ता द्वारा प्रतिभूत ऋण को पूर्ण रूप से चुकाना अथवा ऋणभार के अंतर्गत अपनी देनदारियाँ चुकाना

वाक्य में प्रयोग: ऋणभार पूर्ति पर बैंक ने उधारकर्ता की परिसंपत्ति पर से बंधक हटा लिया.

5. Statutory central auditors: सांविधिक केंद्रीय लेखापरीक्षक

अर्थ: लागू कानूनों एवं विनियमों के अनुसार बैंक के वित्तीय अभिलेखों एवं विवरणों की जाँच एवं सत्यापन करने हेतु नियुक्त स्वतंत्र लेखापरीक्षक

वाक्य में प्रयोग: बैंक में सांविधिक केंद्रीय लेखापरीक्षकों द्वारा किए गए लेखापरीक्षण में सभी विवरणों का सत्यापन किया गया.

6. Letter of lien: पुनर्ग्रहणाधिकार पत्र

अर्थ: बैंक द्वारा जारी वह प्रपत्र जिसमें यह उल्लेख होता है की बैंक उधारकर्ता की संपत्ति को तब तक कब्जे में रखने का अधिकार रखता है जब तक उधारकर्ता ऋण पूर्ण रूप से चुका न दे

वाक्य में प्रयोग: बैंक ने ऋण की सुरक्षा हेतु उधारकर्ता को पुनर्ग्रहणाधिकार पत्र जारी किया.

7. Forensic audit: फोरेंसिक लेखापरीक्षा

अर्थ: वित्तीय अनियमितताओं या धोखाधड़ी के संदेह पर कानूनी विशेषज्ञता एवं लेखांकन कौशल के उपयोग से की जाने वाली लेखापरीक्षा

वाक्य में प्रयोग: मेसर्स पैरामाउंट इंडस्ट्रीज़ के खाते में हेर-फेर के संदेह पर उच्च प्रबंधन ने फोरेंसिक लेखापरीक्षा करने का अनुदेश दिया.

8. De-listing: विसूचीकरण

अर्थ: बैंक के विभिन्न कार्यों हेतु नियुक्त की जाने वाली संस्थाओं को सूची से हटाना

वाक्य में प्रयोग: बैंक ने अपने नवीनतम परिपत्र के माध्यम से मेसर्स रमेश सिंह एंड असोसिएट्स के विसूचीकरण को अधिसूचित किया है.

9. Reversal: प्रतिवर्तन/वापसी

अर्थ: किसी वित्तीय लेन-देन अथवा पूर्व में दर्ज किसी प्रविष्टि को सुधारना

वाक्य में प्रयोग: बैंक ने एबीसी खाते में त्रुटिपूर्ण प्रविष्टि का प्रतिवर्तन कर दिया है.

10. Loan syndication: ऋण समूहन

अर्थ: कई ऋणदाताओं द्वारा साथ में मिलकर किसी उधारकर्ता को बड़ा ऋण दिया जाना

वाक्य में प्रयोग: ऋण समूहन का मुख्य उद्देश्य जोखिम एवं एक्स्पोज़र को कम करना होता है.

11. Restructured accounts: पुन:संरचित खाते

अर्थ: वे बैंक खाते जिनकी ऋण शर्तों को किसी कारणवश बदला गया हो, जैसे कि लोन की समयसीमा बढ़ाना, ब्याज दर में परिवर्तन करना या भुगतान की शर्तों को आसान बनाना

वाक्य में प्रयोग: पुन: संरचित खाते बैंक के अग्रिमों पर दबाव के प्रबंधन को अपेक्षाकृत सुगम बनाते हैं.

12. Exposure: एक्स्पोज़र

अर्थ: विभिन्न वित्तीय गतिविधियों एवं प्रतिबद्धताओं से उत्पन्न जोखिम का परिमाण

वाक्य में प्रयोग: पूर्व वर्ष की तुलना में इस वर्ष बैंक के एक्स्पोज़र में किंचित ह्रास हुआ है.

13. Charge: ऋणभार

अर्थ: ऋण चुकौती सुरक्षित करने अथवा किसी देनदारी को चुकाने हेतु बैंक का उधारकर्ता की आस्ति पर प्रतिभूति हित एवं पुनर्ग्रहणाधिकार

वाक्य में प्रयोग: बैंक ने ऋण के संपार्श्विक के रूप में कंपनी की विनिर्माण इकाई पर ऋणभार निश्चित किया.

14. Corrective/Curative Monitoring: सुधारात्मक/उपचारात्मक अनुश्रवण

अर्थ: ऋण खातों का लगातार अनुश्रवण करना तथा साथ ही साथ उनमें हो रही अनियमितताओं के समाधान हेतु आवश्यक कदम उठाना

वाक्य में प्रयोग: सुधारात्मक/उपचारात्मक अनुश्रवण से बहुत से ऋण खातों को दबाव से बाहर निकाला गया.

15. Regulatory forebearance: विनियामक सहन

अर्थ: आर्थिक संकट एवं वित्तीय अस्थिरता के समय बैंकिंग नियामकों द्वारा नियमों और मानकों में अस्थायी ढील देना

वाक्य में प्रयोग: वैश्विक महामारी कोविड-19 के दौरान विनियामकों द्वारा पर्याप्त समय तक विनियामक सहन अपनाया गया जिससे देश की आर्थिक स्थिति को संकट से निकालने में सहायता मिली.

16. Rephasement: पुनर्निर्धारण

अर्थ: ऋण की समयसीमा पुन: निर्धारित करना

वाक्य में प्रयोग: ग्राहक को ऋण की चुकौती में सहायता करने हेतु पुनर्निर्धारण एक महत्वपूर्ण उपाय है जो ग्राहक को ऋण चुकौती हेतु लचीलापन प्रदान करता हैं.

17. Depreciable Assets: अवक्षयी आस्तियां/परिसंपत्तियाँ

अर्थ: वे आस्तियां जिनका उपयोग आय अथवा लाभ अर्जित करने के लिए किया जाता है तथा जिनकी उपयोगी आयु एक वर्ष से अधिक होती है तथा जिनका मूल्य समय बीतने के साथ धीरे-धीरे कम होता जाता है

वाक्य में प्रयोग: बैंक के वित्तीय विवरण अवक्षयी आस्तियों, जिनमें कार्यालय की इमारतें तथा कम्प्युटर उपकरण शामिल हैं, के वार्षिक मूल्यह्रास के कारण मूल्य में महत्वपूर्ण गिरावट प्रदर्शित कर रहे हैं

18. Restructuring: पुनर्रचना

अर्थ: किसी दबावग्रस्त ऋण खाते को दबाव से बाहर निकालने हेतु ऋण की शर्तों में बदलाव करना जैसे ऋण की समयसीमा बढ़ाना, ब्याज दर में परिवर्तन करना या भुगतान की शर्तों को आसान बनाना

वाक्य में प्रयोग: ऋण खाते की पुनर्रचना खाते को दबाव से बाहर निकालने में सहायक होती है.

19. Deferred Interest: आस्थगित ब्याज

अर्थ: एक वित्तीय व्यवस्था जिसके अंतर्गत उधारकर्ता को एक निर्दिष्ट अवधि के लिए ऋण पर ब्याज नहीं चुकाना होता

वाक्य में प्रयोग: मेसर्स रवि एंटरप्राइजेज़ को दी गई आरंभिक आस्थगित ब्याज की सुविधा 6 माह के लिए ही प्रदान की गई है.

20. Upgradation: उन्नयन

अर्थ: किसी खाते को अनर्जक आस्ति की श्रेणी से मानक खाते की श्रेणी में लाना

वाक्य में प्रयोग: ऋण अनुपालन एवं अनुश्रवण की नई योजना के अंतर्गत बेहतर अनुश्रवण से कई बड़े खातों का उन्नयन किया गया.

21. Stock audit: स्टॉक लेखापरीक्षा

अर्थ: किसी कारोबार की मालसूची की मात्रा, स्थिति तथा मूल्य का सत्यापन

वाक्य में प्रयोग: बैंक ने स्टॉक लेखापरीक्षा हेतु कई लेखापरीक्षक फर्मों की नियुक्ति की है.

22. Concurrent Auditing: समवर्ती लेखापरीक्षा

अर्थ: लेखापरीक्षकों द्वारा बैंक के संव्यवहार एवं प्रक्रियाओं की सतत तत्काल अथवा लगभग तत्काल समीक्षा एवं मूल्यांकन

वाक्य में प्रयोग: सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों में अन्य लेखापरीक्षाओं के साथ-साथ अब समवर्ती लेखापरीक्षा भी की जाती है।

23. Refinancing of exposures: एक्स्पोज़र का पुनर्वित्तपोषण

अर्थ: मौजूदा ऋण अथवा कर्ज़ देनदारियों को नए निबंधन एवं शर्तों के साथ नए ऋण के साथ प्रतिस्थापित करना

वाक्य में प्रयोग: एक्स्पोज़र के पुनर्वित्तपोषण द्वारा उधारकर्ता की वित्तीय स्थिति में सुधार करने अथवा बैंक के एक्स्पोज़र का अधिक प्रभावी रूप से प्रबंधन करने में सहायता मिलती है.

24. Residual Debt: अवशिष्ट कर्ज

अर्थ: कर्ज की वह राशि जो अभी भी उधारकर्ता द्वारा चुकाई जानी है

वाक्य में प्रयोग: अपने वाहन का विक्रय कर अपने ऋण के एक भाग को चुका देने के उपरांत भी सुरेश को अभी भी अवशिष्ट कर्ज़ की एक बड़ी राशि को चुकाना है.

25. Risk Weight: जोखिम भार/भारिता

अर्थ: यह एक ऐसा मेट्रिक है जिसका उपयोग बैंक यह निर्धारित करने के लिए करता है कि संभावित नुकसान से सुरक्षा हेतु उसे अपनी आस्तियों के सापेक्ष कितनी पूंजी रखनी है

वाक्य में प्रयोग: बैंक को अपनी आस्तियों का जोखिम भार निर्धारित करना होता है जिससे संभावित हानि से बचने के लिए पर्याप्त पूंजी का सुरक्षा आवरण बनाए रख सके.

दैनिक कार्य में उपयोग हेतु शब्दावली

Aggregate Exposure:	संकलित एक्स्पोज़र
Asset Classification:	आस्ति वर्गीकरण
Borrowal Accounts:	उधार खाते
Borrowers:	उधारकर्ता
Categorization:	संवर्गीकरण
Caution Advice:	सतर्कता सलाह
Classification:	वर्गीकरण
Compliance:	अनुपालन
Credit Appraisal:	ऋण मूल्यांकन
Credit Portfolio:	ऋण संविभाग/पोर्टफोलियो
Credit Rating:	साख श्रेणी निर्धारण/क्रेडिट रेटिंग
Credit Restraint:	ऋण संबंधी अवरोध
Credit Status:	ऋण-पात्रता की स्थिति
Credit Worthiness:	ऋण पात्रता
Defaulter Entity:	चूककर्ता संस्था
Deficient Monitoring:	ऋण के उपयोग की अक्षम
of credit Utilization	अनुश्रवण/अनुश्रवण में कमी
Delegated Authority:	प्रत्यायोजित प्राधिकार
Delegation:	प्रत्यायोजन
Downgradation:	अवनयन
Due diligence:	समुचित सावधानी
Early Warning Signal:	पूर्व चेतावनी संकेत
Empanelment:	सूची में सम्मिलित करना
Expired Bank Guarantee:	समाप्त बैंक गारंटी
Fake Bank Guarantee:	जाली बैंक गारंटी
Fraud Accounts:	फर्जी खाते
Income Recognition:	आय निर्धारण
Large Value Loans:	बड़ी राशि के ऋण
Legal Audit Compliance:	विधिक लेखा-परीक्षा अनुपालन
Letter of Hypothecation:	दृष्टिबंधक पत्र
Loan Accommodation:	ऋण निभाव/सहायता
Loan Waiver:	ऋण संबंधी छूट/अधित्यजन
Loss of Collaterals:	संपार्श्विकों की हानि
Monitoring:	अनुश्रवण
Moratorium:	ऋणस्थगन
Non-Compliance:	अननुपालन/अनुपालन न करना
Non-credit Areas:	गैर-ऋण क्षेत्र
Non-performing Assets:	अनर्जक आस्तियां
Overdue:	अतिदेय
Payment Terms:	भुगतान की शर्तें
Pledger:	गिरवीकर्ता
Potential Stress Accounts:	संभाव्य दबावग्रस्त खाते
Proactive Monitoring:	सक्रिय अनुश्रवण
Project Appraisal:	परियोजना मूल्यांकन
Readjustment:	पुन:समायोजन
Realizable Assets:	वसूली-योग्य आस्तियां
Reassessment:	पुनर्निर्धारण, पुनराकलन
Recovery:	चुकौती
Red Flagging of Accounts:	संभावित धोखाधड़ी वाले खातों को चिह्नित करना
Regulatory Compliance:	नियामक अनुपालन
Renewal:	नवीकरण
Repayment:	चुकौती
Revaluation:	पुनर्मूल्यांकन
Revaluation:	पुनर्मूल्यांकन
Review Account:	समीक्षा खाता
Revitalization of Distressed Assets:	दबावग्रस्त आस्तियों का समाधान
Risk Management:	जोखिम प्रबंधन
Sale of Exposure:	एक्स्पोज़र विक्रय
Slippage:	गिरावट/स्लिपेज
Specialized Monitoring:	विशेषीकृत/विशिष्टीकृत अनुश्रवण
Spurt in Advances:	अग्रिमों में उछाल
Staff Accountability:	कर्मचारी उत्तरदायित्व/जवाबदेही
Stressed Assets:	दबावग्रस्त आस्तियां
Stressed Sector Exposure:	दबावग्रस्त क्षेत्र में एक्स्पोज़र
Techno-economic Viability:	तकनीकी-आर्थिक व्यवहार्यता
Wilful Defaulters:	इरादतन चूककर्ता

गौरव शर्मा
सीएमसीसी., कें.का., मुंबई

ग्राहक सेवा में प्रतिक्रिया बनाम प्रत्युत्तर

प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर का ग्राहक सेवा में महत्व समझने से पहले हमें इसके अर्थ को समझना होगा. प्रतिक्रिया और प्रत्युत्तर को हम क्रमश: अंग्रेजी के शब्द 'रिएक्ट' और 'रेस्पांड' का हिंदी प्रतिशब्द समझ सकते हैं. मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. समाज के लोगों के साथ पारस्परिक संपर्क व समन्वय के माध्यम से ही एक सार्थक जीवन जीने की कल्पना की जा सकती है. पारस्परिक संपर्क और समन्वय में भाषा की सबसे महत्वपूर्ण भूमिका होती है.

जब भी हम किसी व्यक्ति के साथ मौखिक या सांकेतिक भाषा के माध्यम से संपर्क करते हैं तो ऐसी स्थिति में हमें दो तरह की परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है. एक तो यह स्थिति होती है जिसमें किसी श्रोता के द्वारा वक्ता को तत्काल उत्तर दिया जाता है. इस तरह के उत्तर को हम प्रतिक्रिया की संज्ञा दे सकते हैं. अक्सर ऐसा होता है कि प्रतिक्रिया देने में व्यक्ति बहुत कम अथवा बिलकुल नहीं सोचता है. प्रतिक्रिया ठीक उसी तरह कार्य करती है जिस तरह मानव शरीर में रिफ्लेक्स क्रिया कार्य करती है. रिफ्लेक्स को अनैच्छिक या तात्कालिक क्रिया भी कहा जाता है. उदाहरण के लिए यदि हमारे हाथ पर उबलता हुआ पानी गिरे तो हाथ तुरंत प्रतिक्रिया स्वरूप बचने का प्रयास करता है. यदि शरीर के किसी अंग पर मच्छर काट रहा हो तो अनायास ही हमारे हाथ उस ओर बढ़ जाते हैं. वहीं यदि उबलते हुए पानी से हाथ क्षतिग्रस्त हो जाता है तो उसके बाद प्राथमिक उपचार या डॉक्टर से ठीक तरह से उपचार करवाना उस घटना विशेष का प्रत्युत्तर कहा जा सकता है. जिसमें हम अपने सोचने की शक्ति का प्रयोग करते हैं.

अक्सर हमें अपने दैनिक क्रियाकलापों में इस तरह की परिस्थितियों का सामना करना होता है जहां हम प्रतिक्रिया या प्रत्युत्तर का प्रयोग करते हैं. हाल ही के दिनों में बैंक में ग्राहक शिकायतों में कई गुना बढ़ोतरी हुई है. इसका सबसे बड़ा कारण यह हो सकता है कि हम ग्राहकों को प्रत्युत्तर के स्थान पर प्रतिक्रिया देते हों. उदाहरण के लिए, यदि कोई ग्राहक बैंकिग सेवा के लिए शाखा में आता है और हम उसकी बात को सुनते ही समस्या का समाधान न देकर उसे अगले दिन शाखा में आने के लिए कहते हैं तो निश्चय ही यह प्रतिक्रिया है. ऐसे ग्राहकों के द्वारा शिकायत की संभावना प्रबल होती है. वहीं यदि ग्राहक की बात सुनकर और समझकर जब हम ग्राहक की समस्या का समाधान देते हैं अथवा उस समस्या का समाधान तत्काल नहीं कर पाने का कारण बताते हैं तो निश्चय ही ग्राहक द्वारा किसी अन्य जगह शिकायत करने की संभावना कम होगी. ग्राहक और बैंक दोनों एक दूसरे की परिस्थिति को समझ सकेंगे और परिणामस्वरूप ग्राहक का बैंक के साथ बेहतर संबंध स्थापित हो सकेगा.

बैंकरों का स्थानांतरण कई बार ऐसी जगह पर हो जाता है जहाँ के लोगों की स्थानीय भाषा स्टाफ की भाषा से भिन्न होती है. ऐसे में स्टाफ के लिए यह आवश्यक है कि स्थानांतरण की प्रतिक्रिया स्वरूप ऐसा न करें कि हमें तो भाषा नहीं आती है तो हम कारोबार कैसे करेंगे बल्कि उन्हें स्थानीय भाषा सीखने का प्रयास करना चाहिए ताकि ग्राहकों को बेहतर सेवा प्रदान की जा सके. कई बार ऐसा देखा गया है कि बैंकरों को स्थानीय भाषा की जानकारी नहीं होने की प्रतिक्रिया स्वरूप ग्राहकों के रौद्र रूप का सामना करना पड़ता है. वहीं कई ऐसे भी बैंकर हैं जो इस परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया नहीं देते बल्कि प्रत्युत्तर स्वरूप स्थानीय भाषा को सीखते हैं और बैंक के कारोबार विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते हैं.

कभी कभी ऐसा हो सकता है कि किसी बैंकर को वर्षों से किसी एक तरह का कार्य करने की आदत है, वे नए प्रकार का कार्य करने से हिचकिचाते हैं. इसका कारण यह भी हो सकता है कि वे सुविधा क्षेत्र/कंफर्ट जोन में चले जाते हैं जहाँ वे स्वयं के कार्य में किसी भी तरह के परिवर्तन को आसानी से स्वीकार नहीं करना चाहते हैं. यहां अन्य जिम्मेदारी से बचने का प्रयास करना इस परिस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया देना है. यदि वह कर्मचारी इस स्थिति को नया अनुभव प्राप्त करना समझेगा तो वह प्रत्युत्तर होगा. ऐसे कर्मचारी बैंक के कारोबार वृद्धि में व्यापक योगदान देते हैं.

कार्यालयीन कार्यों में भी अक्सर ऐसी स्थिति का सामना होता है जिसमें व्यक्ति प्रतिक्रिया के स्थान पर प्रत्युत्तर देता है तो न केवल बड़े से बड़े लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है बल्कि आपसी भाईचारे का भाव भी बढ़ता है. उदाहरण के लिए कई बार कार्यालयों में उच्चाधिकारी के द्वारा बड़े लक्ष्य निर्धारित किए जाते हैं. बड़े लक्ष्य निर्धारित करने का मुख्य उद्देश्य आज के अत्यंत प्रतिस्पर्धी युग में बैंक की स्थिति को मजबूत बनाए रखना होता है. ऐसी स्थिति में लक्ष्य को देखकर घबराहट में यदि हम यह प्रतिक्रिया देते हैं कि हम इस लक्ष्य को पूरा नहीं कर पाएंगें तो निश्चय ही निराशा हाथ लगेगी. वहीं यदि हम लक्ष्य के प्रति सकारात्मक रूख अपनाते हैं और कार्यालय के सभी कर्मचारियों के साथ बैठकर लक्ष्य प्राप्ति के लिए योजना बनाते हैं तो निश्चय ही हमें सफलता मिलेगी. अभी हाल ही में मैंने एक शाखा निरीक्षण के दौरान पाया कि शाखा के द्वारा 'व्योम ऐप' के शत प्रतिशत लक्ष्य को पूरा किया गया था. मैंने इस लक्ष्य को प्राप्त करने के तरीके को जानने की इच्छा जाहिर की. मुझे बताया गया कि शाखा में आने वाले सभी ग्राहकों से शाखा के कर्मचारी द्वारा यह पता किया जाता था कि उन्होंने 'व्योम

ऐप' मोबाईल फोन में स्थापित किया है या नहीं. ऐसे ग्राहक जिन्होंने 'व्योम ऐप' का उपयोग पहले नहीं किया था उनके फोन में 'व्योम ऐप' स्थापित करवाया जाता था और उसके उपयोग के तरीके भी बताए जाते थे. यह कार्य शाखा के किसी एक कर्मचारी के द्वारा नहीं किया जाता था बल्कि सभी कर्मचारी इस कार्य को करने में नियमित रूप से योगदान देते थे. इससे न केवल लक्ष्य को आसानी से प्राप्त कर लिया गया बल्कि इससे शाखा को यह भी फायदा हुआ कि वैसे ग्राहक जो केवल खाते की शेष राशि जानने के लिए शाखा में आते थे अब यह काम वे अपने घर पर भी कर सकते हैं और बैंक जाने से बचने वाले समय का कहीं और सकारात्मक प्रयोग कर सकते है. बैंक के कर्मचारी को भी इससे यह फायदा होता है कि वे इस कार्य से बचने वाले समय का प्रयोग कहीं ऋण प्रस्ताव को तैयार करने या अन्य किसी महत्वपूर्ण कार्य को करने में लगा सकते हैं. ग्राहकों के साथ-साथ सहकर्मी के साथ भी दैनिक व्यवहार में प्रत्युत्तर का प्रयोग आपसी सहयोग के भाव को बढ़ाएगा और बैंक के कारोबार वृद्धि में सहायक होगा.

दैनिक जिंदगी में भी प्रतिक्रिया के बदले प्रत्युत्तर के प्रयोग से हम स्वयं के साथ साथ आसपास के लोगों के साथ गरिमापूर्ण जिंदगी जी सकते हैं. यह एक सार्वत्रिक गुण है जिसका प्रयोग जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में किया जा सकता है. हमें यह निर्णय करना है कि हमें समस्या का भाग बनना है या समस्या का समाधान ढूंढ़ना है. यदि हम समस्या के समाधान की तरफ अग्रसर होते हैं तो निश्चय ही हम प्रत्युत्तर ढूंढ़ने का प्रयास कर रहे हैं. यह एक प्रगतिशील विचार है जो आज के समय की मांग है.

वेद प्रकाश
क्षे. का., बेलगावी

राजभाषाई निरीक्षण

दिनांक 02.04.2024 को श्री कुमार पाल शर्मा, उप निदेशक, क्षे. का. का., उत्तर - 1 दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

24.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय एर्णाकुलम के राजभाषाई निरीक्षण के दौरान संबोधित करते हुए श्री हरीश सिंह चौहान, प्रभारी उप निदेशक(का.), क्षे. का. का., कोच्चि. मंचासीन है श्री टी एस श्याम सुंदर, उप महा प्रबंधक एवं क्षेत्र प्रमुख तथा श्री ए बालसुब्रमणियन, सहायक महा प्रबंधक एवं उप क्षेत्र प्रमुख.

दिनांक 15.05.2024 को आदरणीय डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का., उत्तरी क्षेत्र - 2, गाज़ियाबाद द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क

अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क भारत के वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र में एक महत्वपूर्ण कदम है इसके माध्यम से नागरिकों के वित्तीय डेटा को सुरक्षित तथा सहमति-आधारित तरीके से साझा किया जा सकता है. 2016 में भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) द्वारा स्थापित, यह फ्रेमवर्क व्यापक इंडिया स्टैक पहल का हिस्सा है, जिसका उद्देश्य एक सहज, डिजिटल-प्रथम वित्तीय बुनियादी ढांचा बनाना है. अकाउंट एग्रीगेटर आरबीआई द्वारा विनियमित गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियों (एनबीएफसी) की एक नई श्रेणी है. वे ऐसे मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं जो डेटा मालिक की स्पष्ट सहमति के साथ वित्तीय जानकारी प्रदाताओं (एफआईपी) से वित्तीय जानकारी उपयोगकर्ताओं (एफआईयू) को वित्तीय डेटा के सुरक्षित हस्तांतरण को सक्षम बनाते हैं. यह डिजिटल सहमति तंत्र सुनिश्चित करता है कि डेटा वास्तविक समय में और सुरक्षित तरीके से साझा करते समय उच्च स्तर की पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सके.

अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क के लाभ :-

उपभोक्ताओं को सशक्त बनाना : अकाउंट एग्रीगेटर्स व्यक्तियों को उनके वित्तीय डेटा पर नियंत्रण देकर सशक्त बनाते हैं. उपयोगकर्ता यह तय कर सकते हैं कि उनकी जानकारी तक किसकी और किस उद्देश्य के लिए पहुंच हो, जिससे डेटा की गोपनीयता और सुरक्षा सुनिश्चित हो सके. यह पारदर्शिता विश्वास का निर्माण करती है और उपभोक्ताओं को सूचित वित्तीय निर्णय लेने में सक्षम बनाती है.

वित्तीय समावेशन को बढ़ाना: अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क एमएसएमई, निम्न-आय समूहों और ग्रामीण आबादी जैसे कम सेवा प्राप्त वर्गों के लिए वित्तीय सेवाओं तक पहुंच को सरल बनाकर वित्तीय समावेशन की सुविधा प्रदान करता है. वित्तीय डेटा साझा करने के लिए एक सुव्यवस्थित डिजिटल तरीका प्रदान करके, अकांउट एग्रीगेटर इन समूहों को ऋण और अन्य वित्तीय सेवाओं तक आसानी से पहुंचने में मदद करते हैं.

कुशलता में सुधार और लागत में कमी : अकांउट एग्रीगेटर भौतिक दस्तावेज़ और मैनुअल सत्यापन की आवश्यकता को कम करते हैं, वित्तीय संस्थानों के लिए प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करते हैं. यह दक्षता परिचालन लागत को कम करती है, त्रुटियों को कम करती है, और सेवाओं के प्रावधान को गति देती है, जिससे वित्तीय संस्थान अधिक प्रतिस्पर्धी और ग्राहक की आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी बनते हैं.

धोखाधड़ी को कम करना और सुरक्षा बढ़ाना : स्पष्ट सहमति के साथ सुरक्षित, वास्तविक समय डेटा साझाकरण को सक्षम करके, अकाउंट एग्रीगेटर धोखाधड़ी के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं.

आर्थिक विकास का समर्थन करना : अकाउंट एग्रीगेटर द्वारा प्राप्त सुविधा के आधार पर ऋण और वित्तीय सेवाओं तक बढ़ी हुई पहुंच आर्थिक विकास को बढ़ावा दे सकती है. व्यक्तियों और व्यवसायों के लिए वित्तीय सहायता प्राप्त करना आसान बनाकर, अकाउंट एग्रीगेटर उद्यमिता,

व्यवसाय विस्तार और समग्र आर्थिक विकास का समर्थन करते हैं.

वित्तीय सेवाओं में नवाचार को प्रोत्साहित करना : एग्रीगेटर फ्रेमवर्क वित्तीय संस्थानों को सटीक और व्यापक डेटा प्रदान करके नवाचार को प्रोत्साहित करता है. यह पहुंच उपभोक्ता की जरूरतों के अनुरूप नए वित्तीय उत्पादों और सेवाओं के विकास को सक्षम बनाता है.

सूचना विषमता को कम करना : एग्रीगेटर फ्रेमवर्क वित्तीय संस्थानों और उपभोक्ताओं के बीच सटीक और व्यापक वित्तीय डेटा प्रदान करके सूचना विषमता को कम करता है. यह पारदर्शिता, बेहतर जोखिम मूल्यांकन और निर्णय लेने में वित्तीय संस्थानों की मदद करती है.

भविष्य की संभावनाएं और विस्तार क्षमता : जैसे-जैसे एग्रीगेटर पारिस्थितिकी तंत्र का उपयोग बढ़ेगा यह भारत के वित्तीय परिदृश्य को महत्वपूर्ण रूप से बदलने में सक्षम होगा. अधिक वित्तीय संस्थानों और सरकारी डेटाबेस के नेटवर्क में शामिल होने के साथ, प्रणाली की विस्तार क्षमता वित्तीय समावेशन और आर्थिक विकास पर इसके प्रभाव को बढ़ाएगी. भारत में अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क देश के डिजिटल बुनियादी ढांचे का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसका उद्देश्य वित्तीय संस्थानों के बीच सुरक्षित, सहमति-आधारित डेटा साझाकरण की सुविधा प्रदान करना है.

- अकांउट एग्रीगेटर पारिस्थितिकी तंत्र का प्रयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जा रहा है यथा बैंकिंग, प्रतिभूति, बाजार, बीमा, पेंशन आदि.

- एग्रीगेटर के माध्यम से डेटा साझाकरण की क्षमता विशाल है. सहमती के विश्लेषण के आधार पर अनुमान लगाया जा रहा है कि 2025 तक एग्रीगेटर के माध्यम से बैंक खाता विवरण के वार्षिक लेनदेन की मात्रा 1 बिलियन और 2027 तक 5 बिलियन तक पहुँचेगी.

- 2027 तक, बैंक खाता विवरण के तहत लेखन और निगरानी उपयोग मामलों के लिए बैंकों और एनबीएफसी के लिए कुल डेटा लेनदेन का 58% हिस्सा होगा, जबकि प्रतिभूति बाजार 41% का योगदान देगा.

अकाउंट एग्रीगेटर पारिस्थितिकी तंत्र के प्रारंभिक उपयोगकर्ताओं ने महत्वपूर्ण लाभों की रिपोर्ट की है, जिनमें उच्च रूपांतरण दर, शून्य धोखाधड़ी दर, कम परिचालन लागत और कम डिफ़ॉल्ट दरें शामिल हैं. इन लाभों ने अनुकूलित यात्रा और बेहतर लाभप्रदता की दिशा में योगदान दिया है. तथापि, निम्नलिखित के प्रति ध्यान देना आवश्यक है :-

- जागरूकता बढ़ाना: अकाउंट एग्रीगेटर प्रणाली के लाभों और सुरक्षा के बारे में उपभोक्ता शिक्षा आवश्यक है.

- भागीदारी का विस्तार: अधिक वित्तीय संस्थानों और सरकारी निकायों को पारिस्थितिकी तंत्र में शामिल होने की आवश्यकता है.

- डेटा शासन को बढ़ाना: उपयोगकर्ता विश्वास बनाने के लिए डेटा गोपनीयता और सुरक्षा के उच्च मानकों को बनाए रखना होगा.

उपसंहार: - हालांकि अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क, अभी अपने प्रारंभिक चरण में है. यह भारत के वित्तीय क्षेत्र में डेटा साझाकरण में क्रांति लाने की क्षमता रखता है. यह सुरक्षित, सहमति-आधारित डेटा साझाकरण के लिए एक निर्णायक मंच बनने की दिशा में अग्रसर है, यह सुनिश्चित करते हुए कि प्रामाणिक वित्तीय जानकारी केवल डेटा मालिक की स्पष्ट सहमति के साथ उपलब्ध हो. वर्तमान में, अकाउंट एग्रीगेटर पारिस्थितिकी तंत्र तेजी से विकसित हो रहा है, जिसमें बैंकों, एनबीएफसी और अन्य वित्तीय संस्थानों की बढ़ती भागीदारी शामिल है. प्रारंभिक उपयोगकर्ताओं ने पहले से ही धोखाधड़ी में कमी, परिचालन लागत में कमी और दक्षता में सुधार जैसे महत्वपूर्ण लाभों की रिपोर्ट की है. ये प्रारंभिक सफलताएं इस प्रणाली की व्यापक संभावनाओं को इंगित करती हैं, जिससे वित्तीय सेवाओं को और अधिक सुलभ और कुशल बनाया जा सकता है.

लंबी अवधि में, एग्रीगेटर फ्रेमवर्क, डेटा साझाकरण के लिए एक मजबूत, स्केलेबल और सुरक्षित विधि प्रदान करके वित्तीय परिदृश्य को बदलने के लिए तैयार है. यह उपभोक्ताओं को सशक्त बनाएगा, वित्तीय समावेशन का समर्थन करेगा, और वित्तीय सेवाओं तक सहज पहुंच को सक्षम करके आर्थिक विकास को बढ़ावा देगा. नीति निर्माताओं, नियामकों और उद्योग प्रतिभागियों के निरंतर समर्थन के साथ, अकाउंट एग्रीगेटर फ्रेमवर्क नई संभावनाओं को खोलेगा और इसमें शामिल सभी हितधारकों के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करेगा.

यह फ्रेमवर्क एक ऐसे दृष्टिकोण को मूर्त रूप देता है जहां डेटा पारदर्शी और सुरक्षित रूप से साझा किया जाता है, और डेटा मालिक पूर्ण नियंत्रण बनाए रखता है. जैसे-जैसे यह परिपक्व होगा, अकाउंट एग्रीगेटर प्रणाली भारत की डिजिटल अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी और यह सुनिश्चित करेगी कि डेटा-संचालित नवाचार नैतिक और सभी के लिए लाभकारी हो. अकाउंट एग्रीगेटर्स का भविष्य उज्ज्वल है, जो एक अधिक समावेशी, कुशल और सुरक्षित वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र का वादा करता है, और देश के लिए उम्मीदों के रास्ते खोलता है.

नेहा गौर
यू.एल.ए, पवई

बैंकिंग में प्रतिभा प्रबंधन

फिनटेक से प्रतिस्पर्धा और उसके परिणामस्वरूप बैंकिंग क्षेत्र में बदलती प्रतिभा प्राथमिकताएं एक बड़ी चुनौती पेश कर रही हैं. बैंकिंग उद्योग में डिजिटल प्रौद्योगिकियों का विकास अभूतपूर्व रहा है. आरबीआई के आंकड़ों के अनुसार बैंकिंग और डिजिटल सेवाओं की पहुंच में काफी वृद्धि हुई है. वास्तव में, सर्वाधिक वैश्विक बैंक शाखाओं की सूची में चीन के बाद भारत सूची में शीर्ष पर है.

प्रौद्योगिकी आधारित डिजिटल विघटन (टेकनॉलोजी बेस्ड डिजिटल डिसरप्शन) नए अवसर पैदा करता है, तथापि यह नई चुनौतियाँ भी पैदा करता है. बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्र को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है - जैसे नियामक परिदृश्य, ग्राहकों की बदलती प्राथमिकताएँ, हितधारकों की बदलती अपेक्षाएँ,और सुरक्षित एवं गोपनीयता अनुरूप सेवाएँ प्रदान करना. जैसे-जैसे क्षेत्र बदलती प्रौद्योगिकियों और बुद्धिमत्ता स्वचालन के साथ खुद को जोड़ रहा है,प्रतिभा प्रबंधन अधिक चुनौतीपूर्ण हो गया है.

प्रतिभा को, एक आंतरिक गुण के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जो सहजता से उभरता है. प्रतिभा की पहचान और विकास में पर्यावरण भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है. उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण युग के आगमन के साथ, वर्तमान मानव संसाधन विकास दृष्टिकोण में एक आदर्श बदलाव आया है. यह बदलाव इस विश्वास के कारण आया है कि मानव संसाधन मात्र अपनी नौकरी की जिम्मेदारियों को पूरा करने वाले कर्मचारी ही नहीं बल्कि प्रतिस्पर्धात्मक लाभ के स्रोत हैं. प्रतिस्पर्धा करने और अपनी स्थिति को मजबूत बनाने के लिए, प्रत्येक संगठन को नवीनतम तकनीक अपनानी होगी, सर्वोत्तम प्रतिभा को नियुक्त करना होगा, ग्राहकों और कर्मचारियों दोनों को बनाए रखने के लिए किफायती कीमतों पर उत्पाद और सेवाओं के मामले में सर्वोत्तम गुणवत्ता प्रदान करनी होगी.

प्रतिभा प्रबंधन की परिभाषा

प्रतिभा प्रबंधन को कर्मचारी आयोजना, भर्ती, विकास, प्रबंधन और क्षतिपूर्ति की लक्ष्य उन्मुख और एकीकृत प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जा सकता है.

प्रतिभा प्रबंधन को निम्नलिखित तीन मुख्य दृष्टिकोणों के माध्यम से बेहतर ढंग से वर्णित किया जा सकता है:

पहले परिप्रेक्ष्य में, प्रतिभा प्रबंधन को कार्यों और प्रथाओं के एक समूह के रूप में माना जाता है, जो आम तौर पर मानव संसाधन प्रबंधन के कार्य और अभ्यास हैं.

दूसरे परिप्रेक्ष्य में, प्रतिभा प्रबंधन को मानव संसाधन आयोजना और कर्मचारी आवश्यकताओं को प्रस्तुत करने के संदर्भ में परिभाषित किया गया है.

तीसरे परिप्रेक्ष्य में, प्रतिभा प्रबंधन को एक सामान्य इकाई के रूप में माना जाता है, जिसके अंतर्गत उच्च प्रदर्शन और उच्च क्षमता या सामान्य रूप से प्रतिभा पर ध्यान केंद्रित किया जाता है.

प्रतिभा प्रबंधन की चुनौतियाँ

उभरते बैंकिंग परिदृश्य के संदर्भ में प्रतिभा प्रबंधन की कई चुनौतियाँ हैं. डिजिटल कार्यबल को पुन: प्रशिक्षित करना और बनाए रखना इस क्षेत्र के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक है. जब निरंतर परिवर्तन और व्यवधान हो रहा हो तब ऐसे समय में व्यवसाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए प्रतिभा को फिर से प्रशिक्षित करने की आवश्यकता होती है. विशिष्ट डिजिटल कौशल की आवश्यकता कौशल की मांग को बदल रही है, ऐसी गुणवत्ता वाली डिजिटल प्रतिभा को भर्ती करना और बनाए रखना भी एक चुनौती है. एक बार जब बैंक कुशल कर्मचारियों की पहचान कर लेते हैं, और/या अपने कार्यबल को फिर से प्रशिक्षित कर लेते हैं, तो इस प्रतिभा को बनाए रखना मुख्य चुनौती बन जाता है. चुनौती तकनीकी रूप से कुशल लोगों के सही मिश्रण को भर्ती करने, उन्हें व्यवसाय में एकीकृत करने और उन्हें बनाए रखने के लिए पर्याप्त रूप से व्यस्त रखने की क्षमता है. प्रतिभा के बाज़ार में सफल होने के लिए, बैंकों को प्रतिभा पहचानने और पुन: कौशल प्रदान करने में बेहतर होने के साथ-साथ निरंतर सीखने की एक संगठनात्मक संस्कृति बनाने की भी आवश्यकता होगी.

बैंकों को एक कार्यस्थल संस्कृति को सक्षम करने के अलावा सांस्कृतिक विविधता के मुद्दे के प्रबंधन पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होगी . वित्तीय सेवा क्षेत्र में इतनी अस्थिरता के साथ, वर्तमान कार्यबल को बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार की शिक्षा और विकास की आवश्यकता होगी. बैंकों को चुनौतियों का सामना करते हुए बने रहने के लिए एक तरफ क्लाउड कंप्यूटिंग, एआई और डिजिटल मार्केटिंग की आवश्यकता है और दूसरी तरफ, उनके पास बड़ी संख्या में कार्यबल भी है जिन्हें पुन: प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है.

शिक्षण कार्यक्रम इन नई क्षमताओं को विकसित करने में मदद कर सकते हैं. साथ

ही, अन्य बैंकों, बीमा कंपनियों और वित्तीय प्रौद्योगिकी फर्मों के साथ प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए कर्मचारी जुड़ाव को मजबूत करना भी महत्वपूर्ण है. वित्तीय सेवाओं द्वारा अलग-अलग पीढ़ियों के लिए अलग-अलग प्रतिभा प्रबंधन कार्यक्रमों का आयोजन करना होगा. बैंक कर्मचारी और व्यक्तिगत वित्तीय सलाहकारों तथा ग्राहकों के संवाद के क्षेत्र में प्रौद्योगिकी क्रांतिकारी बदलाव ला रही है. साथ कैसे बातचीत करते हैं. बातचीत के प्रौद्योगिकी संचालित तरीके, जैसे नई स्व-सेवा, एआई आधारित सलाह आदि ग्राहकों द्वारा मांगी जाने वाली विशिष्ट मूल्यवर्धित सेवाएँ प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं.

प्रशिक्षण कार्यक्रम अधिक रुचि पैदा करते हैं. हालांकि, एआई और अन्य उभरती प्रौद्योगिकियों के आगमन पर विभिन्न पीढ़ियों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं. मिलेनियल्स एआई को लेकर सबसे अधिक उत्साहित हैं, इसके बाद के क्रम में जेनरेशन जेड, जेनरेशन एक्स और बेबी बूमर्स हैं.

आगे बढ़ने की मानसिकता एक आवश्यक गुण है. अन्वेषण की प्रवृत्ति, जो उन्हें रुचि के नए क्षेत्रों की खोज, वर्तमान की सीमाओं को तोड़ने और अपने संगठन, ग्राहकों और टीमों के लिए नए अवसरों की खोज करने के लिए प्रेरित करेगी. बदलती प्रौद्योगिकियों, विकसित होती प्रक्रियाओं, जिम्मेदारियों को बदलने और महारथ हासिल करने के लिए कौशल के एक नए भंडार के साथ अनुकूलन करने की क्षमता आवश्यक है.

संक्षेप में, यह कहा जा सकता है कि नियुक्ति से लेकर सेवानिवृत्त होने तक, प्रबंधन कार्यक्रम कर्मचारी जुड़ाव, प्रदर्शन प्रबंधन, कर्मचारियों को संगठन और विविधता से जोड़ने और इस प्रकार बैंकिंग क्षेत्र के विशिष्ट संदर्भ के साथ संगठनात्मक वृद्धि और विकास करने जैसी व्यापक चिंताओं को संबोधित करने के लिए महत्वपूर्ण है. प्रौद्योगिकी और तेजी से बदलते रुझान, कार्यबल को नया आकार देना, प्रदर्शन का दबाव और अच्छा प्रदर्शन करने वालों को बनाए रखने की चुनौती, हितधारकों की लगातार बढ़ती अपेक्षाएं, नियम और निश्चित रूप से, तीव्र प्रतिस्पर्धा इसके चालक हैं. सफल प्रतिभा प्रबंधन का एक प्रमुख तत्व ज्ञानर्जन और विकास है. जो बैंक ज्ञानर्जन और विकास की पहल को अपनाता है, उसे समर्पित कार्यबल का पुरस्कार मिलता है. औपचारिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से लेकर अनौपचारिक परामर्श योजनाओं तक, यह जरूरी है कि प्रत्येक कर्मचारी पहल में सक्रिय भागीदार हो. ज्ञानर्जन और विकास कार्यक्रम की रूपरेखा इस प्रकार बनाई जाए कि इससे तैयार नेता बदले में विकास और ज्ञानर्जन को प्रोत्साहित करें और प्रतिस्पर्धात्मक बढ़त हासिल करने में मदद करें.

नवनीत प्रकाश सिन्हा
जेड.एल.सी., भुवनेश्वर

मेहनत सच्चा साथी

सपनों की राह पर चलो, मेहनत को साथी बनाओ,
हर मुश्किल को पार करो, न रुकने का संकल्प दिखाओ।

मेहनत से ही मिलता है, हर सपना जो देखो तुम,
सच्ची लगन से चलो, सपनों को साकार करो तुम।

कड़ी मेहनत का फल सदा, मीठा ही होता है,
जो सपने हो अनदेखे, उन्हें भी पूरा करता है।

विश्वास रखो खुद पर, और बढ़ते चलो हर दिन,
सपनों की ऊंचाई को, मेहनत से छू लेना एक दीन।

रात की तन्हाई में, जब सब सो जाते हो,
जाग कर अपने सपनों को, तुम नए पंख लगाते हो।

समर्पण और धैर्य से, राहें बनतीं आसान,
मेहनत की रोशनी में, दिखती सफलता की पहचान।

हर कदम जो बढ़ाओगे, विश्वास के साथ आगे,
सपनों को पूरा करने में, न रोक सकेगा कोई तुम्हे।

सपनों की इस राह पर, महेनत का साथी बन कर चलो,
हर मुश्किल को पार कर, जीत की और बढ़ते चलो।

सपनों की दुनिया में, मेहनत ही सबसे नायाब है,
जो उसे साकार करता है, वही असली कामयाब है।

सपनों की राह पर चलो, मेहनत को साथी बनाओ,
हर मुश्किल को पार करो, न रुकने का संकल्प दिखाओ।

चिराग राठवा
नसवाड़ी शाखा, क्षे.का., - बड़ौदा

महिला सम्मान बचत पत्र योजना

इस बात में कोई दो राय नहीं है कि "भारतीय नारी, भारतीय समाज का आधार-स्तम्भ है". तथापि बैंकिंग सेवाओं तक इनकी पहुँच अपेक्षाकृत कम है. इसके बड़े कारणों में आर्थिक और लैंगिक असमानता और संसाधनों का असमान वितरण है. इसे भी एक कारण ही गिना जाएगा कि भारतीय महिलाएं ख़ुद को प्राथमिकता नहीं देती हैं. भारत सरकार की राष्ट्रीय लघु बचत योजना के अंतर्गत महिला सम्मान बचतपत्र, 2023 योजना की घोषणा वित्तीय वर्ष 2023-24 के बजट भाषण में की गई.

महिला सम्मान बचतपत्र, 2023 योजना क्या है:

महिला सम्मान बचतपत्र, 2023 महिलाओं पर केन्द्रित एक लघु बचत योजना है जिसका उद्देश्य महिलाओं में बचत की प्रवृत्ति को बढ़ावा देना है. यह योजना 31 मार्च 2023 को भारत सरकार की राष्ट्रीय लघु बचत योजना के अंतर्गत् प्रारंभ हुई एवं डाकघरों में 1 अप्रैल 2023 से इसका संचालन आरंभ हुआ. इसकी बढ़ती हुई लोकप्रियता को देखते हुए वित्त मंत्रालय ने 27 जून 2023 से सभी सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों तथा आईसीआईसीआई बैंक, एक्सिस बैंक, एचडीएफ़सी बैंक और आईडीबीआई बैंक को इस योजना के संचालन के लिए अधिकृत किया.

पात्रता:

- महिला सम्मान बचतपत्र योजना के अंतर्गत किसी भी निवासी भारतीय महिला द्वारा स्वयं के लिए अथवा अवयस्क लड़की की ओर से संरक्षक द्वारा 31 मार्च 2025 तक खाता खुलवाया जा सकता है.
- इस योजना के अंतर्गत केवल एकल धारक प्रकार के खाते खोले जा सकते हैं.

जमा राशि एवं खाते:

- महिला सम्मान बचतपत्र खाते न्यूनतम ₹1000/- और ₹100/- के गुणकों में अधिकतम ₹200000/- तक की राशि के साथ खोले जा सकते हैं.
- एक खाताधारक, उपरोक्त जमा की अधिकतम राशि तक एकाधिक खाते खोल सकती है, वर्तमान खाता और दूसरे खाते के बीच 3 माह का अंतर होना चाहिए. ऐसे सभी खातों में जमा राशि का कुल योग ₹200000/- से अधिक नहीं होना चाहिए.
- एक खाते में एक ही जमा की अनुमति है.

ब्याज:

- वित्त मंत्रालय की अधिसूचना के अनुसार महिला सम्मान बचतपत्र में जमा राशि पर ब्याज का संयोजन त्रैमासिक आधार पर 7.50% प्रति वर्ष की दर से होगा तथा खाते में जमा होगा.
- उक्त ब्याज खाता बंद करने अथवा खाते से आंशिक निकासी करने पर मिलेगा.
- खाता खोलने की तिथि से छः माह बाद परिपक्वता पूर्व खाता बंद करने पर देय ब्याज, योजना की ब्याज दर से 2% प्रति वर्ष कम पर मिलेगा.

आंशिक निकासी: खाते से एक बार आंशिक निकासी की सुविधा भी उपलब्ध है, जो खाता खोलने की तिथि से एक वर्ष की समाप्ति के पश्चात, शेष राशि के अधिकतम 40% तक की जा सकती है.

परिपक्वता: इस योजना के अंतर्गत खोले गए खाते में जमाराशि, खाता खोलने की तिथि से दो (2) वर्ष पूर्ण होने पर परिपक्व हो जाएगी.

परिपक्वता-पूर्व खाता बंद करना: इस योजना के अंतर्गत खोले गए खाते को निम्नलिखित कारणों के आधार पर परिपक्वता पूर्व किसी भी समय बिना किसी शुल्क के बंद किया जा सकता है, यथा:

- खाताधारक की मृत्यु पर
- अत्यधिक अनुकंपा जैसे खाताधारक की प्राणघातक बीमारी की चिकित्सा सहायता या संरक्षक की मृत्यु के आधार पर, जहां खाते को जारी रखने में खाताधारक को कठिनाई हो रही हो.

• उपरोक्त कारणों के अलावा, खाता खोलने की तिथि से छः माह के पश्चात अन्य कारणों से परिपक्वता पूर्व बंद किए गए खाते पर देय ब्याज, योजना पर समय-समय पर लागू ब्याज दर से 2% कम होगा.

महिला सम्मान बचतपत्र योजना और सार्वजनिक बैंक: सरकार यदि आर्थिक नीति-नियंता है तो सार्वजनिक बैंक इसके वाहक हैं. सार्वजनिक बैंकों की सर्वव्यापी पहुँच और इसके कार्यबल की कुशलता को देखते हुए सरकार ने इस योजना के सफल कार्यान्वयन के लिए बैंकों को महिला सम्मान बचतपत्र के संचालन के लिए अधिकृत किया है. बैंक भी इस अति महत्वपूर्ण दायित्व को सम्पूर्ण समर्पण के साथ निभा रहे हैं और यही कारण है कि एक वर्ष के समय में ही यह योजना बेहद लोकप्रिय हुई है.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया में महिला सम्मान बचतपत्र योजना: यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, विभिन्न सरकारी लघु बचत योजनाओं के अंतर्गत खाते खोलने एवं उनके परिचालन में सदैव अग्रणी रहा है. यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि महिला सम्मान बचतपत्र खाते खोलने में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, सभी बैंकों में न केवल पहला बल्कि अग्रणी बैंक भी है.

27 जून 2023 को भारत सरकार द्वारा महिला सम्मान बचतपत्र खोलने के लिए अधिकृत होने के पश्चात बैंक ने 30 जून 2023 को पहला महिला सम्मान बचतपत्र खाता खोल लिया था. मार्च 2024 के अंत तक हमारे बैंक में कुल जमाराशि रु. 9,85,01,57,201/- के साथ 120214 महिला सम्मान बचतपत्र खाते खोले गए. इस उपलब्धि को संभव बनाने के लिए बैंक के सूचना प्रौद्योगिकी विभाग (डीआईटी) और वित्त एवं लेखा विभाग के हमारे साथी विशेष प्रशंसा एवं बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने कम समय में योजना को सफलतापूर्वक लागू करने एवं इसके कार्यान्वयन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई. बैंक में महिला सम्मान बचतपत्र को अतिशीघ्र लागू करने के लिए फ़िनेकल में प्रावधान किया गया. तथापि, बेहतर कार्यान्वयन और प्रबंधन के लिए इस योजना को शीघ्र ही बाकी सभी लघु बचत योजनाओं की तरह सरकारी कारोबार के अंतर्गत लागू किया जाएगा. धनतोली शाखा, नागपुर इस योजना के लिए नोडल शाखा है.

महिला सम्मान बचतपत्र और महिला सशक्तिकरण: महिला सम्मान बचतपत्र योजना को यदि इसके पीछे की सोच के साथ और समग्रता में लागू किया जाए तो महिला सशक्तिकरण में यह योजना मील का पत्थर साबित हो सकती है. महिला सशक्तिकरण पर किए गए विभिन्न अध्ययनों में पाया गया है कि महिलाओं की वित्तीय आज़ादी का सीधा संबंध उनके सशक्तिकरण से है.

सरकार द्वारा प्रायोजित होने के कारण यह एक सुरक्षित और सरल निवेश योजना है जो ऐसी महिलाओं के लिए किसी वरदान से कम नहीं है जिनके पास नियमित आय का कोई साधन नहीं है. उनकी बचत का जो हिस्सा छोटी-छोटी जरूरतों में खप जाता है, उन्हें इस योजना के अंतर्गत खाते में जमा कर महिलाएं न केवल बचत की ओर प्रवृत्त होंगी बल्कि अपनी आर्थिक स्थिति भी सुदृढ़ कर सकेंगी. यह सर्वविदित है कि महिलाएं अपने बच्चों की शिक्षा, स्वास्थ्य और पोषण को प्राथमिकता देती हैं, अतः महिलाओं के हाथ में पूंजी आने से न केवल उनकी क्रय-शक्ति बढ़ेगी अपितु इसका दूरगामी प्रभाव परिवार और समाज के कल्याण पर पड़ेगा. आर्थिक स्वतन्त्रता और निर्णायक शक्ति न केवल महिला सशक्तिकरण बल्कि लैंगिक समानता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है. "एक सशक्त महिला, एक सशक्त समाज और राष्ट्र का निर्माण करती है."

महिला सम्मान बचतपत्र - आगे की राह: महिलाओं का वित्तीय समावेशन और आर्थिक सशक्तिकरण विकास के आधार स्तम्भ हैं. महिलाओं की बढ़ती आर्थिक भागीदारी, संयुक्त राष्ट्र के अन्य संवहनीय विकास लक्ष्यों यथा, गरीबी उन्मूलन, खाद्य अभाव दूर करना, असमानता ख़त्म करना, सार्वजनिक स्वास्थ्य, सार्वजनिक शिक्षा, सम्मानजनक आर्थिक विकास आदि की इसकी नियत तिथि, 2030, तक प्राप्ति के लिए बेहद अहम है. महिला सम्मान बचतपत्र, भारत सरकार द्वारा इस क्षेत्र में किए जाने वाले प्रयासों की शृंखला की एक कड़ी है. यद्यपि यह योजना महिलाओं तक बैंकिंग सुविधाओं की पहुँच को बढ़ाएगा, तथापि अभी इसमें और अधिक सुधारों की आवश्यकता है. इस योजना को वर्तमान में केवल 31 मार्च 2025 तक के लिए ही लाया गया है. उम्मीद है कि अन्य राष्ट्रीय लघु बचत योजनाओं की तरह इसे भी नियमित किया जाएगा और 31 मार्च 2025 तक की समय-सीमा खत्म कर दी जाएगी. इसमें निवेश की सीमा को भी वर्तमान के 2 लाख से बढ़ा कर कम से कम 10 लाख तक करने की आवश्यकता है ताकि महिलाएं अधिक से अधिक बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति सुधार सकें. ऐसा करने से महिला उद्यमिता को भी बढ़ावा मिलेगा क्योंकि अपने उद्यमों में निवेश करने के लिए अब उनके पास अधिक पूंजी होगी. योजना के नियमों में परिवर्तन करते हुए नए उद्यम लगाने और नई योग्यता हासिल करने हेतु परिपक्वता पूर्व खाताबंदी अनुमत करना हो सकता है.

उपसंहार: भारत जैसे देश में, जहां लैंगिक और आर्थिक समानता के मोर्चे पर अभी बहुत कुछ करना शेष है, महिला सम्मान बचतपत्र योजना एक विशिष्ट पहल है. यह योजना अपने लक्ष्यों को पाने में कितनी सफल होती है यह तो समय के गर्भ में है परंतु इसके लिए एक ईमानदार प्रयास अवश्य ही किया जाना चाहिए. इसके लिए सभी हितधारकों यथा सरकार, बैंक, समाज और स्वयं महिलाओं को अपनी अपनी भूमिकाएँ सम्पूर्ण समर्पण के साथ निभानी होंगी. हमें पूरा विश्वास है कि "हम होंगे कामयाब."

कुमार अमितेष
सरकारी कारोबार एवं
संपर्क विभाग
कें.का., अनेक्स,
नई दिल्ली

रूपे क्रेडिट कार्ड: लिंक इट एवं फरगेट इट

यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस (यूपीआई) ने डिजिटल भुगतान को काफी आसान बना दिया है. यूपीआई से आप तुरंत एक दूसरे के खाते में पैसे भेज पाते हैं. अब क्रेडिट कार्ड से भी यूपीआई की सुविधा को शुरू किया गया है, जो वर्तमान में केवल रूपे क्रेडिट कार्ड ग्राहकों के लिए उपलब्ध है. अगर आपके पास रूपे क्रेडिट कार्ड है तो आप किसी भी यूपीआई समर्थक ऐप में अपने क्रेडिट कार्ड को लिंक कर सीधा क्रेडिट कार्ड से यूपीआई भुगतान कर सकते हैं.

यूपीआई से आप क्या समझते हैं - यूपीआई (एकीकृत भुगतान इंटरफ़ेस / यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) भारतीय राष्ट्रीय भुगतान निगम (एनपीसीआई) द्वारा विकसित एक त्वरित तत्काल भुगतान प्रणाली है. यूपीआई पी2पी (पीयर टू पीयर), पी2एम (व्यक्ति से व्यापारी) और पी2पीएम (छोटे व्यापारियों और असंगठित खुदरा क्षेत्र के लिए) लेनदेन की सुविधा प्रदान करता है. उपयोगकर्ता अपनी मोबाइल ऐप से बैंक खातों के बीच तुरंत अंतरण कर सकते हैं. यह ज्यादा सुविधाजनक है. उपयोगकर्ता बैंक विवरण साझा किए बिना 24/7 लेनदेन कर सकता है.

क्रेडिट कार्ड क्या है - दूसरी ओर, पारंपरिक क्रेडिट कार्ड उपयोगकर्ता को क्रेडिट की एक चेन मुहैया कराते हैं, जिससे उन्हें खरीददारी करने और बाद में भुगतान करने के लिए जारी करने वाले बैंक से पैसे लोन लेने की अनुमति मिलती है. क्रेडिट कार्ड में रिवॉर्ड पॉइंट, कैशबैक और इंटरेस्ट-फ्री टेन्योर जैसी कई तरह की सुविधाएं मिलती हैं, जिससे वे कई लोगों के लिए पसंदीदा भुगतान विकल्प बन जाते हैं. रूपे क्रेडिट कार्ड को अब यूपीआई आईडी से जोड़ा जा सकता है, जिससे सीधे तौर पर सुरक्षित भुगतान, लेनदेन संभव हो सका है.

यूपीआई क्रेडिट कार्ड एक विशिष्ट भुगतान उपाय है जो दो लोकप्रिय भुगतान प्रणाली - यूपीआई और क्रेडिट कार्ड की सुविधाओं को जोड़ता है. यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस क्रेडिट कार्ड डिजिटल भुगतान परिप्रेक्ष्य में क्रांतिकारी बदलाव के रूप में उभरे हैं, जो क्रेडिट कार्ड की ताकत के साथ यूपीआई ट्रांजैक्शन की सुविधा को आसानी से जोड़ते हैं. इस हाइब्रिड भुगतान सिस्टम ने अपनी सरलता, सेक्योरिटी और कांप्रीहेंसिव एक्सेप्टेंस के कारण पॉपुलरिटी हासिल की है.

यूपीआई पर रूपे क्रेडिट कार्ड ग्राहकों के लिए एक सहज, डिजिटल रूप से सक्षम क्रेडिट कार्ड जीवनचक्र अनुभव प्रदान करता है. ग्राहकों को अपने क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने में आसानी हो रही है और वे नए अवसरों का लाभ उठा रहे हैं. एसेट लाइट क्यूआर कोड का उपयोग करके क्रेडिट कार्ड की स्वीकृति के साथ ऋण पारिस्थितिकी तंत्र का हिस्सा बनकर खपत में वृद्धि से व्यापारियों को लाभ पहुंच रहा है.

वर्तमान में, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया सहित 16 बैंक में रूपे क्रेडिट कार्ड को यूपीआई से लिंक करने की सुविधा सक्रिय है. व्योम सहित अधिकांश भुगतान ऐप क्रेडिट कार्ड को यूपीआई से जोड़ने के लिए अनुकूल हैं.

आइए जानते हैं यूपीआई क्रेडिट कार्ड के लाभ

1. तत्काल लेनदेन: यूपीआई क्रेडिट कार्ड बिना किसी रुकावट के तेज ट्रांजैक्शन सुनिश्चित करते हुए तत्काल भुगतान करता है.

2. उन्नत सुरक्षा: यूपीआई के टू-फैक्टर वेरीफिकेशन और क्रेडिट कार्ड की एडिशनल सेक्योरिटी लेयर्स के साथ, यूपीआई क्रेडिट कार्ड फ्रॉड के खिलाफ मजबूत सेक्योरिटी प्रदान करता है.

3. एकल भुगतान इंटरफ़ेस: उपयोगकर्ता भुगतान प्रक्रिया को सुव्यवस्थित करते हुए एक इंटीग्रेटेड ऐप या प्लेटफ़ॉर्म में यूपीआई और क्रेडिट कार्ड ट्रांजैक्शन दोनों को मैनेज कर सकते हैं.

4. कैशबैक और रिवॉर्ड: पारंपरिक क्रेडिट कार्ड की तरह, यूपीआई क्रेडिट कार्ड अक्सर रिवॉर्ड और कैशबैक ऑफ़र के साथ आते हैं, भले ही वो कितने भी अमाउंट का भुगतान करें, जिससे उपयोगकर्ता के लिए लेनदेन ज्यादा आकर्षक हो जाता है.

5. वित्तीय विकल्पों में बढ़ोतरी: यूपीआई क्रेडिट कार्ड उपयोगकर्ता को यूपीआई और क्रेडिट कार्ड दोनों सुविधाएं उपलब्ध होती हैं, जिससे उनके खर्च पर नियंत्रण रहता है. यूपीआई के साथ क्रेडिट कार्ड को लिंक करने से छोटे लेनदेन के लिए क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने की सुविधा बढ़ जाती है और साथ में यूपीआई स्वीकार करने वाले किसी भी लेनदेन के लिए लागू हो जाता है.

6. उच्च ऋण सीमा: क्रेडिट कार्ड आम तौर पर डेबिट कार्ड की तुलना में अधिक क्रेडिट लिमिट के साथ आते हैं. इससे उपयोगकर्ता अधिक महत्वपूर्ण खरीददारी कर सकते हैं.

क्या है यूपीआई से लिंक करने के नुकसान?

1. अधिक खर्च करने की प्रवृत्ति: क्रेडिट कार्ड को यूपीआई के साथ जोड़ने से अधिक खर्च करने का जोखिम बढ़ सकता है. चूंकि यूपीआई का इस्तेमाल करना आसान है इसलिए उपयोगकर्ता कई बार अपनी सीमा से अधिक खर्च कर देते हैं. एक क्लिक में पैसे भेजेने की आदत से उपयोगकर्ता अनियंत्रित खरीददारी करते हैं.

2. कर्ज के जाल में फंस सकते हैं: कई क्रेडिट कार्ड में कैशबैक या ट्रैवल पॉइंट जैसे आकर्षक रिवार्ड स्कीम होते हैं, जो यूपीआई लेनदेन के लिए क्रेडिट कार्ड का उपयोग करने के लिए प्रेरित करते हैं. इस तरह एक उपयोगकर्ता अपनी सीमा से अधिक खर्च कर देता है और बिल का भुगतान नहीं करने पर कर्ज के जाल में फंस जाता है क्योंकि अगर समय पर बिल का भुगतान नहीं किया

जाता है तो उपयोगकर्ता को अधिक ब्याज के साथ बिल चुकाना पड़ता है.

यूपीआई भुगतान पर लगने वाले प्रतिबंध:

आप यूपीआई से प्रति दिन प्रति कार्ड 1 लाख रुपये तक का भुगतान कर सकते हैं. ग्राहक व्यक्ति-से-व्यक्ति, कार्ड-टू-कार्ड या कैश-आउट पर लेनदेन नहीं कर सकते हैं. इस भुगतान के जरिए पैसे सिर्फ उपयोगकर्ता को ही भेज सकते हैं. किसी अन्य उपयोगकर्ता को पैसे भेजने की अनुमति नहीं है.

ई-कॉमर्स व्यापारी के लिए भुगतान या तो इंटेंट अनुरोध के माध्यम से या व्यापारी से संग्रह अनुरोध के माध्यम से किया जा सकता है. आप किसी अन्य अथवा दूसरे क्रेडिट कार्ड का भुगतान नहीं कर सकते हैं. लिंक किए गए क्रेडिट कार्ड से केवल व्यापारी को भुगतान (पी2एम) की अनुमति होगी.

1. यूपीआई पर रूपे क्रेडिट कार्ड को लिंक करने पर कोई प्रतिबंध नहीं है. आप एक से अधिक कार्ड को लिंक कर सकते हैं.

2. यूपीआई से लिंक किए क्रेडिट कार्ड से किए जाने वाले लेनदेन की संख्या की कोई सीमा नहीं है

3. यूपीआई पर रूपे क्रेडिट कार्ड को लिंक करने या फिर लिंक किए गए क्रेडिट कार्ड से भुगतान करने पर किसी भी प्रकार का कोई शुल्क नहीं लगता है.

प्रति कार्ड प्रति दिन राशि सीमा - यूपीआई सीमा, प्रति दिन 1 लाख और कुछ विशेष एमसीसी कोड के लिए 2 लाख, जो आपके कार्ड पर उपलब्ध क्रेडिट सीमा तक सीमित होगी. आवर्ती बिल भुगतान के लिए यूपीआई ऑटोपे की सुविधा उपलब्ध है.

प्रतिबंधित व्यापारी श्रेणियाँ - पी2पी, पी2पीएम, डिजिटल खाता खोलना, ऋण देने का मंच, व्यापारी से नकद निकासी, एटीएम से नकद निकासी, ईआरयूपीआई, आईपीओ, विदेशी आवक प्रेषण, म्यूचुअल फंड और जारीकर्ता बैंक/आरबीआई द्वारा प्रतिबंधित कोई भी अन्य श्रेणियां.

अक्षय कुमार
जुबिली हिल्स
चेक पोस्ट शाखा,
क्षे का पंजागुट्टा-हैदराबाद

स्थानांतरण

जीवन की राह में चलते चलते, आई एक नई मंजिल,
पुराने दोस्तों से बिछड़ने का गम, दिल में उठी एक हलचल।

रिश्तों की वो मिठास, वो हंसी, वो कहानियाँ,
बचपन के सपने और साथ बिताई वो रंगीन शामें।

जाते हुए कदम थमते हैं, पीछे मुड़कर देखते हैं,
आँखों में नमी, दिल में भारीपन, कुछ सपने अधूरे लगते हैं।

फिर सोचते हैं, हर अंत एक नई शुरुआत लाता है,
नए लोगों से मिलने का मौका, नये रिश्तों का जादू बुनता है।

नई जगह, नई चुनौतियाँ, नए अवसरों की बौछार,
जीवन का यह अध्याय भी होगा, अनोखा और खास।

हर मोड़ पर मिलेगी, एक नई राह, एक नया दृश्य,
जीवन का यह सफर, होगा सुंदरता से भरा, नए रंगों से भरपूर।

पुराने दोस्त रहेंगे दिल में, उनकी यादें होंगी साथ,
नए दोस्त बनाएंगे नई यादें, नई खुशियों का होगा परिमाण।

जीवन की इस नई यात्रा में, साहस को साथी बनाओ,
चुनौतियों का सामना करो, अवसरों को गले लगाओ।

हर नई जगह, एक नया अनुभव, एक नई कहानी,
अपनों से बिछड़ना दर्दनाक, पर यह जीवन की सच्चाई।

मिलेंगे फिर नए साथी, नए सपनों का संसार,
होंगे साथ हंसी-खुशी, और साझा होगा प्यार।

जो छूट गया पीछे, वो यादों में सजीव रहेगा,
जो आगे बढ़ेगा, वो जीवन को नई दिशा देगा।

इस बदलाव में छिपी है, जीवन की असली मिठास,
हर अंत एक नई शुरुआत है, यही है जीवन की परिभाषा।

इस यात्रा में बढ़ते चलो, लेकर दिल में साहस और उम्मीद,
नई चुनौतियाँ, नए अवसर, बनाएंगे जीवन को नवनीत।

पुराने दोस्तों की यादें, नए दोस्तों का प्यार,
जीवन की यह कहानी, होगी अनोखी और अपार।

स्थानांतरण एक बदलाव, एक अवसर, एक नई पहचान,
इस सफर में बढ़ते चलो, जीवन को दो नई उड़ान।

पवन कुमार झा
क्षे. का., गाजीपुर

विकसित भारत– 2047: स्वप्न से यथार्थ तक

विकसित भारत @ 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अमृत काल के प्रत्येक क्षण का उपयोग किया जाना चाहिए. ज़रूरत है कि आज हर संस्था, हर भारतवासी इस संकल्प के साथ आगे बढ़े कि उनके हर प्रयास और कार्य में विकसित भारत के लक्ष्यों को पाने की ललक हो.

आज महत्वपूर्ण है कि शिक्षक और विश्वविद्यालय भारत को तेज गति से एक विकसित देश बनाने के तरीके खोजने की एक विकसित राष्ट्र बनने की दिशा में सुधार के लिए विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करने की. प्रत्येक विश्वविद्यालय के छात्रों और युवाओं की ऊर्जा को 'विकसित भारत' के सामान्य लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में लगाने की आवश्यकता है.

अधिक से अधिक युवाओं को इस अभियान से जोड़ने के लिए देश के हर कॉलेज और विश्वविद्यालय में विशेष अभियान चलाने की आवश्यकता है. विकसित भारत से जुड़े आइडियाज पोर्टल की लॉन्चिंग की गई है, जिसमें पांच अलग-अलग विषयों पर सुझाव दिए जा सकते हैं. भारत सरकार द्वारा सर्वश्रेष्ठ दस सुझावों के लिए पुरस्कार की भी व्यवस्था की गई है. सुझाव mygov.in पर भी दिए जा सकते हैं.

विकसित भारत @ 2047 की दिशा में चलने के लिए शिक्षा और कौशल से आगे बढ़ने की जरूरत है और नागरिकों के बीच राष्ट्रीय हित और नागरिक भावना के लिए सतर्कता लाने की ज़रूरत है. जब नागरिक अपनी भूमिका में अपना कर्तव्य निभाना शुरू कर देते हैं, तो देश आगे बढ़ता है.

जल संरक्षण, बिजली की बचत, खेती में कम रसायनों का उपयोग और सार्वजनिक परिवहन के उपयोग के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण की आवश्यकता है. स्वच्छता अभियान को नई ऊर्जा, जीवनशैली के मुद्दों से निपटने और युवाओं द्वारा मोबाइल फोन से परे दुनिया की खोज करने के तरीके की आवयश्कता है. आज के समय में डिग्री धारकों के पास कम से कम एक व्यावसायिक कौशल होना चाहिए.

'विकसित भारत' के लक्ष्य को पूरा करने के लिए छात्रों के आत्मविश्वास, तैयारी और समर्पण के साथ-साथ परिवारों के योगदान की भी ज़रूरत है. हर भारतवासी के सामने 25 साल का अमृत काल है. हमें विकसित भारत के लक्ष्य के लिए 24 घंटे काम करना है, तथा यह वह माहौल है जिसे हमें एक परिवार के रूप में बनाना है.

देश की तेजी से बढ़ती आबादी में युवाओं की संख्या को देखते हुए भारत आने वाले 25-30 वर्षों तक कामकाजी उम्र की आबादी के मामले में अग्रणी बनने जा रहा है, आज युवा शक्ति बदलाव की वाहक भी है और बदलाव की लाभार्थी भी है.

भारत की वृहत और युवा आबादी विशाल कार्यबल क्षमता प्रस्तुत करती है. हालाँकि, इस क्षमता को साकार करने के लिए रो. जगार सृजन, शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार, कौशल उन्नयन और श्रम बल की भागीदारी को बढ़ावा देने जैसी चुनौतियों का समाधान करने की आवश्यकता है. अगले 25 साल ये युवा ही हैं जो भविष्य में नए परिवार और नया समाज बनाएंगे. विकसित भारत के निर्माण के लिए देश के युवाओं की आवाज को नीतिगत रणनीति में ढालने की ज़रूरत है और युवाओं के साथ अधिकतम संपर्क बनाए रखने वाले शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका भी एक अहम् रोल निभाती है.

विकसित भारत के निर्माण के लिए देश के प्रत्येक नागरिक की इसमें भागीदारी होगी और सक्रिय भागीदारी होनी भी चाहिए. स्वच्छ भारत अभियान, डिजिटल इंडिया अभियान, कोरोना महामारी के दौरान चलाये गए अभियान और वोकल फॉर लोकल जैसे कुछ अभियान भारत सरकार द्वारा उठाए गए कदम हैं जो विकसित भारत का निर्माण करने में सहायक होंगे.

आज के समय में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव को ध्यान में रखते हुए हरित विकास पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है. गैर-जीवाश्म ऊर्जा क्षमता को बढ़ाने, ऊर्जा आवश्यकताओं का 50% नवीकरणीय ऊर्जा से पूरा करना, कार्बन उत्सर्जन में कमी लाना, कार्बन तीव्रता को कम करना, नेट ज़ीरो के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में उठाये जाने वाले सारे कदम भारत को विकसित भारत @2047 की तरफ अग्रसर करने में सहायक होंगे. भारत जलवायु परिवर्तन लक्ष्यों को पूरा करने के लिए कार्बन तीव्रता को कम करने और नवीकरणीय उर्जा क्षमता को बढाने के लिए हमेशा प्रतिबद्ध रहा है, जो विकसित भारत की ओर बढ़ता हुआ कदम है.

विकसित भारत का एक महत्वपूर्ण पहलू डिजिटलीकरण है. इसके माध्यम से, गाँवों और शहरों में शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं, और वित्तीय समावेशन में सुधार किया जा रहा है. इसके साथ ही, नए उद्यमों को प्रोत्साहित किया जा रहा है जिससे रोजगार सृजन का मार्ग खुलता है.साथ ही, विकसित भारत में सामाजिक समावेशन भी महत्वपूर्ण है. विभिन्न समुदायों के विकास के लिए योजनाएं चलाई जा रही हैं ताकि सभी नागरिकों को समान अवसर मिल सकें.

डिजिटल अर्थव्यवस्था और फिनटेक, प्रौद्योगिकी-सक्षम विकास, ऊर्जा परिवर्तन और जलवायु कार्रवाई को बढ़ावा देने की जरूरत है. सार्वजनिक पूंजी निवेश के साथ निजी निवेश में शुरूआत को बढ़ावा देने की ज़रूरत है. महिलाओं के विकास, स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, विज्ञान

और प्रौद्योगिकी उन्नति, बुनियादी ढांचे के निर्माण, रोजगार, कृषि, बढ़ते विनिर्माण, औद्योगिक उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करने जैसे कई नए कदम उठाकर हम विकसित भारत @2047 की ओर नया कदम उठा पायेंगे.

विकसित भारत का लक्ष्य, औपनिवेशिक मानसिकता के प्रत्येक निशान को हटाना, अपनी जड़ों, एकता पर गर्व करना है. नागरिकों में कर्तव्य की भावना होनी चाहिए, नागरिकों को नई संभावनाओं को पोषित करने, नए संकल्पों को साकार करने और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ने की जरूरत है. देश को आगे ले जाने के लिए सामूहिक प्रयासों और टीम वर्क की ज़रूरत है. अर्थव्यवस्था, रोजगार, नवाचार और औद्योगिक उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए कौशल विकास, व्यापर करने में आसानी पर विभिन्न नीतियां लायी गई हैं जैसे प्रोडक्शन लिंक्ड प्रोत्साहन , पीएम गति-शक्ति - राष्ट्रीय मास्टर प्लान, भारत माला परियोजना, स्टार्ट अप इंडिया, मेक इन इंडिया 2.0, आत्मनिर्भर भारत अभियान योजनाएं पहले से ही मौजूद हैं, जो विकसित भारत @2047 के लक्ष्य को पाने में मददगार होंगी.

"अमृत काल" का लक्ष्य एक ऐसे भारत का निर्माण करना है जहां सुविधाओं का स्तर गांव और शहर को बांट न रहा हो; जहां सरकार नागरिकों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप न करे; जहां दुनिया का हर आधुनिक इन्फ्रास्ट्रक्चर मौजूद हो. इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, प्रधान मंत्री का नारा सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास, एकदम सटीक है.

2047 तक भारत लगभग 35 ट्रिलियन डॉलर की अर्थव्यवस्था के साथ एक वैश्विक बिजलीघर होगा. यह कथन एकदम सत्य है कि आज हम जो बीज बोएंगे वही भविष्य में मिलने वाले फल को परिभाषित करेंगे. 2047 के लिए परिकल्पित विकसित भारत के उपर्युक्त परिवर्तनकारी उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए, देश को "सबका साथ, सबका विकास, और सबका प्रयास" पर ध्यान केंद्रित करना जारी रखना चाहिए. आज ज़रूरी है कि हर भारतवासी व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से प्रयास करने का प्रण लें ताकि हम वर्ष 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्यों को पाने में समर्थ रहें.

इस प्रकार, विकसित भारत का सपना सिर्फ एक सपना नहीं है, बल्कि यह एक मिशन है जिसमें हर भारतीय का सहयोग और योगदान महत्वपूर्ण है. साथ ही, सरकार और नागरिकों की साझेदारी से ही समृद्धि और समाजिक न्याय का मार्ग साफ हो सकता है. इस प्रकार, हम सभी का यह कर्तव्य है कि हम विकसित भारत के लिए एकजुट होकर योगदान दें और एक समृद्ध भविष्य की दिशा में कदम बढ़ाएं.

रविंद्र सिंह
अं. का., जयपुर

कल रात

कल रात की ख़ामोशी को पढ़ा मैंने,
जो कुछ भी कहा उसने, इत्मिनान से सुना मैंने!
रात के उन बाशिंदों की आवाज़,
जो अब तक चुभती आयी थी कानों को मेरे,
उसमें छिपे एहसास को कल छुआ मैंने!
थाम कर हाथ चाँद का,
ख़यालों की गली में चक्कर लगा आया,
सुकून के चबूतरे पर बैठ के,
ख़्वाब एक नया कल मढ़ा मैंने!
कुछ यादों की भीनी सी ख़ुशबू आ रही थी,
कुछ किस्सों के जुगनू जगमगा रहे थे,
नशा रात का असलियत में, कल चखा मैंने!

चाँद भी नशे में था, हवाएँ बल खा रहीं थीं,
तीतरों की लोरियों से, वो पेड़ों को सुला रहीं थी!
इंसानी आवाज़ का निशाँ दूर दूर तक ना था,
फ़िर भी दिल इससे रज़ामंद था!
कल रात हवाओं में जैसे मिल गया गुलकंद था!
एक अजीब सा सुकून था, एक अलग सा आनंद था!
कल रात मेरा फ़ोन बंद था!

अभिनंदन श्रीवास्तव
प्रबंधक (कृषि)
क्षेत्रीय कार्यालय, गोवा

ईएसजी में बैंकों की भूमिका

ईएसजी क्या है?

ईएसजी कंपनियों के संचालन के लिए मानकों का एक समूह है जो उन्हें बेहतर अभिशासन, नैतिक प्रथाओं, पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और सामाजिक जवाबदेही को अपनाने में मदद करता है.

ईएसजी के तीन प्रमुख पहलू:

- पर्यावरण:- जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण, प्रदूषण और अपशिष्ट प्रबंधन
- सामाजिक:- मानव अधिकारों का सम्मान, श्रमिकों का कल्याण, ग्राहकों के साथ संबंध, समुदायों के साथ जुड़ाव
- अभिशासन:- नैतिक व्यवहार, पारदर्शिता, जवाबदेही, बोर्ड की स्वतंत्रता और विविधता

ईएसजी का महत्व:

- नवाचार और प्रतिस्पर्धात्मकता: ईएसजी मुद्दों पर ध्यान देने से कंपनियों को नए उत्पाद और प्रक्रियाओं को विकसित करने में मदद मिलती है.
- निवेशकों और ग्राहकों को आकर्षित करना: निवेशक और ग्राहक ईएसजी प्रदर्शन पर ध्यान देते हैं.
- लागत बचत: पर्यावरणीय दक्षता और कचरा प्रबंधन से लागत में कमी आती है.
- प्रतिष्ठा और ब्रांड मजबूत करना: ईएसजी प्रदर्शन से कंपनी की प्रतिष्ठा और ब्रांड मजबूत होता है.
- नियामकीय अनुपालन: सरकारें ईएसजी से संबंधित कड़े नियम लागू कर रही हैं.

ईएसजी एक महत्वपूर्ण ढांचा है जिसे कंपनियों को अपनाना चाहिए. यह नवाचार, प्रतिस्पर्धा, प्रतिष्ठा और लागत बचत में मदद करता है. भारत में ईएसजी अभी प्रारंभिक अवस्था में है और इस दिशा में और ध्यान देने की आवश्यकता है

ईएसजी में बैंकों की भूमिका :

बैंक ईएसजी (पर्यावरण, सामाजिक और अभिशासन) प्रथाओं को बढ़ावा देने और एक अधिक संवहनीय अर्थव्यवस्था की ओर रूपांतरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं. इसके कुछ प्रमुख तरीके हैं:

संवहनीय वित्त:- बैंक विभिन्न संवहनीय वित्त उपकरणों का उपयोग करके अपने ऋण पोर्टफोलियो में ईएसजी को अंतर्निहित कर सकते हैं और पर्यावरण और सामाजिक रूप से लाभकारी परियोजनाओं को समायोजित कर सकते हैं. इसमें निम्नलिखित शामिल हैं:

- ईएसजी प्रतिबद्धताओं के साथ कंपनियों को ऋण और अन्य ऋणों को प्राथमिकता देना
- पर्यावरण और सामाजिक रूप से लाभकारी परियोजनाओं को वित्त पोषण करने के लिए हरित ऋण, संवहनीय-लिंक्ड ऋण, हरीत बॉण्ड, सामाजिक बॉण्ड आदि की पेशकश करना
- कंपनियों की ईएसजी पहल को अनुकूलित संवहनीय वित्त उत्पादों के माध्यम से समर्थन प्रदान करना

उदाहरण के लिए, बैंक ऑफ मॉन्ट्रियल ने एटलांटिक पैकेजिंग को एक नई 100% रीसाइकिल्ड कंटेनरबोर्ड सुविधा के वित्तपोषण के लिए कनाडा का पहला लेबल वाला हरित ऋण प्रदान किया.

परिचालन दक्षता :- बैंक अपनी स्वयं की ईएसजी रणनीति के अनुरूप परिचालन दक्षता प्राप्त कर सकते हैं. इसमें शामिल हो सकता है:

- पर्यावरण-केंद्रित कंपनियों को बैंकिंग सेवाएं प्रदान करने के लिए विशेषज्ञ टीमों का गठन करना
- कम-कार्बन अर्थव्यवस्था में रूपांतरण को त्वरित करने के लिए पूंजी आबंटित करना
- बैंक परिचालनों को स्वच्छ ऊर्जा से संचालित करने के लिए नवीकरणीय ऊर्जा खरीद समझौतों में प्रवेश करना

जे.पी.मॉर्गन चेज़, बैंक ऑफ अमेरिका, वैल्स फार्गो और अन्य ने परिचालनात्मक बदलावों के माध्यम से अपनी ईएसजी प्रतिबद्धताओं को बढ़ाने के लिए विभिन्न उपाय घोषित किए हैं.

जिम्मेदार निवेश :- बैंकों की संपत्ति और संपत्ति प्रबंधन कार्यों द्वारा निवेश के निर्णयों में ईएसजी कारकों को शामिल करके जिम्मेदार निवेश को प्रेरित किया जा सकता है. इससे संवहनीय कंपनियों और परियोजनाओं की ओर पूंजी का प्रवाह होता है.

जोखिम प्रबंधन:- जोखिम प्रबंधन ढांचे में ईएसजी विचारों को एकीकृत करके, बैंक जलवायु परिवर्तन प्रभाव, नियामक परिवर्तन और प्रतिष्ठा क्षति जैसे ईएसजी से संबंधित जोखिमों का बेहतर अनुमान और शमन कर सकते हैं. यह उनके वित्तीय प्रदर्शन को सुरक्षित रखने में मदद करता है.

नवाचार :- ईएसजी-केंद्रित बैंक नवाचार को चलाने और पर्यावरण और सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करने वाले नए उत्पादों और सेवाओं को विकसित करने की अधिक संभावना रखते हैं. इसमें हरित बॉण्ड, संवहनीय निवेश उत्पाद, अल्पसेवित समुदायों के लिए वित्तीय सेवाएं आदि शामिल हैं.

संक्षेप में, बैंक अपने ऋण, निवेश और

परिचालनात्मक निर्णयों के माध्यम से पूरी अर्थव्यवस्था में ईएसजी प्रथाओं को गति देने के लिए अनूठी स्थिति में हैं. ईएसजी को प्राथमिकता देकर, बैंक सभी हितधारकों के लिए दीर्घकालिक मूल्य सृजित कर सकते हैं.

भारतीय बैंकिंग उद्योग में ईएसजी का भविष्य :

- नियामकीय दबाव में वृद्धि :-भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) और भारतीय बैंक संघ (आईबीए) द्वारा ईएसजी मानदंडों को अपनाने और लागू करने के लिए दबाव बढ़ता जा रहा है. उदाहरण के लिए, भारतीय रिज़र्व बैंक ने जलवायु जोखिम और संवहनीय वित्त पर दिशानिर्देश जारी किए हैं.
- हरित वित्त पोषण में वृद्धि :- बैंक हरित ऋण, संवहनीय-लिंक्ड ऋण, हरित बॉण्ड और अन्य संवहनीय वित्त उत्पादों को बढ़ावा देकर पर्यावरण और सामाजिक रूप से लाभकारी परियोजनाओं का वित्त पोषण करने पर ज्यादा ध्यान देंगे.
- संचालन दक्षता में सुधार:- बैंक अपने ऊर्जा उपयोग, कार्बन उत्सर्जन और अपशिष्ट प्रबंधन जैसे पर्यावरणीय पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करके अपनी संचालन दक्षता में सुधार करेंगे.
- जोखिम प्रबंधन में एकीकरण:- बैंक जलवायु परिवर्तन, नियामक परिवर्तन और प्रतिष्ठा जोखिमों को शामिल करके अपने जोखिम प्रबंधन ढांचे को ईएसजी-संरेखित करेंगे.
- नवाचार और नए उत्पाद:- ईएसजी पर ध्यान देने से बैंक नए हरित और संवहनीय वित्त उत्पाद विकसित करने में मदद मिलेगी, जिससे ग्राहकों की बढ़ती मांग को पूरा किया जा सकेगा.
- प्रतिष्ठा और ब्रांड मूल्य में वृद्धि:- ईएसजी प्रदर्शन में सुधार से बैंकों की प्रतिष्ठा और ब्रांड मूल्य में वृद्धि होगी, क्योंकि निवेशक और ग्राहक इन कारकों पर ध्यान देते हैं.

कुल मिलाकर, भारतीय बैंकिंग उद्योग में ईएसजी का भविष्य उज्ज्वल है. हालांकि, अब भी कुछ चुनौतियां हैं जिनका सामना करना होगा, लेकिन नियामकीय दबाव, ग्राहक मांग और प्रतिस्पर्धा के कारण ईएसजी को अपनाने की प्रेरणा मिलेगी.

सुनील कुमार
जेड.एल.सी., गुरुग्राम

10 से 5 की कहानी एक बैंकर की जुबानी

काम की शुरुआत मन को
शांति देने वाली प्रार्थना से करता हूं
आकर खुदको काम के प्रति
समर्पित करता हूँ।

कभी जल्दी चला जाता हूँ
तो कभी देर तक रुक भी जाता हूँ
पंद्रह दिन या महीने में
एकआद बार में भा थक जाता हूँ।

शाम 5 बजे तक HTM चलाता हूँ
तो कभी कभी 7 बजे तक भी चलाता हूँ
और कभी बीच में अधिकारी ने बोला
तो HPORDM भी चलाता हूँ।

हँसता हूँ, हँसाता हूँ
तो कभी रूठे ग्राहकों को मनाता हूँ
आप्नो का मान, तो सभी ग्राहकों का सम्मान करता हूँ।

न माने तो सलाह सूचना देता हूँ
अपने सहकर्मियों को एक समान देखता हूँ
बैंक के लक्ष्य के साथ-साथ
अपनी जिम्मेदारियाँ पूरी निभाता हूँ।

चाहे कोई भी हो सबके साथ
अपनो की तरह जुड़ जाता हूँ
खुद की मस्ती में रहकर पूरा दिन
कोई न कोई गाना गुनगुनाता हूँ।

सेवा क्षेत्र में हूँ सेवा कार्य करता हूँ
बैंक से है पहचान मेरी
मीले प्रशंसा ग्राहकों से ऐसी चाह रखता हूँ।

अरविंद मुंधवा
नडियाद शाखा, क्षे.का., आणंद

बैंकों की वैधानिक लेखा परीक्षा

बैंकों के वैधानिक लेखा परीक्षा का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि विनियामकों और जनता के सामने प्रस्तुत वित्तीय विवरण और खाता बही निष्पक्ष और सटीक हैं. आयकर, भारतीय रिजर्व बैंक, कंपनी अधिनियम 2013 और कंपनी (लेखा परीक्षा और लेखा परीक्षक) नियम, 2014 जैसे विभिन्न कानूनों द्वारा निर्धारित किया जाता है. बैंकों की वैधानिक लेखा परीक्षा अनिवार्य है और, आइ सी ए ई भारतीय रिजर्व बैंक के साथ मिलकर इसके लिए वैधानिक लेखा परीक्षकों की नियुक्ति करता है. प्रत्येक वित्तीय वर्ष के अंत में, बैंक की नियमावली के अनुसार चुनिन्दा शाखा में वैधानिक लेखा परीक्षा किया जाता है.

बैंकों की वैधानिक लेखा परीक्षा की एक प्रक्रिया निर्धारित है. यहाँ सांविधिक लेखा परीक्षक यह सुनिश्चित करता है कि उनके द्वारा जारी लेखापरीक्षा रिपोर्ट निम्नलिखित मानकों में निर्धारित आवश्यकताओं के अनुरूप है.

लेखापरीक्षा मानक 700 : वित्तीय विवरणों पर राय बनाना और रिपोर्टिंग करना (संशोधित)

लेखापरीक्षा के मानक 705 : स्वतंत्र लेखापरीक्षक की रिपोर्ट में राय में संशोधन

लेखापरीक्षा के मानक 706 : स्वतंत्र लेखापरीक्षक की रिपोर्ट (संशोधित) में विषय-वस्तु पैराग्राफ और अन्य विषय-वस्तु पैराग्राफ पर जोर.

वैधानिक लेखा परीक्षकों को एक समय सीमा के अंदर बैंक की उन शाखाओं का लेखा-परीक्षण करना होता है जो उन्हें आवंटित की जाती हैं. लेखा परीक्षक को नियुक्ति को तुरंत स्वीकार करना चाहिए और शाखा के प्रबंधन को एक औपचारिक सूचना भेजनी चाहिए और लेखा-परीक्षण करने के लिए आवश्यक जानकारी जुटाना आरंभ करना चाहिए. नियुक्त लेखा परीक्षक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि उनकी रिपोर्ट में जमा, अग्रिम, ब्याज आय और ब्याज व्यय के विषय में जानकारी अवश्य शामिल हो. बैंक के वैधानिक लेखा परीक्षा में सत्यापित करने के लिए आवश्यक तत्व निम्नलिखित हैं.

- नकदी सत्यापन प्रक्रिया
- कर-संबंधित वस्तुएँ
- ऋण खातों का सत्यापन

आइए इन सभी महत्वपूर्ण तत्वों में नियुक्त लेखा परीक्षक द्वारा ध्यान देने वाले बिन्दुओं को क्रमानुसार देखते है :

नकदी सत्यापन प्रक्रिया : एक वैधानिक लेखा परीक्षक को हर साल 31 मार्च तक बैंक की शाखा में नकदी शेष राशि का सत्यापन करना चाहिए. नकदी सत्यापन के लिए एक निर्धारित चेकलिस्ट है जिसका लेखा परीक्षक को पालन करना चाहिए.

- क्या शाखा दिशानिर्देशों में बताए गए समय पर खुल रही है और शाखा खुलते समय शाखा प्रबंधक वहां मौजूद है.
- क्या संयुक्त अभिरक्षक नकदी तिजोरी खोल रहे हैं.
- कोई भी गैर-रिकॉर्डेड सुरक्षा दस्तावेज या वस्तु नकदी तिजोरी में रखी गई है या नहीं.
- शाखा जनता से मुद्रा स्वीकार किए जाने का रिकॉर्ड रखती है या नहीं, तो इसमें कटे-फटे नोट प्राप्त करने का रिकॉर्ड भी शामिल हो.
- चोर अलार्म प्रणाली ठीक से काम कर रही है या नहीं .
- नकदी कक्ष खोलते समय बैंक के सभी अन्य प्रवेश द्वार तथा बैंक के अन्दर के प्रवेश द्वार बंद कर दिए गए हैं.
- सुनिश्चित करें कि नकदी कक्ष को खोलते या बंद करते समय कोई भी हथियार नकदी कक्ष के बाहर रहे.
- नकदी को लॉकर बॉक्स में कैश रूम से काउंटर तक तथा इसके विपरीत ले जाया जा रहा है.
- सुनिश्चित करें कि यूवी लैंप और नकदी गिनने वाली मशीन कार्यशील स्थिति में है या नहीं.

कर-संबंधित वस्तुएँ : एक वैधानिक लेखा परीक्षक को यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि सभी कर-संबंधी मदें और अनुपालन जो आम तौर पर बैंक पर लागू होते हैं, उनका पालन सुचारु रूप से हो रहा है . नीचे अनुपालन के लिए चेकलिस्ट दी गई है जिसका लेखा परीक्षक को पालन करना चाहिए:

- बैंक द्वारा जमाराशि पर ब्याज, किराया, पेशेवरों/ठेकेदारों को भुगतान आदि के रूप में किए गए सभी भुगतानों पर उचित दर से कर लगाया जाना चाहिए और कटौती की जानी चाहिए.
- सभी कर का भुगतान समय पर हो तथा सभी चालान मौजूद हों.
- सभी कर रिटर्न समय पर दाखिल किए जाएं.
- यदि बैंक में समवर्ती लेखापरीक्षा की जा रही है तो अनुपालन की गुणवत्ता की समीक्षा करें.
- सत्यापित करें कि क्या भारतीय रिजर्व बैंक ने पहले भी शाखा का लेखा परीक्षा किया है. यदि हाँ, तो वर्तमान में अनुपालन की गुणवत्ता की समीक्षा करें.
- शाखा के पास उनके कॉर्पोरेट कार्यालय द्वारा प्राप्त बीमा पॉलिसी की प्रति है.
- शाखा के पास पट्टे के दस्तावेज हों.
- टीडीएस प्रमाणपत्र जारी किए गए और फॉर्म 15जी/15एच समय पर भेजे गए हों.
- शाखा अन्य बैंकों से शेष राशि की पुष्टि ले रही है जिनमें उनका खाता है.
- सिस्टम सस्पेंस खाते में किसी बकाया प्रविष्टि के स्पष्टीकरण की, समीक्षा करें.

ऋण खाता सत्यापन : अधिकांश बैंकों की परिसंपत्तियों में मुख्य रूप से ऋण खाते शामिल होते हैं. एक वैधानिक लेखा परीक्षक को ऋण खातों की अतिरिक्त सावधानी से समीक्षा करने की आवश्यकता होती है. ऋण खातों का सत्यापन तीन भागों में विभाजित है:

- प्रारंभिक जांच

- अदायगी
- संवितरण के बाद निरीक्षण

प्रारंभिक जांच : बैंकों को मूल्यांकन के लिए परियोजना पर विचार करने से पहले सभी खातों की प्रारंभिक जांच करने की जिम्मेदारी सौंपी गई है. बैंक की प्रारंभिक प्रक्रिया के मूल्यांकन के लिए एक वैधानिक लेखा परीक्षा में नीचे दिए गए दस्तावेजों की समीक्षा की जानी चाहिए.

- निर्धारित आवेदन प्रपत्र, कर्ज के लिए आवेदन, केवाईसी अनुपालन
- नवीनतम लेखापरीक्षित वित्तीय विवरण
- परियोजना रिपोर्ट, अनुमानित पी एंड एल, बैलेंस शीट और नकदी प्रवाह विवरण
- ऋण सुविधाओं का लाभ उठाने के लिए बोर्ड का संकल्प
- सभी सरकारी विभागों का पंजीकरण, तकनीकी पुनरावलोकन

अदायगी : एक वैधानिक लेखा परीक्षक की जिम्मेदारी है कि वह संवितरण की जांच करे और यह भी देखे कि यह स्वीकृति पत्र की सभी शर्तों और नियमों के तहत हुआ है या नहीं. यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि इसके लिए स्वीकृति पत्र भी प्राप्त कर लिया गया है.

संवितरण के बाद निरीक्षण : बैंक सक्रिय दस्तावेजों की उचित समीक्षा करता है. एक वैधानिक लेखा परीक्षक की जिम्मेदारी है कि वह निम्नलिखित आवश्यक तत्वों की जांच करे.

- सभी ऋण खातों के संबंध में उधारकर्ताओं द्वारा विधिवत स्वीकार किया गया एक स्वीकृति पत्र होनी चाहिए.स्वीकृति पत्र की शर्तों एवं नियमों के अनुसार ऋण दस्तावेजों एवं अभिलेखों का उचित निष्पादन होना चाहिए.
- सभी मूल दस्तावेजों को अग्निरोधी सुरक्षित स्थान पर रखा जाना चाहिए.
- गोपनीय रिपोर्ट का उचित रखरखाव और मौजूदा बैंकरों से अनापत्ति प्रमाणपत्र प्राप्त करना.
- बैंक को किसी भी प्रतिकूल टिप्पणी के लिए सिबील रिपोर्ट और स्कोर की जांच करनी चाहिए एवं बाह्य एवं आंतरिक क्रेडिट रेटिंग अवश्य होनी चाहिए.
- प्रतिभूतियों का समय- समय पर मूल्यांकन.
- खातों की आहरण शक्ति का सत्यापन सटीक रूप से हो, तथा स्वीकृति पत्र के अनुसार मार्जिन बनाए रखा गया है या नहीं.
- लेखापरीक्षित बैलेंस शीट या स्टॉक लेखा परीक्षा रिपोर्ट पर किसी भी प्रतिकूल टिप्पणी का सत्यापन.
- स्वीकृति पत्र के अनुसार भुगतान की अनुसूची का उचित पालन हो रहा है या नहीं.
- वैधानिक लेखा परीक्षक को किसी भी गैर-निष्पादित आस्तियों (एनपीए) का निरीक्षण करना चाहिए. उन खाते को एनपीए माना जाना चाहिए जो अतिदेय हैं या लगातार 90 दिनों तक बैंक के लिए कोई आय उत्पन्न करना बंद कर देते हैं.

एक वैधानिक लेखा परीक्षक को बैंक की शाखा का गहन लेखा परीक्षण करने के बाद एक लेखा परीक्षा रिपोर्ट प्रस्तुत करनी होती है जिसमें निम्नलिखित बिन्दुओं पर टिप्पणी होनी चाहिए, जिनका अनुबंध पत्र में उल्लेख किया जाता है :

- बैलेंस शीट में बैंक के मामलों के बारे में ईमानदार और सही दृष्टिकोण प्रदर्शित करने हेतु सभी आवश्यक विवरणों का निष्पक्ष और सटीक दृश्य दिखाया गया है.
- लाभ और हानि खाते सही शेष प्रदर्शित कर रहे हैं या नहीं.
- शाखा द्वारा कोई ऐसा लेन-देन किया गया हो जो बैंक की शाखा के अधिकार क्षेत्र में नहीं आता हो.
- कोई अन्य मुद्दा जिसके बारे में सांविधिक लेखा परीक्षक को लगता है कि उसे सांविधिक केंद्रीय लेखा परीक्षक के ध्यान में लाया जाना आवश्यक है.

लेखा परीक्षक द्वारा लेखा परीक्षा करने के बाद एक लॉग फॉर्म लेखा परीक्षा रिपोर्ट (एलएफएआर) प्रस्तुत करना आवश्यक है. यह मानक लेखा परीक्षा रिपोर्ट के अलावा जारी की जाती है जो नियामक आवश्यकताओं के अनुसार महत्वपूर्ण है. यहाँ भारतीय रिजर्व बैंक, बैंको के उन मामलों को निर्धारित करता है जिनकी लेखा परीक्षक को जांच करनी होती है.

बैंक की शाखा का लॉग फॉर्म लेखा परीक्षा रिपोर्ट हर साल 30 जून से पहले जमा किया जाता है. इसका अर्थ है कि लेखा परीक्षक को बिना किसी देरी के इस रिपोर्ट को जमा करने के लिए लेखा परीक्षा की योजना बनानी चाहिए.

वैधानिक लेखा परीक्षा को कानून और विनियमों द्वारा आवश्यक बनाया गया है. यह लेखा परीक्षक को इस बारे में अपनी राय देने में मदद करता है कि क्या वित्तीय विवरण संगठन की स्थिति के बारे में सही और निष्पक्ष दृष्टिकोण दर्शाते हैं. लेखा परीक्षक संगठन के आंतरिक नियंत्रण पर टिप्पणी करता है, वे मौजूद हैं और कुशलता से काम कर रहे हैं या नहीं. वह संगठन को उन क्षेत्रों के बारे में भी सलाह देता है जहाँ आंतरिक नियंत्रण कमज़ोर है, और जोखिम अधिक है. यह वित्तीय विवरणों की विश्वसनीयता बढ़ाता है. लेखा परीक्षक विवरणों का उचित सत्यापन करता है. इससे संगठन में धोखाधड़ी के जोखिम को सीमित करने में सहायता मिलती है और विभिन्न संगठनों की विभिन्न प्रणालियों और व्यावसायिक प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने में मदद मिलती है. इससे प्रबंधन को अपना कार्य कुशलतापूर्वक करने तथा शेयरधारकों, और सरकार का विश्वास हासिल करने में मदद मिलती है.

रवि मिश्रा
यू.एल.ए., गुरुग्राम

कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लिए क्या हमारे पास पर्याप्त बिजली है?

अगर अधिक समय तक प्रयोग करने के पश्चात हम अपने लैपटॉप के नीचे छू कर देखेंगे तो संभावना है कि वह हिस्सा गरम होगा. ई मेल को डिस्प्ले करने से लेकर स्प्रेडशीट बनाने और कई ऐप्स को चलाने के लिए लैपटॉप को करोड़ों आकलन करने पड़ते हैं जिसमें ऊर्जा लगती है और यही कारण है कि जब हम देर तक कार्य करते हैं, तो लैपटॉप की बैटरी जल्दी डिस्चार्ज हो जाती है. अब जरा कल्पना कीजिए, विश्व भर के लाखों करोड़ों कम्प्यूटरों की, जो स्प्रेडशीट नहीं बना रहे बल्कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (कृत्रिम बुद्धिमत्ता) यानी ए.आई. के लिए एल्गोरिदम बना रहे हैं.

ए.आई. विशाल मात्रा में डेटा को प्रोसैस कर सकते हैं यानी वे सामान्य कंप्यूटर प्रोग्राम से कहीं ज्यादा जटिल काम कर सकते हैं और उनकी डेटा प्रोसेसिंग क्षमता मनुष्य के दिमाग की क्षमता से कहीं अधिक होती है. अत: वे कई समस्याओं का समाधान कर पाते हैं. ए.आई. का उपयोग अब सिर्फ अनुसंधान प्रयोगशालाओं तक सीमित नहीं है. यह चिकित्सा, वित्त, शिक्षा, मौसम अनुमान और मनोरंजन जैसे विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक रूप से अपनाया जा रहा है. इतना ही नहीं, ऐसे कई काम जो इंसान नहीं कर सकता, वह भी ए.आई. की सहायता से मशीनें कर पाएँगी, मगर ए.आई. को विकसित करने के लिए और करोडों कंप्यूटर्स को चलाने के लिए और उन्हें ठंडा रखने के लिए अर्थात एयर कंडीशनिंग के लिए विशाल मात्रा में ऊर्जा की आवश्यकता पड़ेगी. ए.आई. प्रणाली को प्रशिक्षित करने और संचालन करने के लिए बड़ी मात्रा में कंप्यूटिंग पावर की आवश्यकता होती है, जो बिजली की खपत को बढ़ाता है. इस संदर्भ में ए.आई. में बिजली की खपत का भविष्य एक महत्वपूर्ण विषय बन गया है.

ए.आई. में बिजली की मौजूदा खपत

हमारे दैनिक जीवन में ए.आई. की उपस्थिति कई स्थानों पर दिखाई देती है. फोन को अनलॉक करने के लिए, फेस डिटेक्शन से लेकर स्पैम ई-मेल की पहचान ए.आई. की सहायता से होती है. इसी की सहायता से भाषाओं का अनुवाद करने वाले प्रोग्राम बनाए जाते हैं परंतु समस्या यह है कि ए.आई. प्रोग्राम को बनाने और संचालित करने वाले कंप्यूटरों को चलाने में भारी मात्रा में बिजली खर्च होती है. एक अनुमान है कि वर्ष 2027 तक ए.आई. अकेले उतनी बिजली का प्रयोग करने लगेगा जितना नीदरलैंड के आकार का कोई देश करता है. ए.आई. को विकसित करने या प्रयोग करने के लिए बड़ी संख्या में मशीनों और कंप्यूटरों की आवश्यकता होती है जो एल्गोरिदम का प्रयोग करके करोड़ों आकलन करते हैं. इस काम के लिए विशाल डेटा सेंटर बनाने पड़ते हैं जिसमें सैंकड़ों बड़े कंप्यूटर होते हैं. बड़े गोदामों के आकार की इन इमारतों में खिड़कियां नहीं होती. इन्हें ठंडा भी रखना पड़ता है. विश्व में ऐसे लगभग दस हजार डेटा सेंटर हैं जहां ए.आई. को चलाने के लिए शक्तिशाली सुपर कंप्यूटरों का प्रयोग किया जाता है जिनसे काफी गर्मी भी पैदा होती है. इसीलिए आमतौर पर डेटा सेंटर नदी या तालाब जैसे पानी के स्रोतों के निकट बनाए जाते हैं ताकि उन्हें ठंडा रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी की आपूर्ति सुनिश्चित की जा सके. लेकिन पानी को पंप करने और कम्प्यूटर्स को चलाने के लिए बड़ी मात्रा में बिजली की आवश्यकता होती है. कुछ अनुमानों के अनुसार ए.आई. विश्व के बिजली के बजट का 8 से 10% का प्रयोग कर रहा है जो कि बहुत अधिक है. भविष्य में जेनरेटिव ए.आई. के कारण बिजली की आवश्यकता और अधिक बढ़ेगी. जेनरेटिव ए.आई., वह ए.आई. है जो हमारे साथ चैट कर सकता है, तस्वीर बना सकता है, सैंपल म्यूजिक की सहायता से संगीत भी तैयार कर सकता है. दावोस में वर्ष 2024 की वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम की बैठक में चैट जी.पी.टी. बनाने वाली कंपनी ओपन ए.आई. के प्रमुख सैम अल्टमैन ने बताया कि ए.आई. के नए मॉडल पहले लगाए गए अनुमान से कहीं अधिक ऊर्जा का प्रयोग करेंगे.

ए.आई. एक ऊर्जा संकट की ओर बढ़ रहा है. हमारे बिजली उत्पादन संयंत्रों पर पहले से ही सप्लाई का दबाव है जो और बढ़ जाएगा. अगर इस समस्या का हल नहीं निकाला गया और ऊर्जा के नए स्रोत नहीं बनाए गए तो समस्या गंभीर हो सकती है. विश्व पहले ही कार्बन उत्सर्जन की वजह से जलवायु परिवर्तन के संकट से जूझ रहा है. इसके लिए बेहतर होगा कि ए.आई. को चलाने के लिए बिजली की आवश्यकता सौर ऊर्जा या दूसरे रिन्यूएबल या हरित एनर्जी से पूरी की जाए, जो कि वर्तमान में पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है . वर्तमान आवश्यकता को पारंपरिक स्रोतों से तैयार की गई बिजली से ही पूरा किया जा रहा है. तकनीकी उद्योगों की बिजली की आवश्यकताओं को पूरा करने के

लिए परमाणु ऊर्जा और थर्मल ऊर्जा के प्रयोग पर भी चर्चा चल रही है. यहाँ तक कि बड़े डेटा सेंटर के पास परमाणु संयंत्र लगाने के बारे में भी सोचा जा रहा है.

वर्तमान में, बड़े ए.आई. मॉडल्स जैसे जी.पी.टी.-3 और डी.ए.एल.एल-ई को प्रशिक्षित करने के लिए बड़े पैमाने पर ऊर्जा की आवश्यकता होती है. उदाहरण के लिए, जी.पी.टी.-3 के प्रशिक्षण के लिए हजारों जी.पी.यू. (ग्राफिक्स प्रोसेसिंग यूनिट) घंटों की आवश्यकता होती है, जो भारी बिजली की खपत का कारण बनती है. यह न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से महंगा है बल्कि पर्यावरण पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है.

भविष्य की दिशा

ऊर्जा-कुशल ए.आई. मॉडल्स: भविष्य में, शोधकर्ताओं का ध्यान अधिक ऊर्जा-कुशल ए.आई. मॉडल्स विकसित करने पर होगा. ये मॉडल्स कम ऊर्जा की खपत में समान प्रदर्शन करने में सक्षम होंगे. इसके लिए नए एल्गोरिदम और हार्डवेयर समाधान विकसित किए जाएंगे. शोधकर्ता नये ए.आई. एल्गोरिदम और आर्किटेक्चर पर काम कर रहे हैं, जो कम बिजली खपत के साथ उच्च दक्षता प्रदान करेंगे. उदाहरण के लिए, क्वांटम कंप्यूटिंग और न्यूरोमॉर्फिक कंप्यूटिंग जैसी उन्नत तकनीकों का विकास हो रहा है, जो बिजली की खपत को कम करने में सहायता कर सकते हैं.

नवीकरणीय ऊर्जा का उपयोग: ए.आई. अनुसंधान केंद्र और डेटा सेंटर नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों जैसे सौर और पवन ऊर्जा का उपयोग करेंगे. इससे बिजली की खपत को कम किया जा सकेगा और पर्यावरण पर इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा. डेटा सेंटर्स को नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों से जोड़कर बिजली की खपत को अधिक संवहनीय और पर्यावरण-हितैषी बनाया जा सकता है.

क्लाउड कंप्यूटिंग और वितरण: क्लाउड कंप्यूटिंग और वितरित ए.आई. सिस्टम्स का उपयोग बढ़ेगा, जिससे संसाधनों का अधिकतम उपयोग हो सकेगा और बिजली की खपत को प्रभावी ढंग से प्रबंधित किया जा सकेगा. क्लाउड प्लेटफॉर्म्स का उपयोग करके, कंपनियां और अनुसंधान संस्थान बिजली की खपत को साझा कर सकते हैं और इसे अधिक प्रभावी ढंग से प्रबंधित कर सकते हैं.

ए.आई. ऑप्टिमाइजेशन: भविष्य में, ए.आई. तकनीक का उपयोग स्वयं को अधिक ऊर्जा-कुशल बनाने के लिए किया जाएगा. मशीन लर्निंग एल्गोरिदम्स का उपयोग सिस्टम्स के प्रदर्शन और ऊर्जा खपत को संतुलित करने के लिए किया जा सकता है. उदाहरण के लिए, ए.आई. मॉडल्स को इस तरह से प्रशिक्षित किया जा सकता है कि वे न्यूनतम ऊर्जा खपत के साथ अधिकतम कुशलता से कार्य कर सकें.

सामाजिक और आर्थिक प्रभाव

बिजली की खपत में वृद्धि का सीधा प्रभाव समाज और अर्थव्यवस्था पर पड़ता है. ऊर्जा की बढ़ती मांग के कारण बिजली की कीमतों में वृद्धि हो सकती है, जिसका असर सामान्य उपभोक्ताओं पर भी पड़ेगा. इसके अलावा, अगर ऊर्जा की खपत को नियंत्रित नहीं किया गया, तो पर्यावरणीय समस्याएं भी बढ़ सकती हैं.

ए.आई. और बिजली की खपत के बीच का संबंध न केवल आर्थिक दृष्टिकोण से ही नहीं बल्कि सामाजिक और पर्यावरणीय दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है. ए.आई. तकनीक का व्यापक उपयोग बिजली की खपत को बढ़ाता है, जिससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में वृद्धि हो सकती है. इस संदर्भ में, ऊर्जा कुशल ए.आई. तकनीकों का विकास आवश्यक है ताकि हम आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरण संरक्षण को भी सुनिश्चित कर सकें.

निष्कर्ष

कृत्रिम बुद्धिमत्ता में बिजली की खपत का भविष्य चुनौतियों और अवसरों से भरा है. जहां एक ओर ऊर्जा-कुशल ए.आई. मॉडल्स और नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों का उपयोग बढ़ेगा, वहीं दूसरी ओर हमें ऊर्जा प्रबंधन और पर्यावरण संरक्षण पर भी ध्यान देना होगा. यदि हम इन चुनौतियों का समाधान सही तरीके से कर सके, तो ए.आई. उज्ज्वल भविष्य और संवहनीय विकास की दिशा में अग्रसर होगा.

कृत्रिम बुद्धिमत्ता और बिजली की खपत के बीच संबंध को समझना और उसे संतुलित करना आने वाले समय की एक महत्वपूर्ण आवश्यकता है. इसके लिए, नीति निर्माताओं, शोधकर्ताओं और उद्योग जगत के नेतृत्व को मिलकर काम करना होगा ताकि हम एक स्थायी और ऊर्जा-कुशल भविष्य की ओर बढ़ सकें. ए.आई. तकनीक का भविष्य हमारे ऊर्जा प्रबंधन कौशल पर निर्भर करेगा, और इस दिशा में उठाए गए कदम हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और स्वस्थ पर्यावरण सुनिश्चित करेंगे.

लेकिन हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती यह होगी कि कैसे ए.आई.को चलाने के लिए काम करने वाले डेटा सेंटर्स को दी जाने वाली अधिकतर बिजली रिन्यूएबल या हरित स्रोतों से प्राप्त की जाए ताकि इसका पर्यावरण पर बुरा असर न पड़े. साथ ही हमें इस पर भी विचार करना पड़ सकता है कि ए.आई.का प्रयोग केवल आवश्यक कार्य के लिए ही किया जाए.

तुषार माहेश्वरी
जेड़.एल.सी., लखनऊ

अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक 2024

केंद्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों, अंचल कार्यालयों, यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु, क्षेत्रीय कार्यालयों एवं अंचलीय ज्ञानार्जन केंद्रों में पदस्थ बैंक के राजभाषा अधिकारियों के लिए दिनांक 4, 5 एवं 6 अप्रैल, 2024 को (तीन दिवसीय) अखिल भारतीय वार्षिक राजभाषा आयोजना सह समीक्षा बैठक 2024 का आयोजन यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु में किया गया. श्री अरुण कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं), केंका, श्री जी. एन. दास, महाप्रबंधक, कें.का., श्री नवनीत कुमार, महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख (अंचल कार्यालय, बेंगलूरु) ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई. इस अवसर पर डॉ. एच.टी. वासप्पा, प्राचार्य, यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, श्री रामजीत सिंह, सहायक महाप्रबंधक (राभा) एवं श्री विवेकानंद, मुख्य प्रबंधक (राभा), श्रीमती गायत्री रविकिरण, मुख्य प्रबंधक एवं संपादक-यूनियन धारा एवं सृजन भी उपस्थित रहीं. इस सम्मेलन में बैंक के 134 राजभाषा प्रभारियों ने भाग लिया. कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में बैंक की राजभाषा से संबन्धित 'वार्षिक कार्य योजना 2024-25' का ई-विमोचन किया गया. इसके पश्चात् राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग द्वारा प्रकाशित विविध आयाम पुस्तक की 13वीं कड़ी में 'अनुपालन के विविध आयाम' पुस्तक एवं 'यूनियन धारा' का विमोचन किया गया. समापन सत्र में 'यूनियन सृजन' का विमोचन किया गया. वित्तीय वर्ष 2022-23 में तीनों भाषाई क्षेत्रों में श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन करने वाले क्षेत्रीय कार्यालयों को 5 श्रेणियों (प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं 2 प्रोत्साहन) में शील्ड प्रदान किया गया तथा तीनों भाषाई क्षेत्रों में श्रेष्ठ कार्यान्वयन करने वाले अंचल कार्यालयों को 2 श्रेणियों (प्रथम एवं द्वितीय) में शील्ड प्रदान किया गया.

यूनियन बैंक
ऑफ इंडिया
Union Bank
of India
अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा
एवं आयोजना

अखिल भारतीय राजभाषा समीक्षा

समकालीन कविता के अमूल्य हस्ताक्षर

श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ

बनारस की रसमयी धरती के पास स्थित एक छोटे से कस्बे सैदपुर में जन्मे श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ समकालीन कविता के एक अमूल्य हस्ताक्षर के रूप में जाने जाते हैं. मर्मज्ञ जी वर्ष 1986 से कर्नाटक में हिंदी के प्रचार प्रसार हेतु समर्पित हैं. जन्म से भारतीय, शिक्षा से अभियंता, रोजगार से उद्यमी और स्वभाव से कवि एवं लेखक श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ बेंगलूरु में हिंदी के प्रचार प्रसार और विकास के साथ साथ स्थानीय भाषा के साथ समन्वय के लिए सतत प्रयत्नशील हैं. अनेक टी वी चैनलों एवं आल इंडिया रेडियो के केंद्रों से सामाजिक सरोकारों व राष्ट्रीय भावना से जुड़ी आपकी कविताएं व साक्षात्कार प्रसारित हुए हैं. राष्ट्रीय स्तर की पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताएं व लेख प्रकाशित हुए हैं. भारत के विभिन्न विश्वविद्यालयों के पाठयक्रमों में आपकी रचनाएं शामिल हुई हैं. आपको अनेक राष्ट्रीय संस्थाओं द्वारा सम्मानित किया गया है. श्री ज्ञानचंद मर्मज्ञ जी के साथ हमारे संवाददाता श्री देवकांत पवार के संवाद हमारे पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत है...

मर्मज्ञ जी आपका इस साक्षात्कार में स्वागत है. आज हम आपके जीवन और कृतित्व के बारे में जानने के लिए उत्सुक हैं. आपने कविता लिखना कब से प्रारंभ किया और कविता लिखने की प्रेरणा आपको कहाँ से मिली?

कविता मैं बचपन से ही लिख रहा हूँ. संभवत:, मैं उस समय आठवीं या नौवीं कक्षा में रहा हूँगा तब से लिख रहा हूँ. मैं प्रतिदिन सोने से पहले पिताजी से रामायण सुनता था. उसकी चौपाइयां गा-गा के दोहराता था. एक बार जब मैं स्कूल जा रहा था तो रास्ते में मैंने किसी मृत व्यक्ति को देखा. उसे फूलों से सजाया जा रहा था... ये तो मुझे मालूम था कि लोग मरते हैं और धीरे-धीरे तो ये बात सभी को मालूम हो जाती है, लेकिन इतने नज़दीक से जब मैंने देखा! मुझे बहुत तकलीफ हुई और मेरा मन उद्विग्न हो उठा, बहुत ही विचलित हुआ उस दिन! शाम को रामायण पढ़ते समय मैंने पिताजी से इसके बारे में पूछा तो उन्होंने कहा कि 'हाँ, यह तो एक सच्चाई है, जो सब के साथ होती है और एक दिन हमें भी जाना पड़ेगा. तुम्हारी माँ को भी जाना पड़ेगा और ये सब कुछ बदल जाएगा और आप भी एक दिन... फिर मेरे मन में बहुत सारी अजीब सी भावनाएँ आने लगी 'कि फिर ये जीवन क्या है? जीवन का महत्व क्या है?' और कुछ नकारात्मक भाव भी आए और सब मिला कर मेरा मन बहुत बेचैन हो गया. उस दिन सुबह चार बजे मेरी नींद खुल गयी और मैंने मौत पर पंक्तियाँ लिखी!

एक मुर्दा कफन से चुराकर,
आईने में उतारा गया है.
मृत्यु का हाय शृंगार कैसा,
झील में चाँद मारा गया है.

और फिर ये सिलसिला जारी रहा.
प्राण के ब्याह की रात आई,
उम्र के गांव बारात आई.
गल गयी फूल की पंखुड़ी तक,
एक ऐसी भी बरसात आई.

मैंने आपकी कविताओं को प्रत्यक्ष रूप से सुना है और आप की कविताएँ विभिन्न भावों को लिए हुए होती हैं, लेकिन आपकी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना का भाव प्रचूर होता है. आपके इस राष्ट्रीय चिंतन के मूल में क्या है?

मुझे बचपन से ही अपने देश, अपनी भाषा और मिट्टी से बहुत प्यार रहा है. मिट्टी की सौंधी गंध मेरी सांसों में खुशबू बनकर बहती है. इसका मैं अनुभव करता हूँ. कविता सच्चाई की पक्षधर होती है और कविता में सामाजिक सरोकार, मानवीय मूल्य और राष्ट्रीय चेतना के भाव हमेशा गुंफित रहते हैं. राष्ट्रीय भावना की कविताएँ सुनना और राष्ट्र प्रेम, राष्ट्र भक्ति की बात करना मुझे अच्छा लगता है. जो कि मेरा प्रिय विषय भी है.

सर, आप बेंगलूरु में कई वर्षों से काम कर रहे हैं. सुदूर दक्षिण में जहां हिंदी की उतनी उपस्थिति नहीं है, ऐसे में हिंदी में साहित्य सृजन करने में किस प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ा होगा या कर रहे हैं? इसके बारे में कुछ बताएंगे?

किसी भी सृजन के लिए क्या चाहिए? जैसे हम कोई पौधा रोपते हैं, बीजारोपण करते हैं और फिर उसको उचित वातावरण मिलता है तो उसमें फूल-पत्ती सब निकलते हैं, फिर अनाज पैदा होता है. साहित्य-सृजन भी उसी तरह है. उचित वातावरण मिलना बहुत आवश्यक है. यहाँ पर हिंदी के लिए उस परिवेश का अभाव जरूर है, लेकिन जब आपके अंदर भावनाएँ उमड़ने लगती हैं और आप व्याकुल हो जाते हैं तो लिखना आवश्यक हो जाता है.

दक्षिण में हिंदी और हिंदी साहित्य के लिए आप आगे चल कर किस प्रकार का भविष्य देखते हैं और क्या संभावना नज़र आती हैं?

हिंदी यहाँ रोजगार से जुड़ कर अपना विस्तार कर रही है. बड़ी संख्या में लोगों ने हिंदी को अपनी दूसरी भाषा के रूप में अपना लिया है. स्थानीय भाषा के साथ हिंदी

पूरी तरह घुल मिल गई है. इसका भविष्य बहुत उज्ज्वल है और इसे आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता. आपने साहित्य की बात कही. देखिए, साहित्य तो सूरज की तरह होता है और पूरी दुनिया को अपने प्रकाश से प्रकाशित करता है.

आप लंबे अरसे से साहित्य की सेवा कर रहे हैं. ऐसे कुछ क्षण होंगे जो आपके लिए अविस्मरणीय होंगे, जिनसे आपको अपने कार्यों के बारे में प्रसन्नता हुई होगी. इस तरह की कुछ घटनाओं के बारे में बताएं.

मेरे साहित्यिक जीवन में अविस्मरणीय पल तो बहुत सारे आए. मैं कुछ ऐसे पल आपको बता रहा हूँ जब मुझे वास्तव में बहुत खुशी हुई. ऐसा मुझे तब हुआ जब मेरी रचनाओं को मेरे साथ श्रोता गुनगुनाने लगते थे. दूसरा, जब मेरी पुस्तक पढ़कर, विशेषकर मेरी निबंध की किताब पढ़कर लोग मुझे फ़ोन करते हैं और उसके बारे में बातें करते हैं. मुझे प्रसन्नता होती है कि मैंने जो लिखा है उसका अच्छा प्रभाव पड़ रहा है, लोग सकारात्मक ढंग से उसे अपना रहे हैं और उसे आत्मसात कर रहे हैं. आपको तो मालूम ही है, मेरे अनेक निबंध, कविताएं और कहानी अलग-अलग विश्वविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में सम्मिलित हैं और पढ़ाए जा रहे हैं. कभी-कभी मुझे विद्यार्थियों के साथ संवाद करने के लिए स्कूल कॉलेज में बुला लेते हैं, वो क्षण मेरे लिए विशेष होता है.

वैसे तो आपने बहुत कुछ लिखा है. आपकी सबसे पसंदीदा रचनाएं कौन सी हैं?

अपने ही साहित्य में सर्वश्रेष्ठ को चुनना, कुछ बेहतरीन पंक्तियों को चुनना, बहुत कठिन है और मैं समझता हूँ कि यह आज के साक्षात्कार का सबसे कठिन प्रश्न है. मेरे लिए मेरी सभी रचनाएं प्रिय और अच्छी हैं. फिर भी, आपके प्रश्न के उत्तर में 2-3 गीतों का उल्लेख करूँगा जो मुझे बहुत प्रिय हैं पहला है -

"है अंधेरी रात, कोहरा भी घना है
और उजालों की तरफ जाना कहा मना है
कर रहे हैं जुगुनूएं दिन की समीक्षा,
जानें कैसी भोर की प्रस्तावना है."

दूसरे गीत के बोल कुछ इस प्रकार हैं

"कैसे लिख पाओगे धूप की भूमिका?
जब उजालों का अक्षर पढ़ा ही नहीं"

"वो मेरा बरगद वाला गांव." एक ऐसा गीत है जिसे सुनकर श्रोता भी मेरे साथ जुड़कर गुनगुनाने लगते हैं. कहीं भी मेरा प्रोग्राम होता है तो श्रोता इस गीत को जरूर सुनना चाहते हैं. मैं इन तीन गीतों को यहां पर उद्धरित करूंगा.

जहां तक मेरे निबंधों का सवाल है, मेरा एक निबंध है 'झुर्रियों की आत्मकथा' जो मुझे बहुत पसंद है. 'अस्तित्व' जिसमें मैंने बूंद से जीवन को जोड़ा है. 'खूंटी!' जो गांव में खूंटी होती है, उस खूंटी पर मैंने एक निबंध लिखा है. वैसे तो मैंने भिन्न-भिन्न विषयों पर निबंध लिखा है. 'चप्पल', 'नाखून' और 'जीवन का अंकगणित' 'वो पहला सफेद बाल'! इसके अलावा मेरे कुछ दोहे भी मुझे बहुत पसंद हैं.

अभी जैसे टेक्नोलॉजी का ज़माना है, डिजिटल युग है, इतने सारे मनोरंजन के साधन हैं, लोगों के पास समय ही नहीं है कि मोबाइल से सिर उठा कर देखें. ऐसे में भविष्य में आप साहित्य को किस प्रकार देखते हैं?

जी बिल्कुल सही प्रश्न आपने किया. ये प्रश्न बहुत जरूरी भी था इस साक्षात्कार में. देखिए, वर्तमान समय कई चुनौतियों से भरा हुआ है और यह साहित्य के लिए भी चुनौती है कि आज उसके पाठक कम हो रहे हैं. लोग मोबाइल से जुड़ कर उससे समाधान प्राप्त करना चाहते हैं. वैसे अच्छे पाठक आज भी हैं. जब हम साहित्य से दूर हो रहे हैं तो अपनी परंपराओं से भी दूर हो रहे हैं. अपनी संस्कृति से भी दूर हो रहे हैं. अधिकतर नौजवान बच्चे अपने माता-पिता को वो सम्मान नहीं देते जो हमारी पीढ़ी दिया करती थी. उसका कारण यही कि हम अपनी जड़ों से भटक गए हैं. लेकिन हाँ धीरे-धीरे लोग कोशिश कर रहे हैं कि अपनी जड़ों की तरफ लौटें और ये जो यात्रा है इसमें साहित्य की बहुत बड़ी भूमिका है.

आप एक अच्छे कवि तो हैं ही साथ ही एक अच्छे गीतकार भी हैं. आप अपनी रचनाओं को गीतों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं. आपकी कविता प्रस्तुति की शैली को लोग भी बहुत पसंद करते हैं. इस शैली को अपनाने के पीछे की प्रेरणा क्या थी?

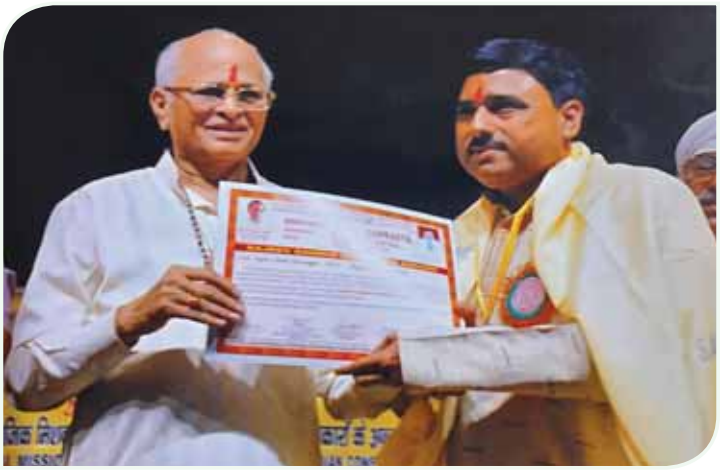

मुझे अब भी याद है कि जब मैं बचपन में 'मौत' और 'विधवा दुल्हन' जैसी कविताएं लिखता था और मैं अकेले बैठ जाता था, मैं उन पंक्तियों को पहले गाता था और तब मैं लिखता था. तरीका तो आज भी वही है. अपने गीतों को मैं स्वत: गुनगुनाता हूँ. देखिए जिस कविता को गाया न जा सके वह गीत कभी हो ही नहीं सकती. गीत के माध्यम से आप श्रोताओं को साथ लेकर जाते हैं. जब आप कोई अच्छा गीत सुनते हैं तो गीत आपके साथ हो लेता है आपके अंदर एक संस्कार को बोता है .

आप पेशे से इंजीनियर हैं और अपना व्यवसाय भी बहुत अच्छी तरह से कर रहे हैं. साहित्य में भी आप सक्रिय रूप से काम कर रहे हैं. इन दोनों क्षेत्रों के बीच आप किस तरह तालमेल बिठा पाते हैं?

जब आप किसी व्यवसाय में रहते हैं तो आप उसमें पूरी तरह लगे रहते हैं और शारीरिक थकान भी होती है. उसके बाद घर आकर कोई दूसरा काम करना थोड़ा मुश्किल होता है. लेकिन जहां तक साहित्य सृजन की बात है, जब आप यह करने बैठते हैं तो आपकी चेतना के कई द्वार स्वत: खुल जाते हैं आपकी सारी थकान मिट जाती है. लगता है जैसे नई उर्जा आपके अंदर प्रवाहित हो रही है और नया प्राण आपके अंदर विकसित हो गया है. इन दोनों के बीच तालमेल बिठा पाना बहुत कठिन नहीं है. समय के सही प्रबंधन से हो जाता है. दोनों क्षेत्र एक तरह पूरक हो गए हैं अलग नहीं.

विश्व पटल पर भारत एक मजबूत अर्थव्यवस्था के रूप में उभर रहा है. आर्थिक क्षेत्र में आप हिंदी और भारतीय भाषाओं की भूमिका किस रूप में देखते हैं? किस प्रकार हमारी भाषाएं अर्थव्यवस्था के साथ जुड़ कर मजबूत हो सकती और देश को भी मजबूती प्रदान कर सकती हैं?

जहाँ तक हिंदी का प्रश्न है हिंदी विश्व पटल पर बहुत ही तीव्र गति से अग्रसर हो रही है. इसमें किसी भी संशय की गुंजाइश ही नहीं है. हिंदी की जो स्वीकार्यता और अनिवार्यता है ये दोनों ही दूसरे देशो में स्पष्ट दिखाई दे रही है. हिंदी में, देखिए, मूल्य बोध और भाई चारे की एक खुशबू है. इसमें वो कुछ न कुछ विशिष्ट ज्ञान हैं, कोई बात है जो इसे अन्य भाषाओं से अलग रखता है. अभी भूमंडलीकरण का दौर है और आज दूर-दूर से लोग भारत में आकर व्यवसाय कर रहे हैं. यहाँ के लोग वहाँ जा रहे हैं. इसमें मैं यह देखता हूँ कि हिंदी की भूमिका बहुत अहम हो गई है. लोग कहते हैं कि हिंदी रोजगार की भाषा कब बनेगी. मैं कहता हूँ कि रोजगार की भाषा बन चुकी है. जो लोग दूसरे देश से आते हैं वो सबसे पहले यहाँ की भाषा को आत्मसात करते हैं, उसे अपनाते हैं और वो जानते है कि जब तक इस भाषा को हम आत्मसात नहीं करेंगे तब तक हमारा प्रॉडक्ट बिकेगा नहीं. मैं यह कहना चाहूंगा कि राष्ट्रभाषा, राजभाषा और संपर्क भाषा के साथ-साथ हिंदी व्यवसाय की भाषा के रूप में भी विश्व पटल पर अपनी पहचान बनाने में सफल सिद्ध हुई है. जहाँ तक प्रांतीय भाषाओं की बात है, जब हिंदी बढ़ेगी तो प्रांतीय भाषाएं भी तो बढ़ेंगी ही. इसका कारण यह है कि ये भाषाएं आपस में सगी बहनें हैं.

आप युवा पीढ़ी को साहित्य सृजन में आगे बढ़ने के लिए क्या संदेश देना चाहेंगे?

जी, युवा पीढ़ी का साहित्य से जुड़ना बहुत आवश्यक है. देखिए सबसे पहले तो मैं ये कहना चाहूंगा कि युवा पीढ़ी अपनी भाषा से जुड़े. साहित्य तो उसके बाद आएगा. मैं यहाँ बात केवल हिंदी की नहीं कर रहा हूँ. सबसे पहले अपनी मातृभाषा से जुड़ें और अपनी भाषा के साहित्य को पढ़ें. अपनी संस्कृति, अपनी परंपराओं को जानें. उसका अध्ययन करें. जब आप अपनी जड़ों से जुड़े रहेंगे तो मैं समझता हूँ कि फिर वो जीवन के मूल उद्देश्य से कभी नहीं कटेंगे. अगर अपनी जड़ों से जुड़ जाए तो राष्ट्रीय चेतना से भी कटने का सवाल ही नहीं पैदा होता. जहां तक साहित्य की बात है, सृजन की बात है, सृजन की क्षमता सभी के अंदर होती है. बस उसे विस्तार देने की जरूरत है. जिसने ध्यान दे दिया उसे अपने अंदर से अपने उन भावों को शब्दों में व्यक्त करना अपने आप ही आ जाता है.

देवकांत पवार
अं. का., हैदराबाद

हर्ष की शान बाणभट्ट का ज्ञान

चक्रवर्ती सम्राट हर्षवर्धन के दरबार में कई विख्यात कवि थे जिन्हें उनके दरबार के रत्न की उपाधि हासिल थी इनमें प्रमुख है महान कवि बाणभट्ट. बाणभट्ट कवि और लेखक संस्कृत के विद्वान थे, वे साहित्य, लेखन और महान शासकों की जीवनी लिखने के क्षेत्र में एक प्रमुख रचनाकार एवं लेखक बने. इन्होंने कई पुस्तकों की रचना की. संस्कृत साहित्य में जितने भी गद्यकार हुए हैं, उनमें बाणभट्ट सर्वाधिक प्रतिभाशाली हैं. उनके वर्णनों को देखकर समीक्षक उन्हें वाणी का अवतार मानते थे. इसीलिए यह कहावत भी प्रसिद्ध हुई कि - "वाणी बाणोबभूव." बाणभट्ट ने अपने हर्षचरित के आरम्भिक 27 उच्छ्वासों में तथा कादम्बरी के आरम्भिक श्लोकों में अपने जीवन एवं वंश के सन्दर्भ में पर्याप्त जानकारियाँ दी हैं. गद्यकाव्य सम्राट् बाणभट्ट, चित्रभानु एवं राजदेवी की सन्तान थे. वे ब्राह्मण थे तथा शोणनद के किनारे 'प्रीतिकूट' (पटना) नामक स्थान पर रहते थे. इनके पिता धनी एवं विद्वान् व्यक्ति थे. बाण जब छोटे थे तो इनकी माता राजदेवी का निधन हो गया. जब बाण चौदह वर्ष के हुए तो पिता चित्रभानु का भी देहांत हो गया. उस समय बाण जवानी की देहलीज पर थे. धनदौलत की कमी नहीं थी लेकिन संरक्षक का अभाव था, इसलिए वह उच्छंखल हो गए. वे देशाटन के लिए निकल गए-उन्होंने कई राजदरबारों की सैर की, नाटक मण्डलियाँ बनाईं कहीं पुराण बाँचा तो कहीं शास्त्रों का श्रवण किया. कुछ वर्ष बाद वे घर लौटे और सम्राट् हर्षवर्धन के चचेरे भाई श्री कृष्ण वर्धन के माध्यम से श्रीहर्ष की सभा में पहुँच कर अपनी विद्वता से उनके प्रधान सभा पण्डित बन गए.

राजा हर्ष विभिन्न संग्रहों और 'बाणभट्ट की पुस्तक' से चकित रह गए. बाणभट्ट के लेखन के मानकों और गुणवत्ता को देखते हुए, अंतिम वर्धन राजा ने उनसे राजा के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण जीवनी लिखने का फैसला किया, जो बाद में हर्ष की खोज के लिए पुरातात्विक स्रोतों में एक प्रमुख माध्यम बनी. राजा के लिए लिखी गई ऐतिहासिक पुस्तक का नाम हर्षचरित था, जिसमें सम्राट हर्षवर्धन का संपूर्ण जीवन इतिहास शामिल था. दरबारी कवि होने के कारण बाणभट्ट ने प्रसिद्ध शासक हर्ष के जीवन इतिहास को शामिल करके एक बेहतरीन काम किया है. इस दरबारी कवि के बारे में सबसे प्रभावशाली बात यह है कि उन्होंने पुस्तक को काव्यात्मक गद्य में लिखा, जिससे हर्षचरित के बारे में रोचक तथ्य सामने आए. उबाऊ होने और जीवनी को अरुचिकर बनाने के बजाय, काव्यात्मक गद्य के समावेश ने इतिहास की गुणवत्ता को और भी बढ़ा दिया.

इस महाकाव्य 'बाणभट्ट की पुस्तक' के माध्यम से ज्ञान और भाषा सीखने पर संस्कृत का प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है. हर्ष चरित में बौद्ध राजा हर्ष के समय के जीवन भर के इतिहास का गहन सार है. बाण भट्ट की कादम्बरी पुस्तक में श्रृंगार रस का परिचय मिलता है. इस पुस्तक को बाणभट्ट ने 7वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में लिखना शुरू किया था लेकिन इसे महान संस्कृत इतिहासकार ने पूरा नहीं किया. कादम्बरी पुस्तक को बाद में उनके बेटे भूषण भट्ट ने पूरा किया. बाणभट्ट की प्रत्येक पुस्तक और बाणभट्ट की रचनाओं का पुरातात्विक अध्ययन और समझ का साहित्य क्षेत्र में एक विशेष स्थान है.

बाणभट्ट की निम्नलिखित पाँच कृतियाँ मानी जाती हैं :- 1. हर्षचरित, 2. कादम्बरी, 3. चण्डीशतक, 4. पार्वतीपरिणय, 5. मुकुटताडितक.

1. हर्षचरित- हर्षचरित गद्यकाव्य है, जो उन्होंने अपने आश्रयदाता सम्राट हर्षवर्धन के जीवन को आधार बनाकर लिखा है. जो गद्यकाव्यों के कथा एवं आख्यायिका भेदों में से आख्यायिका के अन्तर्गत आता है. ऐतिहासिक महापुरुष के जीवन पर आधारित होने के कारण इसे आख्यायिका कहते हैं. इसमें आठ उच्छ्वास हैं, जिनमें से प्रारम्भिक 2 उच्छ्वासों में बाणभट्ट ने अपना जीवनवृत्त वर्णित किया है.

2. कादम्बरी- कादम्बरी की कथावस्तु काल्पनिक कथा पर आधारित होने के कारण यह कथा नामक गद्यकाव्य के अन्तर्गत आता है. बाणभट्ट की समृद्ध, परिपक्व एवं परिष्कृत प्रतिभा का यह उत्तम उदाहरण है. इसके दो भाग हैं पूर्वार्ध तथा उत्तरार्ध. ऐसा माना जाता है कि बाणभट्ट अपने जीवनकाल में कादम्बरी के पूर्वार्ध की रचना ही कर पाए थे तथा बाद में उनके प्रतिभावान् पुत्र भूषण भट्ट (पुलिन्द) ने इसे पूरा करने के लिए उत्तरार्ध की रचना की थी. इसकी कथावस्तु संक्षेप में इस प्रकार है. कादम्बरी के आरम्भ में विदिशा के राजा शूद्रक की सभा में एक चाण्डाल कन्या ऐसे तोते को लेकर उपस्थित होती है जो मनुष्य की वाणी में बोलता है. यह पूछने पर कि इस तोते को कैसे पकड़ा? वह तोता स्वयं ही मानुषी भाषा में अपना जीवनवृत्त सुनाता है तथा बताता है कि किस प्रकार वह ऋषि जाबालि के आश्रम में पहुँचा. जाबालि के आश्रम में जाबालि उस तोते को उसके पूर्वजन्म की कथा सुनाते हैं. इस प्रसंग में चन्द्रापीड़ तथा उसके मित्र वैशम्पायन की कथा आती है. राजा चन्द्रापीड दिग्विजय के लिए हिमालय पर्वत की ओर जाता है और शिकार का पीछा करते-करते अच्छोद नामक तालाब पर पहुँच जाता है. वहाँ पर वह महाश्वेता के अलौकिक संगीत पर आकृष्ट हो जाता है तथा वहीं उसकी भेंट महाश्वेता की सखी 'कादम्बरी' से होती है. चन्द्रापीड कादम्बरी से प्रेम करने लगता है. महाश्वेता भी उसे तपस्वी कुमार पुण्डरीक और अपनी अधूरी प्रेम कहानी बताती है. चन्द्रापीड को उसके पिता दिग्विजय से वापिस उज्जैन बुला लेते हैं परन्तु वह हमेशा कादम्बरी के वियोग में डूबा रहता है. वह पत्रलेखा के माध्यम से कादम्बरी का

समाचार प्राप्त करता है और प्रसन्न होता है. कादम्बरी का पूर्वार्ध यहीं समाप्त हो जाता है. उत्तरार्ध में महाश्वेता चन्द्रापीड के मित्र हैं. वह दु:खी होकर मर जाता है. चन्द्रापीड भी मित्र की दशा सुनकर प्राण त्याग देता है. उनके पुनर्जीवित होने विषयक आकाशवाणी को सुनकर महाश्वेता और कादम्बरी राजकुमार के शरीर की रक्षा करती हैं. अन्त में पुण्डरीक तथा चन्द्रापीड सभी जीवित हो जाते हैं. उपर्युक्त कथानक को बाण ने अपनी पैनी प्रतिभा से काव्यशास्त्रीय उपादानों अर्थात् रस, गुण, अलंकार रीति आदि से इतना सुसज्जित किया है कि यह गद्य-काव्य गद्यरचना का चूडान्त निदर्शन बन गया है. विद्वज्जनों के लिए कादम्बरी एक ऐसा रसायन है जिसका आस्वादन करने वालों को आहार की भी इच्छा नहीं होती.

3. चण्डीशतक- इसमें स्रग्धरा छन्द में भगवती चण्डी की स्तुति है जो मार्कण्डेय पुराण के देवी माहात्म्य पर आधारित है.

4. पार्वतीपरिणय- यह नाटक है, जिसमें महादेव एवं पार्वती के विवाह का वर्णन है. इसमें पाँच अंक हैं.

5. मुकुटताडितक- महाभारत के कथानक पर आधारित यह भी एक नाटक है. इसमें भीमसेन अपने तीव्र गदा प्रहार से दुर्योधन की हत्या कर देते हैं.

उन्होंने किसी भी कथनीय बात को छोड़ा नहीं जिसके कारण कोई भी पश्चाद्वती लेखक बाण को अतिक्रांत न कर सका. कवि की सर्वतोमुखी प्रतिभा, व्यापक ज्ञान, अद्भुत वर्णन शैली और प्रत्येक वर्ण्य-विषय के सूक्ष्मातिसूक्ष्म वर्णन के आधार पर यह सुभाषित प्रचलित है कि उन्होंने किसी वर्णन को अछूता नहीं छोड़ा है और उन्होंने जो कुछ कह दिया, उससे आगे कहने को बहुत कुछ शेष नहीं रह गया. उन्होंने जितनी सुन्दरता, सहृदयता और सूक्ष्मदृष्टि से बाह्य प्रकृति का वर्णन किया है, उतनी ही गहराई से अन्त: प्रकृति और मनोभावों का विश्लेषण किया है. उनके वर्णन व्यापक और सटीक है, इन्हें पढ़कर पाठक को अनुभव होता है कि उन परिस्थितियों में वह भी ऐसा ही सोचता या करता. प्रात:काल वर्णन, सन्ध्यावर्णन, शूद्रकवर्णन, प्रकृतिवर्णन, चाण्डालकन्या वर्णन आदि में उन्होंने प्रत्येक वस्तु का सजीव चित्र उपस्थित कर दिया है. चन्द्रापीड को दिए गए शुकनासोपदेश में तो कवि की प्रतिभा का चरमोत्कर्ष परिलक्षित होता है. कवि की लेखनी भावोद्रेक में बहती हुई सी प्रतीत होती है. शुकनासोपदेश में ऐसा प्रतीत होता है मानो सरस्वती साक्षात मूर्तिमती होकर बोल रही हैं. महाकवि बाणभट्ट ने गद्यरचना के क्षेत्र में वही स्थान प्राप्त किया है जो संस्कृत काव्य के क्षेत्र में कालिदास को प्राप्त है.

श्वेता सिंह
जेड.एल.सी., लखनऊ

मेरी कविता

चिर जीवन की व्यस्त शाम में,
सब ओर बिखरे कोहराम में,
नव पुलकित पुष्प कमल सी,
शान्त अवस्थित, मेरी कविता .....

उदास संध्या की घोर निशा में,
गहरे तक मौन, मन की दिशा में,
प्रात: की गाती एक चिरैया,
सस्वर मुखरित, मेरी कविता .....

बंजर भूमि सा निरउपजाऊ,
कठिन-कंटीले और पथराऊ,
शुष्क हृदय की ठोस धरा में,
झरने सी प्रस्फुटित, मेरी कविता .....

प्रात: के खग-मृदु-गान में,
शान्त रजनी की मौन तान में,
नदी-पहाड़, गगन-धरती में,
प्रकृती की हर प्रतिकृति में,
अन्तर्निहित तुम मेरी कविता .....

व्यस्त मार्ग में रिक्त विला सी,
शब्द-बाणों में निश्चल शिला सी,
अपमानों का गरल कंठधर,
समधिरत, मेरी कविता .....

आवाहन पर अवतरित हुई गंगा,
निर्मल तन-मन, क्लेश-कटंगा,
हृदय मंथन से शब्द-सरिता सी,
हुई उपस्थित मेरी कविता .....।

वर्षा सोनी
दोहाद शाखा, क्षे.का., आणंद

रामधारी सिंह 'दिनकर'

राष्ट्रकवि की कलम से राष्ट्रधर्म की पुकार

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' का जन्म 23 सितंबर 1908 को बिहार के बेगूसराय जिले के सिमरिया गांव में हुआ था. उनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में हुई तथा बाद में उन्होंने पटना विश्वविद्यालय से इतिहास में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की. अपनी युवावस्था से ही वे देश के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ गए थे उनकी कविताओं में देशभक्ति और क्रांति की भावना स्पष्ट दिखाई देती है.

दिनकर जी की रचनाओं की सबसे बड़ी विशेषता उनका ओजस्वी और प्रखर स्वर है. उनकी कविताएँ देशभक्ति, वीरता, त्याग और बलिदान की भावना से ओतप्रोत हैं. वे अपनी कविताओं में तत्कालीन सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक परिस्थितियों का चित्रण करते हैं. उनकी रचनाएँ जनमानस को प्रेरित और उत्साहित करती हैं. उनके साहित्य में आदर्शवाद, यथार्थवाद और मानवतावाद का त्रिवेणी संगम है. दिनकर जी की कविताओं ने न केवल हिंदी साहित्य को समृद्ध किया बल्कि राष्ट्रीय चेतना को भी जागृत किया. उनकी रचनाएँ आज भी प्रासंगिक हैं और पाठकों को नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करती हैं.

जीवन यात्रा और साहित्यिक सफर:

दिनकर जी का बचपन ग्रामीण परिवेश में बीता. बचपन से ही वे प्रकृति प्रेमी थे और उनकी कविताओं में इसका प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है. किशोरावस्था में उन्होंने देश की गुलामी को करीब से देखा और महसूस किया, जिसने उनकी राष्ट्रीय चेतना को जगाया.

पटना विश्वविद्यालय में शिक्षा के दौरान उनका साहित्यिक रुझान और अधिक विकसित हुआ. उन्होंने हिंदी, संस्कृत, बांग्ला और अंग्रेजी साहित्य का गहन अध्ययन किया. इसी दौरान उन्होंने कविताएँ लिखना शुरू किया और उनकी प्रतिभा निखरने लगी.

दिनकर जी की प्रारंभिक रचनाओं में 'विजय संदेश', 'प्रणभंग' और 'हुंकार' प्रमुख हैं. इन रचनाओं ने उन्हें साहित्यिक पहचान दिलाई और उनकी कविताएँ लोकप्रिय होने लगीं.

दिनकर जी ने स्वतंत्रता आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया. उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में देशभक्ति की भावना जगाई और उन्हें आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया. उनकी कविताएँ स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गईं.

दिनकर जी ने 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'रेणुका' और 'उर्वशी' जैसी अमर कृतियाँ रचीं. इन रचनाओं ने उन्हें राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति दिलाई.

साहित्यिक योगदान और विशेषताएँ:

दिनकर जी आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रमुख स्तंभों में से एक हैं. उन्हें वीर रस के कवि के रूप में जाना जाता है. उनकी कविताओं में ओज, राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना और मानवीय मूल्यों का अनूठा संगम है. वे युग की आवाज़ बनकर उभरे और अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने देशवासियों को जागृत किया.

दिनकर जी का साहित्यिक योगदान अद्वितीय और विविध है. 'उर्वशी' में नारी के स्वतंत्र व्यक्तित्व और उसकी आकांक्षाओं का चित्रण, 'कुरुक्षेत्र' में महाभारत के युद्ध के माध्यम से मानव जीवन के द्वंद्वों और नैतिक मूल्यों का उद्घाटन, 'रश्मिरथी' में कर्ण के चरित्र के माध्यम से सामाजिक अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज़, और 'परशुराम की प्रतीक्षा' में शोषित वर्ग के विद्रोह की भावना का चित्रण, उनकी रचनाओं को अद्वितीय बनाता है.

दिनकर जी का गद्य लेखन भी उल्लेखनीय है. 'संस्कृति के चार अध्याय' और 'रेती के फूल' जैसे ग्रंथों में उन्होंने भारतीय संस्कृति, इतिहास, और समाज पर गहन चिंतन प्रस्तुत किया है. 'कविश्री' और 'आधुनिक हिंदी कविता में वैचारिक संघर्ष' जैसी आलोचनात्मक कृतियों में उन्होंने हिंदी कविता की विभिन्न धाराओं और प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है.

दिनकर जी की कविताओं में वीर रस, ओज, और प्रगतिशील विचारधारा का अनूठा संगम देखने को मिलता है. उनकी भाषा की प्रखरता, अलंकारों का कुशल प्रयोग, और भावों की तीव्रता उनकी रचनाओं को और भी प्रभावशाली बनाती हैं. वे शब्दों के जादूगर थे, जो अपनी कविताओं के माध्यम से पाठकों के मन में देशभक्ति, वीरता, और सामाजिक चेतना की अलख जगाते थे.

दिनकर का राष्ट्रवाद और सामाजिक चिंतन

दिनकर जी का राष्ट्रवाद केवल देशभक्ति के नारों तक सीमित नहीं था, बल्कि यह उनकी रचनाओं में एक जीवंत शक्ति के रूप में प्रकट होता था. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में देशभक्ति की भावना को जगाया और उन्हें राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरित किया. उनकी कविताएँ स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा स्रोत बन गईं, और उन्होंने अपने लेखन के माध्यम से राष्ट्रीय आंदोलन को एक नई ऊर्जा प्रदान की.

दिनकर जी एक प्रखर समाज सुधारक भी थे. उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों, अंधविश्वास, और जातिवाद की कटु आलोचना की. वे मानते थे कि एक स्वतंत्र राष्ट्र का निर्माण तभी संभव है जब समाज इन बुराइयों से मुक्त हो. उन्होंने नारी सशक्तिकरण और समानता का समर्थन किया, और अपनी कविताओं में नारी के शक्ति और सम्मान को रेखांकित किया.

दिनकर जी का मानना था कि युवा पीढ़ी देश का भविष्य है. उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से युवाओं को कर्मठता, देशभक्ति, और नैतिक मूल्यों का संदेश दिया. वे चाहते थे कि युवा पीढ़ी देश के विकास में सक्रिय भूमिका निभाए और एक सशक्त, समृद्ध, और न्यायपूर्ण भारत का निर्माण करे.

दिनकर की प्रासंगिकता

दिनकर जी की रचनाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी उनके समय में थीं. उनकी कविताओं में उठाए गए राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, और नैतिक मूल्यों के मुद्दे आज भी हमारे समाज के लिए महत्वपूर्ण हैं. उनकी कविताएँ हमें याद दिलाती हैं कि एक सशक्त राष्ट्र के निर्माण के लिए सामाजिक बुराइयों का उन्मूलन और नैतिक मूल्यों का पालन कितना आवश्यक है.

दिनकर जी की रचनाएँ युवा पीढ़ी के लिए एक प्रेरणा स्रोत हैं. उनकी कविताएँ युवाओं को कर्मठता, देशभक्ति, और नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक करती हैं. वे युवाओं को सिखाती हैं कि चुनौतियों का सामना कैसे करें और अपने लक्ष्यों को कैसे प्राप्त करें. उनकी कविताएँ युवाओं में आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच का संचार करती हैं.

आज के समय में जब देश में सांप्रदायिकता, जातिवाद, और भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ बढ़ रही हैं, दिनकर जी की रचनाएँ हमें राष्ट्रीय एकता, सामाजिक न्याय, और नैतिक मूल्यों की याद दिलाती हैं. वे हमें सिखाती हैं कि एक सभ्य और समृद्ध समाज के निर्माण के लिए इन मूल्यों का पालन कितना आवश्यक है. दिनकर जी की रचनाएँ हमें एक बेहतर भविष्य के निर्माण के लिए प्रेरित करती हैं.

पुरस्कार एवं सम्मान

रामधारी सिंह दिनकर को उनकी उत्कृष्ट साहित्यिक कृतियों और राष्ट्र के प्रति उनके अतुलनीय योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कारों से सम्मानित किया गया. उन्हें 1959 में 'उर्वशी' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार और 1972 में, उन्हें 'कुरुक्षेत्र' के लिए भारतीय साहित्य के सर्वोच्च सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार इसके अलावा, उन्हें भारत सरकार द्वारा वर्ष 1959 में पद्म भूषण से भी सम्मानित किया गया. वे 3 बार राज्य सभा सांसद के रूप में चुने गए. इन पुरस्कारों के अलावा, उन्हें कई अन्य साहित्यिक और सामाजिक संगठनों द्वारा भी सम्मानित किया गया, जो उनकी साहित्यिक प्रतिभा और राष्ट्र के प्रति उनके समर्पण का प्रमाण है.

रामधारी सिंह 'दिनकर' की साहित्यिक विरासत एक अमूल्य निधि है, जो हिंदी साहित्य को निरंतर समृद्ध करती रहेगी. उनकी कविताएँ, गद्य रचनाएँ, और आलोचनात्मक लेखन हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर हैं. उनका साहित्य राष्ट्रीय चेतना, सामाजिक सुधार, और मानवीय मूल्यों का एक जीवंत दस्तावेज है. उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी कविता को एक नई ऊँचाई प्रदान की.

दिनकर जी का व्यक्तित्व और कृतित्व एक-दूसरे के पूरक थे. वे एक ओजस्वी कवि, प्रखर वक्ता, समाज सुधारक, और राष्ट्रवादी चिंतक थे. उनकी कविताओं में उनकी देशभक्ति, सामाजिक चेतना, और मानवीय मूल्यों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता स्पष्ट रूप से दिखाई देती है. उनका जीवन और साहित्य एक-दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़े हुए थे, और दोनों ने मिलकर हिंदी साहित्य को एक नई दिशा प्रदान की.

दिनकर जी का हिंदी साहित्य में योगदान अविस्मरणीय है. उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से हिंदी कविता को एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की. वे न केवल एक महान कवि थे, बल्कि एक युग प्रवर्तक भी थे, जिन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज को जागृत किया और उसे एक नई दिशा प्रदान की. उनकी साहित्यिक विरासत हिंदी साहित्य के लिए एक अमूल्य धरोहर है, जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरणा देती रहेगी.

दीपक कुमार
क्षे. का., प्रयागराज

कंकाल

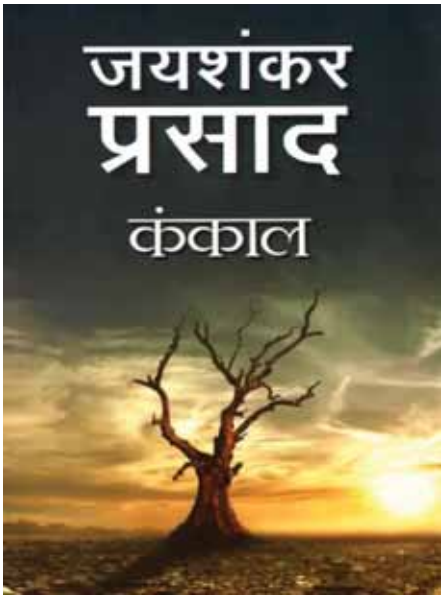

जयशंकर प्रसाद द्वारा 1930 में प्रकाशित 'कंकाल' तत्कालीन भारतीय समाज को चित्रित करता है. 'कंकाल' उनकी एक ऐसी कृति है जिसमें पूर्णतया यथार्थ को दर्शाया गया है. इसमें बदलते समाज को चित्रित किया गया है. यह उपन्यास समाज की रूढ़िगत धार्मिकता तथा थोथी नैतिकता पर गहरा व्यंग्य है. ऊपरी सामाजिक व्यवस्था के भीतर कितना भंयकर खोखलापन है, इसे इस उपन्यास में प्रत्यक्ष दिखाया गया है. बीसवीं सदी में जो सामाजिक और राष्ट्रीय चेतना देश में विकसित हुई थी, उसका प्रभाव कंकाल उपन्यास पर स्पष्ट दिखता है. उस समय समाज में चल रहे परिवर्तन और कुरीतियों की लहर उपन्यास में भी दिखाई देती है.

कंकाल का अर्थ होता है- 'अस्थि-पंजर का ढांचा'. बाहर से स्वर्णिम दिखाई देने वाला भारतीय समाज और इसकी सभी संस्थाओं को इस उपन्यास में एक कंकाल के सदृश्य दिखाया गया है. इस उपन्यास में जो भी घटनाक्रम दिखाए गए हैं वे सभी प्रयाग, काशी, हरिद्वार, मथुरा और वृन्दावन के आसपास के क्षेत्र के हैं. यह उपन्यास चार खंडों में विभक्त है. प्रथम खंड में सात, द्वितीय में आठ, तृतीय में सात और चतुर्थ खंड में दस अध्याय हैं.

उपन्यास में दो कथाएं, दो कथा सूत्र तथा उनसे संबंधित प्रासंगिक घटनाएं समानांतर विकसित हैं. यथार्थ और सामाजिक यथार्थ को उपन्यास में अंकित करने के लिए प्रसाद ने कहीं-कहीं व्यंग्य का आश्रय भी लिया है. 'कंकाल' में ऐसा समाज अंकित है जिसकी आधारभूमि हिल गयी है पुरानी मान्यताएँ और विश्वास इसमें धराशायी होते दिख रहें हैं.

'कंकाल' में पात्रों का सृजन उसके कथ्य के अनुरूप हुआ है जैसे गृहस्थ, तीर्थयात्री, पंडित, ठाकुर, गुंडे, डाकू, वेश्याएं. कुल मिलाकर उन्नीस पात्र हैं जिनमें दस स्त्री और नौ पुरुष हैं. उपन्यास के सभी पात्र प्राय: द्वंद ग्रस्त हैं लेकिन दुश्चरित्र नहीं हैं. कुछ पात्र दलित समाज के जीते - जागते प्राणी हैं. विजय, मंगल, तारा, गाला, घंटी, मोहन जैसे पात्र अवैध संताने हैं.

इस उपन्यास के सभी पात्र अलग-अलग वर्ग से हैं जैसे श्रीचंद व्यवसायी वर्ग का है. किशोरी अपनी चारित्रिक दुर्बलताओं को समेटे समाज में दिखावा करके यश कमाने वाले वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है. निरंजन ऐसा पात्र है जो परिवार की मनौती के फलस्वरूप साधु बन जाता है. यमुना (तारा) एक साधारण और आदर्श स्त्री है जो पुरूषों द्वारा शोषण का शिकार होती है. जूठन पाने के लिए लड़ने वाले लोग दलित वर्ग से हैं. बाथम इसाई है. घंटी एक बाल विधवा है जो सुंदर, चंचल, सरल और पवित्र हृदय वाली स्त्री है. मंगल एक स्वयं सेवक है जो सात्विक - कर्तव्यपरायण, अध्ययन अध्यापन प्रिय, कान का कच्चा और अंधविश्वासी युवक है. विजय अस्थिर मनोवृत्ति का है, उसका जीवन भी यंत्रणाओं से भरा है.अन्य स्त्री पात्रों में लतिका, सरला, नंदो आदि हैं जो मुख्य पात्रों के चरित्र निर्माण में सहायक हैं.

श्रीचंद और किशोरी पति-पत्नी हैं. वे संतान कामना का भाव लिए निरंजन के पास आते हैं जो कि एक महात्मा है और किशोरी का बाल मित्र भी. किशोरी उससे संतान उत्पन्न करती है और अपने पति से अलग रहने लगती है. तत्कालीन समाज के उन पवित्र स्थानों का भी चित्रण मिलता है जहां अनीतिपूर्ण काम किए जाते थे. निरंजन जो कि एक साधु है, किशोरी से वह 'विजय' और रामा से 'यमुना' का पिता बना. उस दौर में प्रचलित था कि संतान आशीर्वाद से उत्पन्न होती है. इसलिए निरंजन के माता-पिता और किशोरी-श्रीचंद सन्तान प्राप्ति के लिए साधुओं के पास जाते हैं और इन परिस्थितियों का लाभ उठाकर ऐसे आडंबरी बाबा समाज की भोली-भाली जनता को धोखा देते हैं.

भारतीय समाज पितृसत्तात्मक विचारों वाला है. कंकाल में तत्कालीन समाज में व्याप्त वेश्यावृत्ति को भी दिखाया गया है. एक तीर्थ स्थान कैसे स्त्री के लिए अभिशाप बन जाता है इसका स्पष्ट उदाहरण तारा है. तारा वेश्यालय में रही इसलिये अब वह घर में रहने योग्य नहीं है. स्त्री की पवित्रता उसकी देह से है. इस पर मंगल कहता है - 'यह स्त्री कुचरियों के फेर में पड़ गयी थी, परन्तु इसकी पवित्रता में कोई अंतर नहीं पड़ा'.

सदियों से चली आ रही बाल-विवाह एक ऐसी प्रथा है जब नासमझी की आयु में ब्याह दिया जाता है और इसका दुष्परिणाम बाल-विधवा होता है, जो लड़की संसार को जानती तक नहीं वही विधवा होकर उसके कठोर नियमों का पालन करने के लिए मजबूर हो जाती है. घंटी एक बाल-विधवा है. वह कभी भीख माँगती है तो कभी विभिन्न पुरुषों के आश्रय में रहती है. उसका कोई नहीं है पर वह सबकी सम्पत्ति बन जाती है.

उपन्यास में जयशंकर प्रसाद हिंदु धर्म की आडम्बर भरी नीतियों को सामने लाते हैं जहां कुछ लोग धर्म के नाम पर धन लुटा रहे थे और कुछ खाने को भी तरस रहे थे. वह समाज दलितों से घृणा करने वाला था, उन्हें अछूत माना जाता था. वे सवर्णों की जूठन खाते थे. इस समाज में एक ओर ऐश्वर्य थी तो दूसरी ओर भूख. इसका एक उदाहरण - 'दासियाँ जूठी पत्तल बाहर फेंक रही थी. ऊपर की छत से पूरी और मिठाईयों के टुकड़ों से लदी हुई पत्तलें उछाल दी जाती थीं. नीचे कुछ अछूत डोम और डोमनियाँ खड़ी थीं जिनके सिर पर टोकरियाँ थीं, हाथ में डण्डे थे जिनसे वे कुत्तों को हटाते थे और आपस में मार-पीट, गाली-गलौच करते हुए उस उच्छिष्ट की लूट मचा रहे थे. वे पुश्त-दर-पुश्त के भूखे'.

इस उपन्यास में बदलते समाज को भी चित्रित किया गया है जहां विवाह जैसे पवित्र रिश्ते का भी कोई सम्मान नहीं है. किशोरी को निरंजन से मोह था, तो श्रीचंद को व्यापार और चंदा से जहां विवाह के बाद भी संबंध न के बराबर है. प्रसाद तारा (यमुना) के माध्यम से कहते हैं - 'मैं ब्याह करने की आवश्यकता यदि न समझूँ तो'?

विजय भी विधवा घंटी से स्नेह रखता है पर वह विवाह की बात स्वीकार नहीं करना चाहता. वह कहता है-'घंटी, जो कहते हैं अविवाहित जीवन पाशव है, उच्छृंखल है, वे भ्रांत है. हृदय का सम्मिलन ही तो ब्याह है'.

तत्कालीन भारत में अंधविश्वास भी शीर्ष पर था, सरला विधवा थी, धनी थी, उसको पुत्र की बहुत लालसा थी परंतु पुनर्विवाह असंभव था. उसके मन में किसी तरह यह बात बैठ गई कि बाबा जी अगर चाहेंगे तो यही पुत्री पुत्र बन जायेगा और इसी का लाभ रामदेव जैसा अंधा ढोंगी उठाता है, जो लड़की को लड़का बनाने का दंभ कर सरला जैसी अंधविश्वासी स्त्रियों को ठगता है.

कंकाल उपन्यास में धर्म परिवर्तन को भी चित्रित किया गया है. विभिन्न धर्मों के संरक्षक तत्कालीन समाज में लोगों को बहलाकर, पाप-पुण्य के फेर में उलझाकर धर्म परिवर्तन करवा रहे थे. कंकाल गिरजे का बिशप बाथम संस्कारहीन, अर्थ लोलुप और कामुक व्यक्ति है. वह प्राचीन चित्रों की प्रतिलिपि कराकर लोगों को ठगता है. लतिका का धर्म परिवर्तन कराकर ईसाई बनाता है, उससे विवाह करता है. साथ ही वह घंटी को भी ईसाई बना उससे विवाह करना चाहता है.

समाज में स्त्रियों की स्थिति को दर्शाते हुए घंटी कहती है- 'हिन्दू स्त्रियों का समाज ही कैसा है, इसमें उनके लिए कोई अधिकार हो तब तो सोचना-विचारना चाहिए'. इसी प्रकार यमुना कहती है - 'कोई समाज स्त्रियों का नहीं बहन! सब पुरुषों के हैं, स्त्रियों का एक धर्म है, आघात सहन करने की क्षमता'.

कंकाल' में देश की सामाजिक और धार्मिक स्थिति का अंकन है और अधिकांश पात्र इसी पीठिका में चित्रित किए गए हैं. नायक विजय और नायिका तारा के माध्यम से प्रेम और विवाह जैसे प्रश्नों से लेकर जाति-वर्ण तथा व्यक्ति-समाज जैसी समस्याओं पर लेखक ने विचार किया है. इस उपन्यास में जयशंकर प्रसाद ने समाज के पर्याप्त चित्रों को उभारा है. जयशंकर प्रसाद का कंकाल उपन्यास सामाजिक विषमता, अंधविश्वास, भेदभाव, पाखण्डों से परे एक ऐसा नया समाज चाहता है जो उदार मानवीयता पर आधारित हो.

मोहम्मद रिजवान आलम
क्षे.का., भुवनेश्वर

अपना देश संवारें

बिखरे-बिखरे मोती चुन लें, संग दीपक के ज्योती चुन लें

तलवारें-बंदूकें छोड़ें हम बदले उनके रोटी चुन लें,
खंज़र से क्यूँ आघात करें
बस हम-तुम मिलकर बात करें,
जो सहनी थी हम सब ने सह ली, अपनी-अपनी सब ने कह ली
बिगड़ा है जो उसे सुधारें, नई पीढ़ी का भविष्य निखारें
आओ अपना देश संवारें.

कुछ अपने हैं जो खो गए हैं
संग गैरों के वो हो गए हैं,
उनको वापस लाना होगा, हमे उन्हें अपनाना होगा
एक-एक ईट जोड़-जोड़कर फिर परिवार बनाना होगा,
साथ मिलें हम उन्हें पुकारें.
बिगड़ा है जो उसे सुधारें, नई पीढ़ी का भविष्य निखारें
आओ अपना देश संवारें.

अन्दर अपने खामी भी है
यश है पर नाकामी भी है,
खुद ही खुद से लड़ना होगा, हमको भी तो मरना होगा
खुशहाली के लिए यक़ीनन इतना कुछ तो करना होगा,
मिलकर तोडें हम दीवारें.
बिगड़ा है जो उसे सुधारें, नई पीढ़ी का भविष्य निखारें
आओ अपना देश संवारें.

हो सकता है कमियाँ रह जायें
जो सोचा है वो ना कर पायें; पर
हमने नींव खोद रखी है बना रखा है एक रास्ता
जो आने वाले हैं कल अब तो है उन पर ही आस्था,
बना ही लेंगे वो मीनारें.
बिगड़ा है जो उसे सुधारें, नई पीढ़ी का भविष्य निखारें
आओ अपना देश संवारें.

मोरध्वज पटेल
कें. का. अनेक्स, हैदराबाद

तृश्शूर पूरम

केरल अपनी खूबसूरती के लिए जाना जाता है. जितनी खूबसूरत यहाँ की वादियाँ हैं उतने ही खूबसूरत यहाँ के त्यौहार हैं. केरल का भौगौलिक विस्तार कुछ इस तरह है कि उत्तर से दक्षिण में फैले इस राज्य में जिला दर जिला संस्कृतियों और त्यौहारों में पर्याप्त विविधताएँ देखने को मिलती हैं. केरल के मध्य में तृश्शूर जिला स्थित है. तृश्शूर सांस्कृतिक रूप से काफी समृद्ध है इसे केरल की सांस्कृतिक राजधानी भी कहते हैं. केरल में मनाए जाने वाले त्यौहारों में तृश्शूर पूरम का अपना एक विशेष महत्व है. वैसे तो पूरम, केरल के कई स्थानों में मनाया जाता है परन्तु तृश्शूर पूरम की अपनी अलग ही पहचान है. यह मनाये जाने वाले पूरमों में सबसे प्रमुख है. तृश्शूर पूरम में सम्मिलित होने का यह मेरा पहला अनुभव था. शहर के बीचों-बीच स्थित वडक्कुमनाथन मन्दिर में इसका आयोजन किया जाता है. मैनें तृश्शूर पूरम के आयोजन को पहले छायाचित्रों में ही देखा था परन्तु यहाँ आकर पता चला कि यह छायाचित्रों से कहीं अधिक भव्य है. तृश्शूर की जनता की नज़र में यह त्यौहारों का त्यौहार है.

मलयालम माह मेदाम (अप्रैल-मई) में मनाया जाने वाला तृश्शूर पूरम, तृश्शूर और उसके आसपास के देवी देवताओं के एक भव्य समागम के रूप में मनाया जाता है. यहाँ देवी-देवता, चेंडा मेलम और पंच वाद्यम के भव्य समूहों के साथ सजे हुए हाथियों पर सवार होकर वडक्कुमनाथन मन्दिर परिसर में प्रवेश करते हैं पूरम के दस मन्दिर (पारामेक्कावु, तिरुवम्बाडि, कणिमंगलम, कारामुक्कु, लालूर, चुरक्काट्टुकरा, पनामुक्कुंपिल्ली, अय्यन्तोल, चेम्बूक्कावु, नैतलक्कावु) प्रतिभागी होते हैं यह कार्यक्रम कुछ इस तरह आयोजित किया जाता है कि पूरम उत्सव की गति 36 घण्टे बिना रूके चलती रहती है. मैंने क्षेत्रीय लोगों से इस त्यौहार के इतिहास के बारे में पूछताछ की तो पता चला, इसकी शुरूआत कोचीन के महाराजा सक्तन तंपुरन ने की थी. तृश्शूर पूरम की स्थापना से पहले केरल में प्रमुख मंदिर उत्सव अरट्टुपुझा पूरम था, जो अरट्टुपुझा में आयोजित होता था तृश्शूर और उसके आसपास के मंदिर अक्सर इसमें भाग लेते थे. सन 1798 में भारी बारिश के कारण तृश्शूर के मंदिर अरट्टुपुझा पूरम के लिए देर से पहुँचे इसके कारण उन्हें कार्यक्रम में शामिल होने से मना कर दिया गया. मंदिर प्रशासकों ने इस मुद्दे पर सक्तन तंपुरन से चर्चा के परिणामस्वरूप, उन्होंने वडक्कुमनाथन मंदिर क्षेत्र में दस मंदिरों को एकजुट करके स्वयं पूरम मनाने का निर्णय लिया.

सुसज्जित हाथियों, भव्य छतरियों और जोरदार ढोल संगीत के साथ मनाया जाने वाला शानदार त्यौहार तृश्शूर पूरम एक अद्भुत समारोह है जिसमें केरल के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का सम्मिलन होता है. सभी पूरमों में सबसे महत्वपूर्ण माना जाने वाला यह वार्षिक मंदिर महोत्सव, तृश्शूर के तेक्किनकाडु मैदान मे आयोजित किया जाता है. यह मैदान हमारे क्षेत्रीय कार्यालय, तृश्शूर से मात्र 2 कि. मी. की दूरी पर है . त्यौहार का शुभारंभ 10 मंदिरों की सहभागिता के साथ किया जाता है. इस त्यौहार में सुसज्जित हाथियों की शोभायात्रा निकलती है और कुडमट्टम समारोह आयोजित किया जाता है. तेज गति और लयबद्ध तरीके से रंग-बिरंगी चमकीली छतरियों के हस्तांतरण वाला कुडमट्टम समारोह काफी दिलचस्प होता है.

पूरम का मुख्य कार्यक्रम वडक्कुमनाथन मंदिर के अंदर दोपहर 2:00 बजे शुरू होता है. इसमें 50 से ज़्यादा हाथियों को नेट्टीपट्टम (सजावटी सुनहरा हेडड्रेस), शानदार ढंग से तैयार किए गए कोलम, सजावटी घंटियाँ और आभूषणों से सजाया जाता है. परमेक्कावु और थिरुवम्बाडी दोनों गुप पश्चिमी द्वार से मंदिर में प्रवेश करते हैं और दक्षिणी द्वार से बाहर निकलते हैं, और इलांजितारा मेलम के बाद पूरम के अंत में दूर-दूर तक आमने-सामने खड़े हो जाते हैं. मेलम की उपस्थिति में, दोनों ग्रुप हाथियों के शीर्ष पर रंगीन और जटिल रूप से डिज़ाइन

की गई छतरियों का आदान-प्रदान करके प्रतिस्पर्धा करते हैं, जिसे कुडमट्टम के रूप में जाना जाता है, जो कार्यक्रम की मुख्य विशेषता भी है. तेज गति और लयबद्ध तरीके से रंग-बिरंगी चमकीली छतरियों के हस्तांतरण वाला कुडमाट्टम समारोह सबसे महत्वपूर्ण माना जाता है छतरियों के त्वरित हस्तांतरण करने की प्रक्रिया जनता के अंदर उत्साह का संचरण करती है. जैसे ही किसी हाथी के ऊपर छतरी का हस्तांतरण होता है जनता का रोमांच बढ़ता जाता है जिस प्रकार किसी क्रिकेट या फुटबॉल के खेल में गोल या चौके, छक्के लगने पर जनता रोमांचित हो जाती है उसी प्रकार हाथियों के ऊपर छतरियों के हस्तांतरित होने पर जनता उत्साहित होती है. सभी पूरम अंतत: वडक्कुमनाथन मंदिर के पश्चिमी गोपुरम के पास नीलापदुथारा में समाप्त होते हैं. उत्सव का समापन भव्य आतिशबाजी के साथ होता है. इस कार्यक्रम में की गई आतिशबाजी केरल के किसी भी अन्य कार्यक्रम की आतिशबाजियों में सबसे भव्यतम मानी जाती है. उत्सव का एक अन्य आकर्षण है इलन्जित्तरा मेलम, जिसमें पारंपरिक वाद्ययंत्रों का प्रस्तुतीकरण किया जाता है. 250 बेजोड़ कलाकार इस पारंपरिक वाद्यवृंद में भाग लेते हैं जिसका नेतृत्व चेंडा कलाकार करते हैं और हजारों दर्शकों के उत्साह और आनंद में इस आयोजन की मूल आत्मा पल्लिवत होती है. दर्शक चेंडा, कुरुमकुषल, कोम्बु और इलत्तालम (केरल के पारंपरिक वाद्ययंत्र) की धुन की लय पर अपने हाथ लहराते हैं.

विभिन्न मन्दिरों से जब हाथी कार्यक्रम में हिस्सा लेने के लिए आते हैं तो नजारा देखने लायक होता है. उनकी चिघांड़ से सारा शहर गुंजायमान हो जाता है. जगह-जगह इन हाथियों का स्वागत किया जाता है. यहाँ की राज्य सरकार भी इस त्यौहार के आयोजन के लिए पर्याप्त व्यवस्थाएँ करती है. पूरम की धर्मनिरपेक्ष प्रकृति भी इसकी एक बहुत बड़ी खासियत है. सभी धार्मिक समुदाय उत्सव में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और प्रमुख भूमिका निभाते हैं. केरल के लोगों को अपनी पारस्परिक धार्मिक सहानुभूति पर बड़ा गर्व है. पूरम केवल एक त्यौहार नहीं है, बल्कि तृश्शूर के लोगों के लिए मेजबानी का समय भी है.

सतीश कुमार एम.
क्षेत्र प्रमुख, तृश्शूर

यात्रा सृजन

माउंट आबू

'राजाओं का स्थान' राजस्थान यूं तो अपने कठोर तापमान, सुंदर स्थापत्य-कला और शुष्क मरुस्थल के लिए प्रसिद्ध है परंतु वहीं इसका एकमात्र हिल स्टेशन माउंट आबू भी स्थित है, जो कि अपने ठंडे मौसम और हरी-भरी वादियों के लिए पर्यटकों का आकर्षण केंद्र है. यह राजस्थान राज्य के सिरोही जिले में अरावली पर्वत की पहाड़ियों पर स्थित है. यह अपनी प्राकृतिक सुंदरता, आरामदायक जलवायु, हरी-भरी पहाड़ियों, निर्मल झीलों, वास्तुशिल्पीय दृष्टि से सुंदर मंदिरों और अनेक धार्मिक स्थानों के लिए प्रसिद्ध है. यह 22 किलोमीटर लंबे और 9 किलोमीटर चौड़े पठार पर स्थित है, जो कि समुद्र तल से 1220 मीटर की ऊंचाई पर है. इस नगर का प्राचीन नाम अर्बुदांचल था.

इतिहास- इस स्थान का जिक्र पौराणिक कथाओं में भी मिलता है, जिनके अनुसार हिंदू धर्म के 33 करोड़ देवी देवता इस पवित्र पर्वत पर भ्रमण करते हैं. प्राचीन काल से ही यह साधू-संतों का निवास स्थान रहा है. ई.पू. 1190 के दौरान आबू का शासन राजा जेतसी परमार भील के हाथों में था. बाद में आबू भीम देव द्वितीय के शासन का क्षेत्र बना. इसके बाद माउंट आबू चौहान साम्राज्य का हिस्सा बना. बाद में सिरोही के महाराजा ने माउंट आबू को राजपूताना मुख्यालय के लिए अंग्रेजों को पट्टे पर दे दिया. ब्रिटिश शासन के दौरान माउंट आबू मैदानी इलाकों की गर्मियों से बचने के लिए अंग्रेजों का पसंदीदा स्थान था.

कैसे पहुंचे माउंट आबू?

माउंट आबू हिल स्टेशन गुजरात के प्रसिद्ध तीर्थ स्थल अंबाजी से 50 किलोमीटर और राजस्थान के आबूरोड शहर से 30 किलोमीटर की दूरी पर है, चूँकि यह राजस्थान का एकमात्र हिल स्टेशन है

और अंबाजी से नजदीक है, अत: यहाँ राजस्थान एवं गुजरात से अधिक संख्या में पर्यटक आते हैं.

माउंट आबू आने के लिए आप गुजरात या राजस्थान से सड़क मार्ग द्वारा सरलता से आ सकते हैं और यदि आप हवाई मार्ग से आना चाहते हैं तो नजदीकी हवाई अड्डा उदयपुर है, जिसकी दूरी 163 किलोमीटर है. रेलगाड़ी से आने पर आपको आबू रोड स्टेशन पर उतरना होगा और फिर सड़क मार्ग से माउंट आबू आया जा सकता है.

आबू रोड से माउंट आबू जाने का मार्ग बहुत ही घुमावदार और रोमांचक है. जैसे-जैसे आप पहाड़ के ऊपर की तरफ जाएंगे वायुमंडल का तापमान घटता जाएगा और मौसम में ठंडक बढ़ती जाएगी. मार्ग में आपको लंगूर, हिरण एवं दुर्लभ पक्षी भी दिख सकते हैं.

नक्की झील- माउंट आबू का सबसे महत्वपूर्ण स्थल नक्की झील है. इसे माउंट आबू का हृदय स्थल कहा जाता है. लगभग 80 फुट गहरी 1/4 मीटर चौड़ी इस झील को देखे बिना माउंट आबू की यात्रा पूरी नहीं मानी जाती है. कई किवदंतियों में से एक किवदंती यह है कि इस झील को देवताओं ने अपने नाखूनों से खोदकर बनाया था इसलिए इसका नाम नक्की (नख की मतलब नाखून) झील है.

इस झील के चारों तरफ पत्थर से बना वाकिंग ट्रेक है. माउंट आबू के ज्यादातर होटल भी इसी झील के आस-पास ही हैं. झील में आप नौकायन का लाभ उठा सकते हैं. जब आप नक्की झील में नाव की सैर करते हैं तो मंत्रमुग्ध करने वाली पहाड़ियां, आश्चर्यजनक, अद्भुत आकार की शिलायें और हरी-भरी वादियों से भरपूर नजारे आपको अभिभूत कर देते हैं. बरसात के मौसम में यह नज़ारा और भी सुंदर होता है. यहाँ से थोड़ी दूर पैदल चलने पर आपको रघुनाथ जी का मंदिर मिलेगा जहां भगवान श्रीराम की बहुत ही सुंदर प्रतिमा है.

टॉड रॉक- नक्की झील के पास से ही पहाड़ के ऊपर जाने का मार्ग है, जहाँ आपको टॉड रॉक देखने को मिलेगा. इस बड़ी चट्टान का स्वरूप मेंढक के आकार का है इसलिए इसका नाम टॉड रॉक है. इस ऊँचाई से नक्की झील एवं माउंट आबू शहर का बहुत ही सुंदर नजारा देखने मिलता है, इसे फोटोग्राफी पॉइंट के नाम से भी जाना जाता है.

गुरु शिखर- टॉड रॉक से सीढ़ियों के रास्ते से वापस आकर हम अपने वाहन से अथवा वाहन किराए पर लेकर माउंट आबू एवं राजस्थान के सबसे ऊँचाई वाले स्थान गुरु शिखर पर जा सकते हैं. माउंट आबू से गुरु शिखर की दूरी 11 किलोमीटर है. यदि आप स्वयं गाड़ी चलाकर गुरु शिखर जाएंगे तो आपको गुरुत्वाकर्षण का अनुभव महसूस होगा जिसे शब्दों में बयाँ नहीं किया जा सकता.

अरावली की पहाड़ियों का सबसे ऊँचा शिखर गुरु शिखर है. आध्यात्मिक कारणों के साथ-साथ 1772 मीटर समुद्र तल से ऊपर स्थित गुरु शिखर से माउंट आबू का विहंगम दृश्य देखने के लिए एवं प्रकृति की छटा को निहारने के लिए गुरु शिखर की यात्रा अनुपम है. गुरु शिखर पर चढ़ने से पहले भगवान दत्तात्रेय का मंदिर दिखाई देता है. वैष्णव समुदाय के लिए यह एक तीर्थ स्थल है. अब गुरु शिखर के सर्वोच्च पॉइंट पर जाइए, यहाँ से नीचे देखने पर आपको जंगल के अतिरिक्त और कुछ भी दिखाई नहीं देगा. वर्षा एवं शीत ऋतु में जाने पर आपको आपके नजदीक बादल दिखाई देंगे. यहाँ पर भी फोटोग्राफी पॉइंट है, साथ ही यहाँ विज्ञान केंद्र है, जहाँ तारामंडल से संबंधित घटनाओं पर नजर रखी जाती है, जैसे कि सूर्य ग्रहण, चंद्र ग्रहण, उल्का पिंड और भी अन्य खगोलीय घटनाओं के बारे में शोध किया जाता है.

गुरु शिखर से माउंट आबू वापस आने पर आपको अपने वाहन को चालू करने की आवश्यकता नहीं होगी और पुन: आपको गुरुत्वाकर्षण के प्रबल प्रभाव का अनुभव होगा. इसी रास्ते में आपको गरमा-गरम कॉर्न भी मिलेंगे. साथ ही मार्ग में आपको अनेक प्राकृतिक नजारे देखने मिलेंगे जो आपका मन मोह लेंगे.

दिलवाड़ा जैन मंदिर- गुरु शिखर से वापसी के मार्ग में आपको दिलवाड़ा जैन मंदिर मिलेगा. इन मंदिरों का निर्माण 11वीं शताब्दी में राजा वास्तुपाल तथा राजा तेजपाल ने कराया था. सफेद संगमरमर से बने ये मंदिर और इनके 48 स्तंभों पर की गई नक्काशी कला का उत्कृष्ट नमूना है.

यह 5 मंदिरों का समूह है जिनके नाम है विमालवसाहि मंदिर, लूना वसाही मंदिर, पित्तलहार मंदिर, श्री पार्श्वनाथ मंदिर एवं श्री महावीर स्वामी मंदिर.

माउंट आबू वन्यजीव अभयारण्य- यह माउंट आबू का प्रसिद्ध पर्यटक स्थल है. यहाँ मुख्य रूप से तेंदुए, स्लोथबियर, हिरण, सांभर, चिंकारा, भालू, जंगली सूअर और लंगूर पाए जाते हैं. 288 वर्ग किलोमीटर में फैले इस अभ्यारण्य की स्थापना 1960 में की गई थी. यहाँ पक्षियों की लगभग 250 और पौधों की 100 से ज्यादा प्रजातियां देखी जा सकती हैं. चूँकि यह स्थान काफी ऊँचाई पर स्थित है अत: यहाँ पक्षियों की दुर्लभ प्रजातियां मिलती हैं इसीलिए पक्षियों में रुचि रखने वालों के लिए यह उपयुक्त जगह है.माउंट आबू वापस आकर हम मॉल रोड मार्केट गए. यहाँ पर बहुत अच्छी स्ट्रीट मार्केट लगती है जहाँ सुंदर एवं अनोखी वस्तुएं मिलती हैं. यहाँ से यादगार स्मृतिचिह्नों की खरीददारी की जा सकती है.

विशाल शर्मा
सूचना प्रौद्योगिकी विभाग
कें. का., पवई

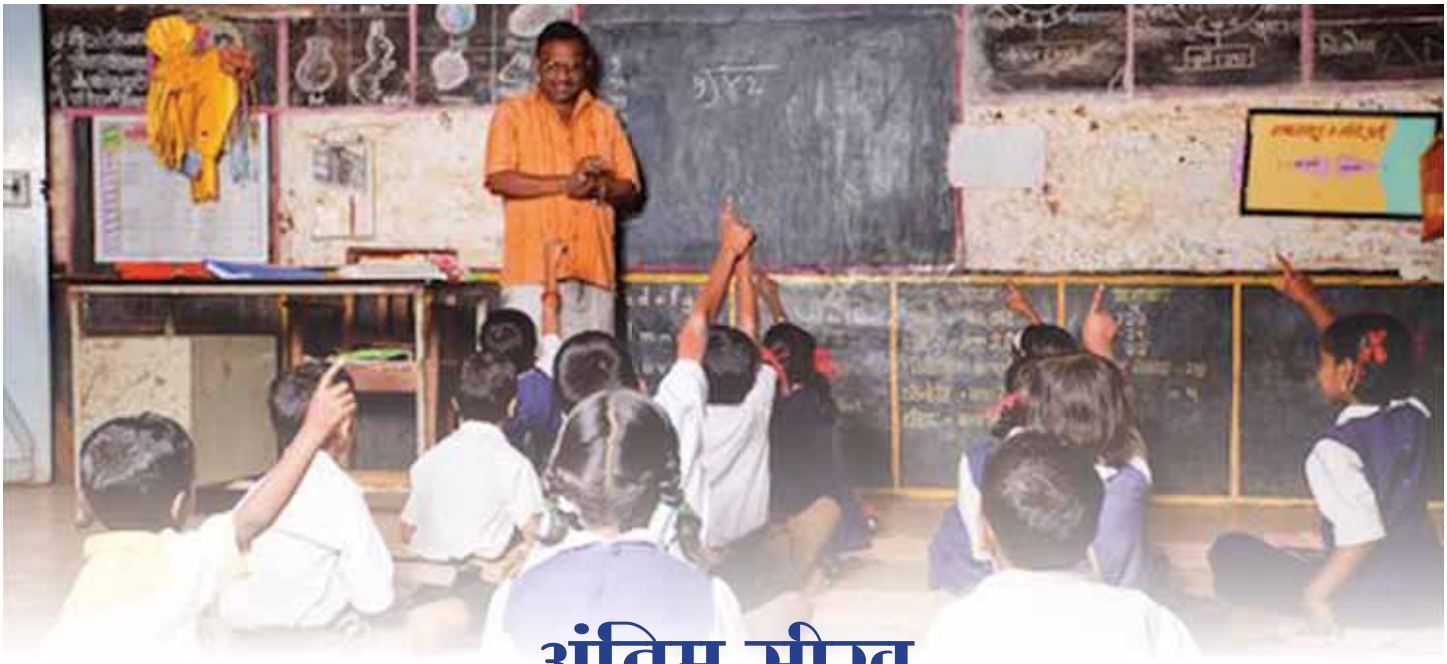

अंतिम सीख

दिनकर सर अपने विद्यार्थियों के बीच काफी लोकप्रिय एक सेवानिवृत शिक्षक थे, 3 दिन पूर्व ही शहर के एक अस्पताल में इलाज के चलते उनका देहावसान हो गया था. उनको श्रद्धांजलि देने हेतु आज प्रार्थना सभा आयोजित की गई थी. समय हो चला था इसलिए लोग एकत्रित हो रहे थे. ठीक समय पर सभा शुरू हुई. एक-एक कर उनके विद्यार्थियों ने और कुछ लोगों ने उनके व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला. अभी सभा चल ही रही थी कि एक अनजान व्यक्ति ने प्रवेश किया और यह कहते हुए सबको चौंका दिया कि अस्पताल में दिनकर सर के बेड पर तकिये के नीचे यह लिफाफा मिला, जिस पर लिखा है कि इसे मेरी प्रार्थना सभा में ही खोला जाए. दिनकर सर की इच्छा के अनुरूप एक व्यक्ति ने लिफाफा खोला. लिफाफे में एक पत्र प्राप्त हुआ. माइक से उस पत्र का वाचन शुरू किया-

प्रिय आत्मीय बंधुओ,

जब यह पत्र पढ़ा जा रहा होगा तब तक मैं संसार से विदा ले चुका होऊँगा. मेरा यह पत्र मुख्यत: शिक्षकों से अपने जीवन के अनुभव बांटने के लिए है.अगर वह इससे कुछ प्रेरणा ले सकें तो मैं अपने जीवन को धन्य समझूँगा.

बात 1975 की है. एक शिक्षक के रूप में कार्य करते हुए मुझे 20 वर्ष हो चुके थे. इसी दौरान एक बार मैं अपनी धार्मिक यात्रा पर वृंदावन गया हुआ था. वहां एक संत रामसुखदास के सत्संग में जाना हुआ. प्रवचन समाप्त होने पर मैंने अपनी जिज्ञासा उनके सामने रखी-

'स्वामीजी! मुझे ईश्वर में बहुत आस्था है परंतु मैं नियमित पूजा पाठ, कर्मकांड आदि नहीं कर पाता हूँ और इसमें मुझे रुचि भी नहीं है, कृपया बताएं मैं ईश्वर की कृपा कैसे प्राप्त करूँ.' स्वामी जी थोड़ी देर चुप रहे. कुछ देर सोच कर उन्होंने कहा -

'देखिए ! भक्ति का अर्थ होता है सेवा. अगर हम इस दुनिया को ईश्वर का ही स्वरूप माने और सभी के प्रति सद्भावना रखते हुए सेवा भाव से अच्छे कर्म करें तो यह भी ईश्वर की ही भक्ति हुई'

कुछ देर मौन रहकर स्वामी जी ने फिर प्रश्न किया- 'अच्छा यह बताओ कि तुम क्या करते हो?'

'जी मैं एक शिक्षक हूँ.'

'तुम्हें अपना यह कार्य कैसा लगता है?'

'बहुत अच्छा लगता है. बच्चों के बीच रहना और उन्हें पढ़ाना, इसमें मुझे आनंद प्राप्त होता है.'

'तो अपने इसी शिक्षक कर्म को ईश्वर की भक्ति बना लो. देखा जाए तो शिक्षक का विद्यार्थी के प्रति, व्यापारी का ग्राहक के प्रति, डॉक्टर का मरीज के प्रति, नेता का जनता के प्रति यदि सेवा का भाव मन में जागृत हो जाए तो यह यथार्थ भक्ति हुई.'

दो-तीन दिन बाद हम अपने गांव लौट आए और एक बार फिर मैं अपने स्कूल में था. स्वामी जी की बातों से तो अब बच्चों को पढ़ाने में मुझे और भी आनंद आने लगा, हालांकि जल्द ही मुझे एहसास हो गया कि ईश्वर के प्रतीक चिह्न मूर्तियों की पूजा करना तो फिर भी आसान है. कभी भी स्नान करा दो, कुछ भी भोग लगा दो. स्तुति करो तो ठीक, न करो तो ठीक. उसकी तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं, कोई नखरे नहीं. पर ये बच्चे... उफ्फ.... इनकी चंचलता, शरारतें, जिज्ञासाओं से भरा मन. कितनी कठिन है इनकी भक्ति.

समय इसी तरह निकल रहा था कि एक दिन सूचना मिली कि विजय का भयंकर एक्सीडेंट हो गया है और उसके दोनों पैर फ्रैक्चर हो गए हैं. सुनकर दुख तो हुआ परंतु हम सब के लिए यह राहत की बात थी कि वह महीने दो महीने स्कूल नहीं आएगा. इस घटना को अभी सप्ताह भर ही हुआ था कि मुझे महसूस हुआ कि शायद मेरे विचार और

भाव गलत दिशा में जा रहे हैं. हकीकत तो यह थी कि मेरी भक्ति एक कठिन परीक्षा के दौर से गुजर रही थी. विजय जैसे शरारती प्रवृत्ति के बच्चों में प्रेम और संवेदनाओं का अभाव होता है. लेकिन संवेदनाओं को तो संवेदनाएं देकर ही जागृत किया जा सकता था. अत: मैंने स्कूल समाप्त होने के बाद विजय को उसके ही घर पर जाकर पढ़ाने का निर्णय लिया.

मुझे अपने घर देखकर विजय चौंक गया. मैंने उसे लेटे रहने का इशारा किया और एक्सीडेंट के बारे में सामान्य जानकारी प्राप्त की. परीक्षा नजदीक होने से उसके लिए समय बहुत महत्वपूर्ण था. अत: उसे पढ़ाने का सिलसिला शुरू हुआ. विजय को मुझसे संवेदनापूर्ण व्यवहार की उम्मीद नहीं थी इसलिए उसे कहीं ना कहीं अपराध बोध हो रहा था. धीरे-धीरे उसे पढ़ने में मजा आने लगा. मैंने महसूस किया कि वह पढ़ाई में बहुत अच्छा था. उसकी याददाश्त भी बहुत तेज थी. मैं उसे गणित, विज्ञान और अंग्रेजी पढ़ाता और बाकी विषयों के नोट्स अपने साथी शिक्षकों से लेकर उसे देता. आठवीं 'बोर्ड' की परीक्षा थी और परीक्षा के ठीक पहले वह स्वस्थ हो गया था. उसने परीक्षा अच्छे से दी और वह 73% अंको से पास हो गया.

गरमी की छुट्टियों के तुरंत बाद मेरा ट्रांसफर अन्य जगह हो गया. समय धीरे-धीरे निकलता गया. मेरी ईश्वर भक्ति जारी रही. कई विद्यार्थी मेरे जीवन में आए. उनकी उच्च प्रतिभा में मैंने ईश्वर के दिव्य दर्शन किए.... और एक दिन मेरी सेवानिवृत्ति होते ही इस आनंदमय यात्रा पर विराम लगा. सेवा निवृत्ति के लगभग 10 वर्ष बाद और इस पत्र को लिखने के 8 दिन पहले अचानक मेरा ब्लड प्रेशर बहुत बढ़ गया और मैं बेहोश हो गया. जब होश आया तो मैंने स्वयं को शहर के बड़े अस्पताल के आईसीयू वार्ड में एक बिस्तर पर पाया.

'मुझे क्या हुआ है?' एक नर्स से मैंने पूछा. 'कुछ ही देर में डॉक्टर राउंड पर आने वाले हैं, वो ही बता पाएंगे' कहते हुए नर्स चली गई. करीब 15 मिनट बाद डॉक्टर एक नर्स के साथ मेरे बेड पर आए. डॉक्टर ने मेरी फाइल ली कुछ पढ़ा और मुझे गौर से देखकर उसने आश्चर्यचकित होकर कहा- 'सर ...आप यहां..?'

'हां! पर क्या आप मुझे पहचानते हैं? मैंने डॉक्टर से पूछा.

'हां! पर शायद आपने मुझे नहीं पहचाना.'

'बिल्कुल सही है मैंने आपको नहीं पहचाना'

मैं विजय..... वही विजय जिसे आपने आठवीं कक्षा में पढ़ाया था डॉक्टर ने चरण स्पर्श करते हुए कहा.

'अरे हां. तुम तो विजय हो!, परंतु इस अस्पताल में क्या कर रहे हो?'

'सर मैं यहां पर हार्ट सर्जन हूँ और मेरी किस्मत बदलने वाले कोई और नहीं बल्कि आप हैं. कुसंगति में पड़कर मेरा भविष्य तो अंधकारमय हो चला था, परंतु आपके प्रेम और संवेदनाओं ने मेरा जीवन ही बदल दिया. मुझे आपसे ही आत्मविश्वास मिला. मेरी पढ़ने में रुचि बढ़ गई और मैं यहां तक आ पहुँचा.'

'अरे वाह.... तुमने तो मुझे खुश कर दिया.'

विजय मेरी फाइल देख रहा था और अचानक उसका चेहरा गंभीर हो गया. 'मुझे क्या हुआ है! विजय?'

'कुछ नहीं सर,आप जल्दी ही ठीक हो जाएंगे' कहते हुए वह चला गया.

मैं लेटे-लेटे उन दिनों की स्मृतियों में खोया हुआ था कि मुझे नींद में समझकर दो नर्स आपस में बातें करने लगी - 'पहली बार विजय सर को रोते हुए देखा है, आखिर ऐसी भी क्या बात है?'

'ये अंकल, विजय सर के टीचर हैं. इन्हे सीवीयर हार्ट अटैक हुआ है. कल शाम 6 बजे तक रिकवर कर लिया तो ठीक वरना बचना मुश्किल है'

अपनी स्थिति का यथार्थ मालूम होने पर भी मैं चिंतित नहीं था. रात में मैंने महसूस किया कि कोई मेरे पैर पकड़कर सुबक रहा था. देखा तो यह विजय था. मैंने उसे अपने पास बुलाया - 'तू अपना कर्तव्य कर, डॉक्टर के रूप में अपना फर्ज निभा. पर सच तो यह है आज तुझसे मिलने के बाद तुझे इतने बड़े हॉस्पिटल का डॉक्टर बना देखकर मुझे मेरा रिपोर्ट कार्ड मिल गया. अगर भक्ति की परिणति परम शांति के रूप में होती है तो अब मैं पूर्णतया संतुष्ट हूँ. एक शिक्षक के रूप में मेरी भक्ति को ईश्वर ने स्वीकार कर लिया. अब मुझे कुछ नहीं चाहिए. एक तृप्ति दायक और आनंददायक मृत्यु मेरा इंतजार कर रही है. मैं चला भी गया तो मेरे जाने का शोक मत करना.... एक डॉक्टर के रूप में दुखियों की सेवा करना.'

मुझे कब नींद आ गई पता नहीं. सुबह उठकर खिड़की से मैंने अंतिम बार सूर्य के दर्शन किए. शायद सूर्यास्त न देख पाऊं. आज 6 बजने में लगभग 3 घंटे हैं जब मैंने यह पत्र लिखना शुरू किया. मेरा यह पत्र इस बात की गवाही देने के लिए है कि सच्चे भाव से की गई सेवा कभी व्यर्थ नहीं जाती.

मेरा शिक्षक साथियों से यही कहना है कि अपना महत्व समझो..... ये डॉक्टर,.... इंजीनियर, कलेक्टर, ... मंत्री, ... संत्री... यह सब तुमने ही तो बनाए हैं. ..... तुम ही तो शिल्पकार हो इन सबके..... अपने गौरव को पहचानो,.... उत्तरदायित्व को समझो,..... राष्ट्र के निर्माता हो तुम... ... कोई मामूली इंसान नहीं हो तुम. .... वो देखो छुट्टियां खत्म होने वाली हैं..... वो देखो स्कूल का गेट खुलने वाला है.. शिक्षा के पवित्र स्थान को बुहार लिया या नहीं तुमने. पूजा की थाल सजाई कि नहीं अब तक ..... तुम्हारा ईश्वर, वाहेगुरु बस प्रवेश करने ही वाला है.

अच्छा.. अब... अलविदा..... अलविदा... अलविदा.

पत्र का वाचन समाप्त हुआ. बहुत देर तक सभी खामोश रहे. अचानक सभी को ऐसा महसूस हुआ कि जैसे 'दिनकर सर' कहीं गए नहीं हैं... यहीं हैं... जीवित हैं... हम सबके भीतर ..... एक प्रेरणा बनकर...

रजनी शर्मा
क्षे. का., इंदौर

भारत में लोकतंत्र

हालही में भारत में 18वीं आम लोकसभा चुनावों का आयोजन हुआ, जिसे लोकतंत्र का महोत्सव कहा गया है. भारतीय निर्वाचन आयोग ने इस विशाल चुनाव का सफलतापूर्वक आयोजन करके पूरे विश्व में देश की गरिमा बढ़ाई. लगभग 66 करोड़ लोगो ने अपने मताधिकार का प्रयोग कर इस बात का प्रमाण दिया कि भारत लोकतंत्र की भूमि है. इस पूरी प्रक्रिया में भारतीय नागरिकों की लोकतंत्र के प्रति भूमिका, योगदान एवं निष्ठा सराहनीय थी. इसका श्रेय भारत में जन्म लिए और विकसित हुए लोकतंत्र के मूल्यों को जाता है. हाँ आपने सही पढ़ा. लोकतंत्र के मूल्यों की उत्पत्ति भारत वर्ष से ही हुई है. इसके कई प्रमाण उपलब्ध हैं.

यद्यपि आधुनिक लोकतंत्र को ग्रीक के एथेंस में प्राचीन समय में चलित शासन प्रणाली या फिर फ्रेंच राज्यक्रांति के स्वतंत्रता, समता और बंधुता आदि मूल्यों से जोड़ कर देखा जाता है, तथापि भारत में इन मूल्यों की बहुत पुरानी परंपरा देखने को मिलती है. ऐसा कहना गलत नहीं होगा कि लोकतंत्र का सिद्धांत वेदों की ही देन है. सभा और समिति का उल्लेख ऋग्वेद एवं अथर्ववेद दोनों में मिलता है. जिसमें राजा, मंत्री एवं विद्वानों से विचार विमर्श करने के बाद ही कोई फैसला लेते थे.

संसद शब्द का उल्लेख महाभारत के शांति पर्व में मिलता है. संसद को एक सभा के रूप में देखा जाता था जिसमें आम जनता के लोग मिलकर निर्णय प्रक्रिया में भाग लेते थे. बौद्ध काल में भी लोकतन्त्र व्यवस्था देखी जा सकती है. तत्कालीन जनपदों में जैसे कि लिच्छावी, वैशाली, काम्बोज आदि में लोकतांत्रिक व्यवस्था होने के प्रमाण हैं. स्वतन्त्रता, समता, बंधुता आदि लोकतंत्र के मूल्य भी बुद्ध धम्म से प्रेरित हैं. आइए लोकतंत्र को थोड़ा अधिक विस्तार से जानते हैं.

लोकतंत्र को अंग्रेजी में डेमोक्रेसी कहा जाता है. विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्र, भारत के नागरिक होने के नाते आप इस शब्द को भलीभांति जानते होंगे. लोकतंत्र एक शासन प्रणाली है. लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली सत्ता में जन-भागीदारी सुनिश्चित्त करती है. यही इसकी सबसे बेहतर खासियत है. डेमोक्रेसी शब्द दो ग्रीक शब्दों से बना है 'डेमोस' और 'क्रेटोस'. डेमोस का मतलब है लोग, और क्रेटोस का मतलब होता है शासन. इस तरह डेमोक्रेसी का सही अर्थ जनता का शासन होता है, जिसे हिंदी में लोकतंत्र कहते हैं.

वास्तव में, लोकतंत्र में कोई राजा नहीं होता है. सत्ता प्रजा के हाथ में होती है. सबको समान अधिकार मिलते हैं. हर किसी को अपनी बात रखने का अधिकार है. इसलिए, इसे आधुनिक व प्रगतिशील शासन-प्रणाली कहा जाता है. यह वह शासन प्रणाली है, जहाँ जनता शक्तिशाली होती है, और शासक उनके चुने गए मात्र प्रतिनिधि होते हैं. शासक चयनित समय के लिए लोगों के प्रति निर्णय लेने का काम करते हैं.

लोकतंत्र दो प्रकार का होता है. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लोकतंत्र. प्राचीन एथेंस के कई शहरों में प्रत्यक्ष लोकतंत्र को अपनाया गया था. इसमें सभी लोग मिलकर निर्णय प्रक्रिया में भाग लेते थे. हालांकि उसमें भी कुछ अपवाद थे. सिर्फ सैन्य प्रशिक्षण पूरा किए हुए वयस्क पुरुषों को ही हिस्सा लेने दिया जाता था. महिलाएं, गुलाम एवं सामान्य नागरिक इसमें भाग नहीं ले सकते थे. प्राचीन भारत के महाजनपदों में लिच्छावी गणराज्य में भी, कुलीनों के एक समूह द्वारा शासन से जुड़े निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते थे. आज के समय में ग्रामसभा में लिए जाने वाले निर्णय प्रत्यक्ष लोकतंत्र का ही उदहारण है.

अप्रत्यक्ष लोकतंत्र प्रणाली में मतदाता एक निश्चित अवधि के लिए मतदान द्वारा अपने

प्रतिनिधि का चुनाव करता है, जो शासन के लिए जिम्मेदार होते हैं. मतदान का अधिकार किसी भी जाति, धर्म, लिंग, वंश, आर्थिक स्थिति आदि के भेदभाव के बिना उचित आयु के सभी नागरिकों को दिया जाता है. इस प्रकार मतदाता अप्रत्यक्ष रूप से शासन प्रक्रिया में अपना स्थान पाते हैं. इसे प्रतिनिधिक लोकतंत्र भी कहा जाता है. भारत , जापान, ऑस्ट्रेलिया, अमेरिका एवं इंग्लैंड में प्रतिनिधिक लोकतंत्र की ही शासन प्रणाली है. अधिक लोगों के लिए जब प्रत्यक्ष लोकतंत्र अपनाना मुश्किल बन जाता है, तो राष्ट्र के तौर पर अप्रत्यक्ष लोकतंत्र ही एक बेहतर और कारगर विकल्प के रूप में खरा उतरता है.

भारत का लोकतंत्र अप्रत्यक्ष लोकतंत्र होने के साथ-साथ संवैधानिक लोकतंत्र भी है. यहाँ शासन का पालन संविधान में लिखित नियमों के दायरे में रहकर करना होता है. इसमें संसदीय कार्यपद्धति के साथ-साथ न्यायिक व्यवस्था और नागरिकों के मूलभूत अधिकारों को भी संवैधानिक सुरक्षा बहाल की गयी है. यह इसलिए भी जरूरी है कि कोई शासनकर्ता अपने बहुमत के आधार पर मनमानी न करे और लोक कल्याणकारी योजनाओं को ही बढ़ावा दे. एक विस्तृत और लिखित संविधान होने के कारण जब-जब सत्ता में रहने वाली पार्टी अपने अधिकारों का दुरुपयोग करने लगती है, न्यायव्यवस्था उसे नकार देती है.

इस प्रकार लोक कल्याणकारी राज्य की संकल्पना और सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित हो जाती है.

भारत की आजादी के समय कई राजकीय विद्वानों ने यह भविष्य वाणी की थी कि भारत में लोकतंत्र ज्यादा समय टिक नहीं पाएगा. उनका कहना था कि भारत के लोग उतने पढ़े लिखे नहीं हैं, यहाँ अधिकतर लोग गरीब हैं, यहाँ आधुनिक विचारों का प्रसार नहीं हुआ है. इन कारणों से भारत में लोकतंत्र असफल रहेगा. लेकिन वे यह भूल गए थे कि, लोकतंत्र के मूल्यों की परम्परा तो भारत में वेदों के काल से चली आ रही है. स्वतंत्रता, समता और बंधुता आदि शाश्वत मूल्यों से ही यहाँ के समाज की नींव रखी गयी है.

आज जब आजादी के 77 साल बाद और 18वें आम चुनाव के बाद जब भारतीय लोकतंत्र समय के नक़्शे पर खरा उतरा है तो दुनिया भर के राजकीय वैज्ञानिक इसे और बेहतर तरीके से समझने हेतु शोध कार्यो में अपना समय लगा रहे हैं. यही भारत के लोकतंत्र और भारतीय नागरिकों की जीत है.

लोकतंत्र की व्याख्या दुनिया के कई विद्वानों ने की है. लेकिन इसमें सबसे ज्यादा चिर परिचित अगर कोई व्याख्या है तो वह है, लोकतंत्र जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए शासन है. अमेरिका के 16 वे राष्ट्रपति, अब्राहम लिंकन जी की यह व्याख्या भारतीय लोकतंत्र पर काफी हद तक लागू होती है.

निश्चित है कि भारतीय लोकतंत्र में आज भी कुछ खामिया होंगी. उन खामियों को दूर करते हुए आने वाले समय में भारतीय लोकतंत्र को और भी लोकाभिमुख बनाने की जिम्मेदारी भारत वर्ष के सभी नागरिकों की है. मुझे पूर्ण विश्वास है कि आने वाली पीढ़ी भी लोकतंत्र के इस भारतीय ढांचे के लाभ ले पायेगी.

स्नेहा नवटाके
शंकर नगर शाखा
क्षे. का., रायपुर

पट्टचित्र चित्रकारी

पट्टचित्र ओडिशा और पश्चिम बंगाल की पारंपरिक चित्रकला है. ओडिशा की पट्टचित्र और पश्चिम बंगाल की पट्टचित्र चित्रकारी में कई अंतर हैं जिसके कारण इन्हें ओडिशा पट्टचित्र एवं बंगाल पट्टचित्र के नाम से जाना जाता है. हालांकि ओडिशा को ही पट्टचित्र कला की उत्पत्ति का मुख्य केंद्र माना गया है.

ओडिशा की चित्रकला को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है. कपड़े पर चित्रकारी या 'पट्टचित्र', दिवारों पर चित्रकारी या 'भित्ती चित्र' और ताड़ के पत्ते पर चित्रकारी 'ताल पत्र चित्र या पोथी चित्र'.

चित्रकला (पट्टचित्र) की यह शैली ओडिशा की सबसे पुरानी, पारंपरिक और भारतीय लोक कला है. यह एक अत्यंत अनोखी कला है और इसे बनाने के लिए उच्च स्तर के कौशल की आवश्यकता होती है. पट्ट का अर्थ है 'कैनवास/कपड़ा' और चित्र का अर्थ है 'चित्र या पेंटिंग'. पट्टचित्र सिर्फ एक कला नहीं है बल्कि यह समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं, धार्मिक अनुष्ठानों, त्यौहारों और सामाजिक

कार्यक्रमों को भी दर्शाता है. इसके माध्यम से नई-नई पीढ़ियों को धार्मिक कहानियाँ और पौराणिक कथाएँ बताई जाती हैं. एक उत्कृष्ट कला होने के साथ-साथ यह भारतीय संस्कृति और परम्परा का भी एक महत्वपूर्ण हिस्सा है. पट्टचित्र ओडिशा की प्राचीन कलाकृतियों में से एक है, जिसे मूल रूप से अनुष्ठान के उपयोग के लिए और पुरी के तीर्थयात्रियों के लिए स्मृति चिह्न के रूप में बनाया गया था.

पट्टचित्र मुख्य रूप से धार्मिक और पौराणिक कथाओं को चित्रित करता है. पट्टचित्र कला की जड़ें लगभग 5000 साल पुरानी हैं. इसका संबंध पुरी में स्थित जगन्नाथ भगवान के मंदिर से है. इसकी उत्पत्ति भगवान जगन्नाथ की कहानियों को चित्रित करने के एक तरीके के रूप में हुआ है. साथ ही यह भी मान्यता है कि जब भगवान जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा की मूर्तियों को हर साल स्नान कराया जाता है, तो उस समय इन मूर्तियों को सूखने के लिए बाहर लाया जाता है और उस समय इन मूर्तियों को पट्टचित्रों से सजाया जाता है. पट्टचित्र में उपयोग किए जाने वाले रंग, वस्तुएँ, शैली, प्रक्रिया सबकी अपनी अलग विशेषता है.

पट्टचित्र बनाने का मुख्य केंद्र ओडिशा में पुरी और उसके पास मुख्यत: रघुराजपुर गाँव है. रघुराजपुर, पुरी का एक विरासत शिल्प गाँव है जो अपनी उत्कृष्ट पट्टचित्र चित्रकारों के लिए जाना जाता है. यह गांव शिल्प गुरु डॉ जगन्नाथ महापात्र का जन्मस्थान भी है, जो एक प्रमुख पट्टचित्र कलाकार हैं. रघुराजपुर गांव और पट्टचित्र कला के विकास में इनका महत्वपूर्ण योगदान है.

पट्टचित्र दो प्रकार के होते हैं, एक है 'जोदानो' चित्र, जिसका अर्थ होता है लपेटा हुआ. यह एक लंबा या क्षैतिज स्क्रॉल होता है जिसकी लंबाई 20 फिट तक की हो सकती है, इसके विभिन्न वर्गों में किसी कहानी और घटना के विभिन्न पहलुओं का चित्रण मिलता है. दूसरा रूप है, 'चौको' चित्र जिसका अर्थ वर्ग है, इस प्रकार की पेंटिंग में पौराणिक घटनाओं का चित्रण होता है. इस चित्रकला के जरीए लोगों तक महत्वपूर्ण संदेश भी प्रेषित किए जाते हैं.

पट्टचित्र को पाँच प्राकृतिक रंगों - हिंगुला, हरितला, काला, शंख और गेरू में चित्रित किया जाता है जो मुख्यत: सिंदूरी, हरा, काला, मोती जैसा सफ़ेद और ईट जैसा नारंगी होता है. इस कला में चित्रकार अपने रंग खुद तैयार करते हैं. सफ़ेद रंग बनाने के लिए सीपियों के चूर्ण को पानी में डाला जाता है जिससे दूधिया सफ़ेद रंग तैयार हो जाता है. इसके लिए काफी धैर्य की आवश्यकता होती है. लाल रंग के लिए 'हिंगुला' नामक खनिज का प्रयोग किया जाता है. पीले रंग के लिए पत्थर के तत्वों का राजा 'हरितला', 'रामराजा' एक प्रकार का नील या स्थानीय पत्थर 'खंडनील' से नीला रंग बनाया जाता है. शुद्ध नारियल के खोल को जलाकर या मिट्टी के बर्तन को जलते दिये से निकलने वाले धुएँ के ऊपर रखा जाता है जिससे काला रंग तैयार होता है. कैथा (कबीट) या बेल के रस को चूर्ण में मिलाकर गोंद बनाया जाता है. पट्टचित्र में उपयोग किए जाने वाले सभी रंग प्राकृतिक एवं चमकीले होते हैं, इन पाँच रंगों को मिलाकर इससे 120 रंग और बनाए जाते हैं.

पट्टचित्र बनाने की प्रक्रिया बहुत ही जटिल है. इसमें काफी मेहनत और धैर्य की आवश्यकता होती है. यह एक स्क्रॉल पेंटिंग है जिसे कपड़े, ताड़ के पत्ते और सूखे नारियल के गोले पर बनाया जाता है. पट्टचित्र सूती कपड़े की छोटी पट्टियों पर की जाती है. कपड़े पर ग्वार या इमली के बीजों से बने चाक और गोंद के मिश्रण को लगाकर कैनवास तैयार किया जाता है. फिर दो अलग-अलग पत्थरों की मदद से इसे रगड़ा जाता है और फिर कपड़े को सुखाया जाता है ताकि वह कठोर और चिकना हो जाए. इसके बाद बारीक ब्रश और नक्काशीदार औजारों का उपयोग कर चित्रण किया जाता है. इसमें उपयोग किए जाने वाले रंग प्राकृतिक रंग होते हैं जो पौधों, खनिजों और अन्य प्राकृतिक स्रोतों से प्राप्त किए जाते हैं. चित्र बनाने के बाद पेंटिंग के किनारे को तैयार किया जाता है फिर हल्के लाल एवं पीले रंग का उपयोग करके स्केच बनाया जाता है. साधारणत: इसमें सफ़ेद, लाल, पीले और काले रंग इस्तेमाल किए जाते हैं.

बदलते मौसम से बचाने के लिए पट्टे पर लाह की परत चढ़ाई जाती है, जिससे पेंटिंग चमकदार हो जाती है. ग्लेजिंग या वार्निशिंग की यह प्रकिया काफी रोचक है. पेंटिंग को जलप्रतिरोधी, टिकाऊ और चमकदार बनाने के लिए इसे चारकोल की जलती आग के ऊपर रखा जाता है और पेंटिंग की सतह पर महीन लाह लगाया जाता है.

इस चित्रकला में बनाए जाने वाले कुछ लोकप्रिय विषय हैं जैसे भगवान जगन्नाथ दरबार पेंटिंग का चित्रण, कृष्ण लीला, भगवान विष्णु के दस अवतार, भगवान गणेश का पाँच मुख वाले देवता के रूप में चित्रण तथा हिन्दू देवी-देवताओं, रामायण, महाभारत और भगवद् गीता के प्रकरण का चित्रण है. चित्रों में ओड़िसी नृत्यांगना और ओडिशा की लोककथाओं का भी चित्रण किया गया है.

आजकल, पट्टचित्र कला का उपयोग कपड़े, बर्तन और घरेलू सजावट के सामानों पर भी किया जा रहा है ताकि इसकी लोकप्रियता और बाजार मूल्य बढ़े. भारत में तो पट्टचित्र कला शैली का व्यापक प्रचार-प्रसार है लेकिन डिजिटलीकरण और वैश्वीकरण की वजह से आज इस कला की प्रसिद्धि विश्व स्तर पर भी हो रही है.

प्रीति साव
क्षे. का., भुवनेश्वर

आओ ध्यान लगाएं !

ध्यान एक सदियों पुरानी प्रथा है जिसे मानसिक, भावनात्मक और शारीरिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए लोकप्रियता हासिल है. ध्यान मन और शरीर दोनों के लिए असंख्य लाभ प्रदान करता है. यह तनाव को कम करने में मदद करता है, एकाग्रता में सुधार करता है, भावनात्मक कल्याण और आंतरिक शांति की भावना को बढ़ावा देता है. वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चला है कि नियमित ध्यान रक्तचाप को कम कर सकता है, प्रतिरोधक प्रणाली को बढ़ावा दे सकता है और समग्र संज्ञानात्मक कार्य को बढ़ा सकता है. आज की गतिशील दुनिया में, जहाँ तनाव और व्याकुलता प्रचुर मात्रा में है, मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए ध्यान के लिए समय निकालना महत्वपूर्ण है. ध्यान के मूल सिद्धांत में मन को केंद्रित करना और आंतरिक शांति की स्थिति प्राप्त करना शामिल है, कई अलग-अलग प्रकार की ध्यान पद्धतियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक का अपना विशेष दृष्टिकोण और उद्देश्य है.

1. सचेतन ध्यान: सचेतन ध्यान शायद ध्यान के सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से प्रचलित रूपों में से एक है. इसमें किसी का ध्यान बिना किसी निर्णय के वर्तमान क्षण पर लाना शामिल है. अभ्यासकर्ता अक्सर अपनी सांस, शारीरिक संवेदनाओं या अपने आस-पास के वातावरण पर ध्यान केंद्रित करते हैं. लक्ष्य किसी के विचारों, भावनाओं और अनुभवों के उत्पन्न होने पर उनके प्रति जागरूकता और स्वीकृति पैदा करना है.

2. भावातीत ध्यान (टीएम): भावातीत ध्यान एक ऐसी पद्धति है जहां अभ्यासकर्ता चुपचाप एक मंत्र को अपने आप में दोहराते हैं, जिससे मन गहरी छूट और बढ़ती जागरूकता की स्थिति में स्थापित होने लगता है. प्रत्येक व्यक्ति को उनकी व्यक्तिगत विशेषताओं के आधार पर एक विशिष्ट मंत्र दिया जाता है. भावातीत ध्यान का लक्ष्य सामान्य सोच से परे जाकर चेतना के गहरे स्तर तक पहुंचना है.

3. प्रेम-कृपा ध्यान: प्रेम-कृपा ध्यान, जिसे मेट्टा ध्यान के रूप में भी जाना जाता है, स्वयं और दूसरों के प्रति करुणा, प्रेम और सद्भावना की भावनाओं को विकसित करने पर केंद्रित है. अभ्यासकर्ता आम तौर पर ऐसे वाक्यांशों या प्रतिज्ञानों को दोहराते हैं जो प्रेम-कृपा व्यक्त करते हैं, इन भावनाओं को पहले खुद की ओर निर्देशित करते हैं और फिर धीरे-धीरे दूसरों को शामिल करने के लिए विस्तार करते हैं.

4. निर्देशित ध्यान: निर्देशित ध्यान में एक विशिष्ट ध्यान अभ्यास के माध्यम से अभ्यासकर्ताओं का नेतृत्व करने के लिए एक शिक्षक, मार्गदर्शक या रिकॉर्ड किए गए ऑडियो के निर्देशों का पालन करना शामिल है. इसमें निर्देशित कल्पना, विश्राम तकनीक, मानसिक दर्शन और सचेतन अभ्यास शामिल हो सकते हैं. निर्देशित ध्यान विशेष रूप से शुरुआती लोगों या ऐसे व्यक्तियों के लिए सहायक है, जिन्हें स्वयं ध्यान करना चुनौतीपूर्ण लगता है.

5. संचलन ध्यान: संचलन ध्यान में अभ्यास में सचेतन संचलन शामिल होता है, जैसे योग, ताई ची, या वॉकिंग मेडिटेशन. सांस के साथ गति को समकालिक करके और शारीरिक संवेदनाओं के प्रति जागरूकता पैदा करके, संचलन ध्यान मन को शांत करने और आंतरिक शांति को बढ़ावा देने के लिए एक गतिशील दृष्टिकोण प्रदान करता है.

6. मंत्र ध्यान: भावातीत ध्यान के समान, मंत्र ध्यान में किसी शब्द, वाक्यांश या ध्वनि (मंत्र) को चुपचाप अपने आप को दोहराना

शामिल है. दोहराया गया मंत्र मन के लिए एक केंद्र बिंदु के रूप में कार्य करता है, जिससे अभ्यासकर्ताओं को गहरी एकाग्रता, विश्राम और बढ़ी हुई जागरूकता की स्थिति में प्रवेश मिलता है.

7. श्वास जागरूकता ध्यान: श्वास जागरूकता ध्यान में अपना ध्यान सांस की प्राकृतिक लय पर केंद्रित करना शामिल है. इसे नियंत्रित करने या हेरफेर करने की कोशिश किए बिना साँस लेने और छोड़ने का निरीक्षण करके, अभ्यासकर्ता सचेतनता और उपस्थिति विकसित करते हैं. श्वास जागरूकता ध्यान का अभ्यास बैठकर, लेटकर या योग जैसी गति-आधारित प्रथाओं के हिस्से के रूप में किया जा सकता है.

ध्यान के कई प्रकार हैं, प्रत्येक की अपनी प्रक्रिया और उद्देश्य हैं, अंतर्निहित लक्ष्य एक ही है: मन को शांत करना, जागरूकता पैदा करना और चेतना की गहरी अवस्था तक पहुँचना. चाहे आप सचेतनता, प्रेम-कृपा, या संचलन-आधारित प्रथाओं के प्रति आकर्षित हों, विभिन्न प्रकार के ध्यान की खोज से आपको एक ऐसी तकनीक खोजने में मदद मिल सकती है जो आपके साथ मेल खाती है और आपकी भलाई का समर्थन करती है.

प्रीती अग्रवाल
क्षे. का., इंदौर

नराकास, बेलगावी द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बेलगावी को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 29.04.2024 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.) क्षे. का. का, (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती आरती रौनियार, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री वेद प्रकाश, सहायक प्रबंधक (रा. भा.).

नराकास, गाजियाबाद द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, गाजियाबाद को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 22.05.2024 को श्री छबिल कुमार मेहेर (का.), उप निदेशक, क्षे. का. का. (उत्तरी क्षेत्र - 2), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री विनोद कुमार, मुख्य प्रबंधक तथा श्री विशाल दीक्षित, प्रबंधक (रा.भा).

नराकास, आजमगढ़ द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, आजमगढ़ को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 08.05.2024 को श्री मनीष कुमार, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री सावन सौरभ, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, गोंडा द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, अयोध्या की गोंडा, शाखा को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 28.05.2024 को श्री हेमंत मिश्र, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री संतोष कुमार, शाखा प्रमुख तथा श्री रतन कुमार सिंह, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, उडुपि द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, उडुपि को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 20.06.2024 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री नरेश कुमार वाई, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री शुभम राय, सहायक प्रबंधक (रा.भा).

नराकास, जोधपुर द्वारा वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, जोधपुर को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 25 जून 2024 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (का.), क्षे. का. का. (उत्तर-1), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रदीप कुमार निर्वाण, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री विकास तिवाड़ी, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, सिलीगुड़ी द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, सिलीगुड़ी को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 21.06.2024 को पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बिश्वजित हालदार, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री कृष्णा साव, प्रबंधक (रा. भा.).

नराकास, आणंद द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय आणंद को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 27.06.2024 को श्री राजकुमार महावर, अध्यक्ष (नराकास) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्रीमती ऋचा जाजोरिया, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री राजेश जोशी, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, श्रीरामपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, हावड़ा के अंतर्गत श्रीरामपुर शाखा को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 28.06.2024 को श्री निर्मल दुबे, उपनिदेशक (का.) क्षे. का. का. (पूर्वी क्षेत्र), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री बिजय कुमार, शाखा प्रमुख तथा श्री अमित महतो, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, लुधियाना द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, लुधियाना को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 27.06.2024 को श्री नरेंद्र कुमार मेहरा, सहायक निदेशक (का.), क्षे. का. का.उत्तर-1, श्री परमेश कुमार, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री राकेश कुमार मित्तल, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री अमित कुमार झा, सहायक प्रबंधक (रा.भा)

नराकास, हैदराबाद द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु अंचल कार्यालय, हैदराबाद को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 28.05.2024 को श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का., (दक्षिण), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री अजय कुमार, उप अंचल प्रमुख तथा श्री देवकांत पवार, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.)

नराकास, हरदोई द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, बरेली के अंतर्गत मुख्य शाखा, हरदोई को द्वितीय पुरस्कार प्रदान किया गया. डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का., (उत्तरी क्षेत्र - 2), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए सुश्री शशि लता, शाखा प्रमुख तथा श्री राधा रमन शर्मा, प्रबंधक(रा.भा).

नराकास, नोएडा द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, गाजियाबाद के अंतर्गत नोएडा सेक्टर-62 शाखा को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 19.06.2024 को श्री चंडी कुमार, मुख्य प्रबंधक तथा श्री विशाल दीक्षित, प्रबंधक(रा.भा) पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

नराकास, कानपुर द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, कानपुर को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 17.05.2024 को डॉ. छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का. (उत्तरी क्षेत्र - 2), से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री हरीश कुमार जैन, उप क्षेत्र प्रमुख तथा सुश्री प्रेमा पाल, प्रबंधक (रा.भा.).

नराकास, नासिक द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, नासिक को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 26.06.2024 को श्री श्रीरंग कोठे, अध्यक्ष, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए श्री प्रभात कुमार, क्षेत्र प्रमुख तथा श्री जगमोहन दुबे, प्रबंधक (रा.भा.)

नराकास, विजयवाडा द्वारा वित्तीय वर्ष 2023-24 हेतु अंचल कार्यालय, विजयवाडा को विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया. दिनांक 24.05.2024 को श्री सी वी एन भास्कर राव, अंचल प्रमुख तथा श्रीमती ए शारदा मूर्ती, उप अंचल प्रमुख ने पुरस्कार प्राप्त किया.

दिनांक 23.05.2024 को श्री टी एस श्याम सुंदर, अध्यक्ष, नराकास एव क्षेत्र प्रमुख, कोच्चि की अध्यक्षता में नराकास, कोच्चि की 71वीं अर्ध वार्षिक बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 24.05.2024 को श्री सी वी एन भास्कर राव, अध्यक्ष, नराकास एवं अंचल प्रमुख की अध्यक्षता में नराकास (बैंक एवं बीमा), विजयवाड़ा, की अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया.

दिनांक 26.06.2024 को नराकस, सीधी की अर्धवार्षिक बैठक की अध्यक्षता श्री जगमोहन, अध्यक्ष, नराकास एवं क्षेत्र प्रमुख द्वारा की गई.

नराकास (बैंक) रीवा की अर्धवार्षिक बैठक दिनांक 14.06.2024 को श्री अजय खरे, अध्यक्ष, नराकास एवं क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

श्री संतोष कुमार, अध्यक्ष, नराकास एवं क्षेत्र प्रमुख की अध्यक्षता में तथा छबिल कुमार मेहेर, उप निदेशक (का.), क्षे. का. का., (उत्तरी क्षेत्र - 2) की उपस्थिति में क्षे. का. प्रयागराज द्वारा दिनांक 23.04.2024 को नराकास (बैंक एवं बीमा), प्रयागराज की 19वीं अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन किया गया.

एक दिवसीय कार्यशाला

दिनांक 08.05.2024 को अंचल कार्यालय, मुंबई के संयोजन में मुंबई अंचल के अंतर्गत सभी क्षेत्रीय कार्यालयों की संयुक्त हिंदी कार्यशाला के दौरान. श्री अभिजीत बसाक, मुख्य महाप्रबंधक एवं अंचल प्रमुख, श्री अनिल कुरील, मुख्य महाप्रबंधक एवं मुख्य प्रौद्योगिकी अधिकारी, डीआईटी, श्री गिरीश जोशी, महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.) एवं श्री विवेकानंद, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) उपस्थित रहे.

दिनांक 18.05.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन डॉ इन्दु के वी, एसोसियेट प्रोफेसर, केरल विश्वविद्यालय, श्री दासरि वेंकट रमण, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 01.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, एर्णाकुलम में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री टी. एस. श्याम सुंदर, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 06.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु उत्तर में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार के द्वारा किया गया.

दिनांक 07.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, आणंद द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. क्षेत्र प्रमुख श्रीमती ऋचा जाजोरिया, उप क्षेत्र प्रमुख, श्री रमेश बजरोलिया एवं श्री भानु प्रताप सिंह द्वारा प्रतिभागियों को संबोधित किया गया.

दिनांक 15.05.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, पटना में आयोजित हिंदी कार्यशाला के अवसर पर उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए श्री रणजीत सिंह, क्षेत्र प्रमुख, पटना

दिनांक 28.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, हिसार में हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री नितिन नेगी, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 12.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता मेट्रो द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. इस अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में श्री निर्मल दुबे, सहायक निदेशक (का.), क्षे. का. का., (पूर्वी क्षेत्र) उपस्थित रहे.

दिनांक 15.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, राजमंड्री द्वारा हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 28.05.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, दुर्गापुर द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री दीपक कुमार गुप्ता, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया.

दिनांक 21.05.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, मैसूरु में श्री शिव कुमार आर, उप क्षेत्र प्रमुख द्वारा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया गया.

दिनांक 28.05.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, हासन में श्री अरुण कुलकर्णी, क्षेत्र प्रमुख द्वारा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया गया. उप क्षेत्र प्रमुख श्री शैलेन्द्र शर्मा भी उपस्थित रहे.

13.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु दक्षिण द्वारा आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख. साथ में उपस्थित हैं मुख्य अतिथि डॉ घनश्याम शर्मा, प्रबंधक (राजभाषा), भारतीय रिज़र्व बैंक एवं श्री टी गुरुप्रसाद एवं श्रीमती एन सोनी उप क्षेत्र प्रमुख एवं प्रतिभागीगण.

क्षेत्रीय कार्यालय बिलासपुर द्वारा दिनांक 04.05.2024 को एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन. उप क्षेत्र प्रमुख श्री सीताराम भोर्इ, उप क्षेत्र प्रमुख श्री संदीप श्रीवास्तव, मुख्य प्रबंधक सुश्री वीणा प्रसाद, मुख्य प्रबंधक श्री अभिषेक शर्मा की उपस्थिति में किया गया.

दिनांक 20.05.2024 को संयुक्त रूप से दिल्ली अंचल के अंतर्गत दो क्षेत्रीय कार्यालयों नई दिल्ली एवं गुरुग्राम द्वारा एक दिवसीय भौतिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया. श्री राजीव कुमार, सहायक महाप्रबंधक, प्रभारी कॉर्पोरेट एवं ट्रेजरी, यूनियन लर्निंग अकादमी, गुरुग्राम एवं श्री सतीश पाठक, प्रभारी, आंचलिक ज्ञानार्जन केंद्र, गुरुग्राम द्वारा कार्यशाला का उद्घाटन किया गया.

दि 12.06.2024 को अं. का., विशाखपट्टणम एवं क्षे. का., विशाखपट्टणम की संयुक्त हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन वैशाखी' का विमोचन श्रीमती. शालिनी मेनन, अं. प्र., द्वारा किया गया. साथ हैं श्री. शंकर हेम्ब्रम, उप अं. प्र., श्री. शंकर राव देवरा, उप अं. प्र., श्री कृष्णय्या, उप अं. प्र.

दिनांक 12.06.2024 को अं. का. कोलकाता एवं क्षे. का. कोलकाता मेट्रो की संयुक्त पत्रिका 'यूनियन पूर्वोत्तर' के मार्च 2024 अंक का विमोचन श्री निर्मल दुबे, सहायक निदेशक (का.), क्षे. का. का., (पूर्वी क्षेत्र), श्री लोकनाथ साहू, अं. प्र. कोलकाता, श्री सत्यजित मोहंती उप अं. प्र. एवं अन्य कार्यपालकगण द्वारा किया गया.

दिनांक 21.06.2024 को अं. का., मुंबई एवं क्षे. का., मुंबई (दक्षिण) की संयुक्त गृह पत्रिका 'यूनियन क्षितिज' के मार्च 2024 अंक का विमोचन करते हुए श्री अभिजीत बसाक, मुख्य महाप्रबंधक एवं अं. प्र., मुंबई साथ हैं श्री के श्रीधर बाबू, क्षे. प्र., मुंबई दक्षिण तथा श्री ओमप्रकाश करवा, महाप्रबंधक, अं. का., मुंबई तथा अन्य.

दि. 01.06.2024 को श्रीमती शलिनी मेनन, अं. प्र., विशाखपट्टणम तथा श्री एम. वेंकट तिलक, क्षे. प्र., श्रीकाकुलम के कर कमलों से क्षेत्रीय कार्यालय, श्रीकाकुलम की गृह पत्रिका 'यूनियन हर्षवल्ली' का विमोचन किया गया.

दि. 07.06.2024, को क्षे. का., पटना की गृह पत्रिका 'यूनियन पाटलिपुत्र' के मार्च, 2024 का विमोचन करते हुए श्री रणजीत सिंह, क्षे. प्र., पटना श्री खालिद इकबाल तथा श्री चंदन वर्मा, उप क्षे. प्र.

'यूनियन सतलुज' पत्रिका के मार्च 2024 अंक का विमोचन श्री राकेश कुमार मित्तल क्षे. प्र., श्री अमित कुमार उप क्षे. प्र., श्री जसपाल सिंह उप क्षे. प्र. और अन्य द्वारा किया गय.

दिनांक 04.06.2024 को श्री सी वी एन भास्कर राव, अंचल प्रमुख, श्रीमती ए शारदा मूर्ती तथा श्री सीता रामा राव उप अंचल प्रमुख, द्वारा अंचल कार्यालय विजयवाड़ा की छमाही गृह पत्रिका 'यूनियन विजय' का विमोचन किया गया.

दिनांक 13.06.2024 को श्री असीम कुमार पाल, क्षेत्र प्रमुख ने क्षेत्रीय कार्यालय की पत्रिका 'यूनियन कावेरी' का विमोचन किया. साथ में उपस्थित हैं डॉ घनश्याम शर्मा, प्रबंधक राजभाषा भारीय रिज़र्व बैंक, श्री टी गुरुप्रसाद एवं श्रीमती एन सोनी उप क्षेत्र प्रमुख.

दिनांक 14.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम की पत्रिका 'यूनियन अंनतपुरी' का विमोचन करते हुए श्री सुजित एस तारीवाळ. साथ में उपस्थित है कि श्री सनल कुमार एन उप क्षेत्र प्रमुख, श्री आनंद नायक, सहायक महा प्रबंधक, अंचल कार्यालय, श्री दासरि वेंकट रमण, एवं श्री अडलारसन, मुख्य प्रबंधक एवं एमएलपी प्रमुख सुश्री कला सी एस,वरिष्ठ प्रबंधक, (रा. भा.).

दिनांक 08.05.2024 को आयोजित नराकास की छमाही बैठक में क्षेत्रीय कार्यालय नागपुर की मार्च 2024 की गृहपत्रिका 'यूनियन प्रवाह' का विमोचन डॉ. सुस्मिता भट्टाचार्य,उप निदेशक (का.), क्षे. का.का., (पश्चिम), द्वारा किया गया. साथ हैं श्री जयनारायण, अध्यक्ष, नराकास, श्री एम.वी. रवि शंकर, क्षे.प्र. नागपुर तथा अन्य.

दिनांक 21.06.2024 को क्षेत्रीय कार्यालय, नई दिल्ली की गृह-पत्रिका 'यूनियन महक' का विवोचन श्री जयगोपाल बेहेरा, क्षेत्र प्रमुख द्वारा किया गया. इस अवसार पर श्री शशिकांत प्रसाद, उप क्षेत्र प्रमुख भी उपस्थित रहे.

दिनांक 07.06.2024 को अंचल कार्यालय हैदराबाद एवं क्षेत्रीय कार्यालय सिकंदराबाद की संयुक्त गृह पत्रिका "यूनियन कोहिनूर" का विमोचन श्री कारे भास्कवर राव, अंचल प्रमुख एवं मुख्य महाप्रबंधक द्वारा किया गया. साथ हैं अंचल कार्यलय के कार्यपालगण.

आपकी तिमाही हिंदी गृह पत्रिका "यूनियन सृजन" (अंक: जनवरी-मार्च 2024) हमें प्राप्त हुआ. पत्रिका का वर्तमान अंक हमेशा की तरह रोचक एवं सूचनाप्रद है. पत्रिका का आवरण आकर्षक है एवं पत्रिका में संकलित लेख सराहनीय है. हमारी ओर से संपादक मंडल को बहुत-बहुत बधाई!

अजय कुमार
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), राजभाषा विभाग,
कॉर्पोरेट कार्यालय, इंडियन बैंक

'यूनियन सृजन' का मार्च 2024 अंक प्राप्त हुआ. सर्वप्रथम संपादक मंडल को ढेर सारी बधाई. मैं यूनियन बैंक की दोनो प्रमुख पत्रिकाओं क्रमशः 'यूनियन धारा' व 'यूनियन सृजन' का सतत अवलोकन करता रहता हूँ. प्रत्येक अंक की भांति सृजन का यह अंक भी प्रभावशाली व साहित्यिक शैली में संपादित किया गया मालूम पड़ता है. किसी पत्रिका में विभिन्न विषयों का समावेश उसे एक संतुलित पत्रिका बनाता है 'यूनियन सृजन' में भी यही बात देखने को मिली. पत्रिका में वर्णित विषय इसकी जान संचरण की सार्वभौमिकता को इंगित करते हैं. 'मधुबनी' चित्रकला जैसे लेखों को शामिल करके सपादक ने क्षेत्रीय कलाओं के महत्व को उद्घाटित करने का उत्साहित प्रयत्न किया है.

एक ओर 'शेयर बाजार मिथक और तथ्य' जैसे लेख पत्रिका के वित्तीय ज्ञान संचरण के लक्ष्य को साधते हैं तो वहीं 'काव्य सृजन' शीर्षक में वर्णित वस्तुएँ इसकी साहित्यिकता को संतुलित कर देती हैं. पत्रिका अपने भीतर देश के लगभग हर कोने के लखकों को समेटे हुए हैं यह प्रवृत्ति सिद्ध करती है कि संपादक मंडल, शाखाओं और अपने संवाददाताओं के साथ कितनी प्रगादता के साथ जुड़ा हुआ है. बहरहाल 'सृजन' अपने पत्रिका कर्म में भलिभाँति उत्तीर्ण हुई है और एक विश्वसनीय पत्रिका होने के अपने तमगे को दोहराती है. संपादक मंडल को आगामी अंकों हेतु शुभकामनाएं.

शाकिर हुसैन रिज़वी
जूनियर इंजीनियर सह ट्रेक मशीन इंचार्ज, दपूमरे नागपुर मण्डल, भारतीय रेलवे

आपकी पत्रिका 'यूनियन सृजन' प्राप्त हुई. पत्रिका में सम्मिलित आलेख, कविताएं, समाचार आदि स्तरीय एवं ज्ञानवर्धक है. राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में यह एक सराहनीय कदम है. पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए, इससे जुड़े सभी कार्मिकों, रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ.

डॉ. छबिल कुमार मेहेर,
उप निदेशक (कार्यान्वयन)

आपके बैंक द्वारा प्रकाशित गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का महिला उद्यमिता विशेषांक (अक्तूबर-दिसंबर 2023 अंक) प्राप्त हुआ. धन्यवाद.

पत्रिका का आवरण पृष्ठ ही महिला उद्यमिता के विविध पक्षों को उजागर करता है. साथ ही पत्रिका के मुख पृष्ठ की पंक्तियां 'अब नारी की बारी' सटीक और समसामयिक है. 'भारत की प्रेरणाप्रद महिलाएं' स्तंभ में आपने देश की अग्रणी और प्रेरक महिलाओं का समावेश किया है. जो कि सराहनीय पहल है. पत्रिका में महिला उद्यमिता पर आधारित सभी आलेख वैविध्यपूर्ण, जानकारीपरक व उपयोगी हैं. मानवीय मूल्यों को छूती कहानी 'सच्चा सौदा' बेहद रोचक और भावपूर्ण है. भावों से भरी और महिला सरोकारों से संबंधित कविताएं हृदयस्पर्शी हैं. साहित्य संपदा की दृष्टि से भी यह अंक बहुत समृद्ध है, इस हेतु संपादक मंडल के प्रति साधुवाद.

साथ ही, साहित्य सृजन में आपने राजस्थान के सुप्रसिद्ध साहित्यकार विजयदान देथा के रचना संसार को स्थान दिया है जो कि आपकी साहित्यिक सुरुचि संपन्नता को प्रदर्शित करता है. यह विशेष रूप से उल्लेखनीय है कि हमारे देश की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में बैंकिंग विषयों पर आपके कर्मचारियों द्वारा नुक्कड नाटकों का आयोजन किया जा रहा है. यह कार्य ग्राहकों से जुड़ने के लिए किए जा रहे आपके प्रयासों को तो दर्शाता ही है, साथ ही हमारे देश की विशेषता 'अनेकता में एकता' को भी सार्थक करता है. पत्रिका के आलेखों, कहानियों व कविताओं के साथ चित्रों व रंगों का संयोजन बहुत आकर्षक बन पड़ा है. समग्र रूप से पत्रिका का यह अंक बहुत रोचक, जानकारीपरक और प्रेरक है.

हमें आशा है कि भविष्य में भी इस पत्रिका के माध्यम से हमें उत्कृष्ट सामग्री पढ़ने को मिलेगी. शुभकामनाएं.

के. राजेश कुमार,
महाप्रबंधक, मा.सं.प्र. व राजभाषा,
राजभाषा विभाग, बैंक ऑफ महाराष्ट्र

आपकी त्रैमासिक पत्रिका 'यूनियन सृजन' जनवरी-मार्च 2024 अंक को पढ़ने का सुअवसर प्राप्त हुआ. यह निश्चित ही मेरे लिए अत्यधिक हर्ष, गौरव एवं सौभाग्य का विषय रहा. आवरण पृष्ठ सहित संपूर्ण पत्रिका की साजसज्जा आकर्षक और सामग्री रोचक है जो संपादकीय टीम की उत्कृष्ट सृजनात्मकता की स्पष्ट द्योतक है. प्रासंगिक विषयों एवं सामग्री का चयन एवं संकलन भी संपादकगण की प्रबुद्ध विद्वता का परिचायक है. जहां एक ओर 'शेखर एक जीवनी' पुस्तक समीक्षा और 'गुरजाड अप्पाराव' संबंधी लेख अनायास ही पाठक को अपनी ओर आकर्षित करते हैं, वहीं 'वित्तीय समावेशन की सफलता में क्षेत्रीय भाषाओं का योगदान,' 'भारतीय भाषाएं एवं एआई,' 'विश्व भाषा की ओर अग्रसर हिंदी,' एवं 'भाषिणी' जैसे समीचीन विषयों से जुड़े लेख सभी राजभाषा प्रेमियों के लिए अत्यंत सारगर्भित, सूचनाप्रद तथा सर्वथा प्रासंगिक है. 'धन शोधन' एवं 'लोक अदालत' जैसे सामान्य बैंकिंग विषयों से जुड़े सामयिक लेख सार रूप में होते हुए भी अत्यधिक महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान करते हैं. 'आत्मविश्वास,' 'होली,' एवं 'जिंदगी ऐ जिंदगी' कविताएँ भी विशेष रूप से उल्लेखनीय है जो पाठकों के दिलों को सीधा छू जाती हैं. मैं समग्र टीम के प्रयासों की सच्चे हृदय से सराहना करता हूं और आशा करता हूँ कि आप भावी अंकों के पाठक बनने का सुअवसर प्रदान करते रहेंगे. संपादक मंडल के अभिनव प्रयासों एवं अथक परिश्रम की प्रशंसा सहित आगामी अंकों के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित हैं.

संजीव कपूर
उप अंचल प्रबंधक, अंचल कार्यालय, लुधियाना, पंजाब नैशनल बैंक

केंद्रीय कार्यालय के तत्वावधान में
विभिन्न केंद्रों में आयोजित तीन दिवसीय
कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला

दिनांक - 02.05.2024 से 04.05.2024 स्थान - लखनऊ

दिनांक - 18.06.2024 से 20.06.2024 स्थान - मुंबई

दिनांक - 29.04.2024 से 01.05.2024 स्थान - भुवनेश्वर

दिनांक - 29.04.2024 से 01.05.2024 स्थान - गुरुग्राम

दिनांक - 06.05.2024 से 08.05.2024 स्थान - हैदराबाद

दिनांक - 02.05.2024 से 4.05.2024 स्थान - बैंगलूरु

दिनांक - 29.04.2024 से 01.05.2024 स्थान - भोपाल

दिनांक - 06.05.2024 से 08.05.2024 स्थान - मंगलूरु

दिनांक - 06.05.2024 से 08.05.2024 स्थान - विशाखपट्टणम

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

क्रांगसुरी जलप्रपात, मेघालय
अंकित
यू.एल.ए., गुरुग्राम